|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

पुण्य सम्राट

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | नवम्बर-2020
दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. से निम्बाहेड़ा (राज.) में आशीर्वाद लेते हुए अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी ।

श्री भांडवपुर तीर्थ पर सूरिमंत्र आराधना की पूर्णाहुति पर उपस्थित श्रीसंघ को आशीर्वाद प्रदान करते हुए जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

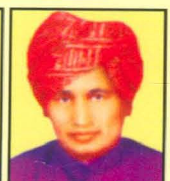

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

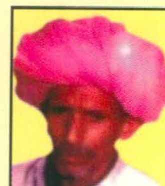

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

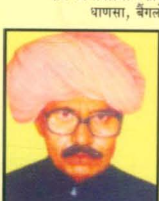

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

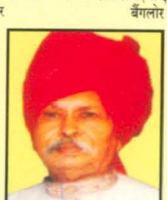

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

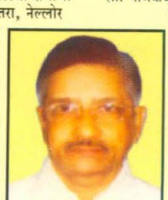

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

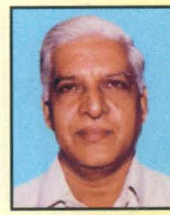
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

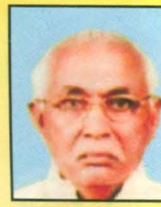

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

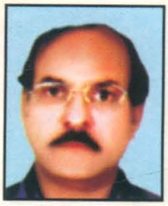

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

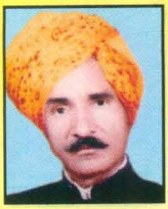
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

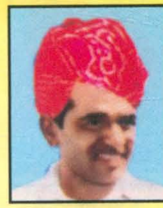
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

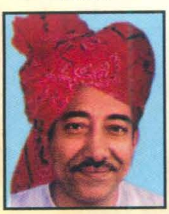
श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

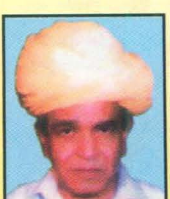
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

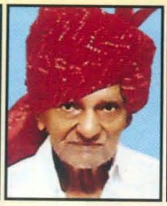
धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

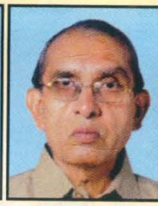
शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

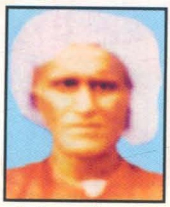
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

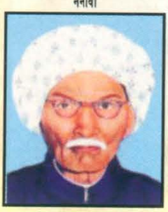
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

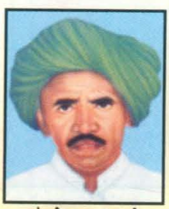
संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

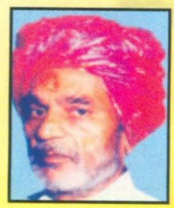
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

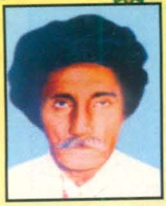
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

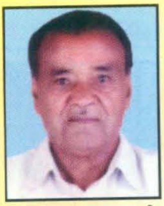
मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

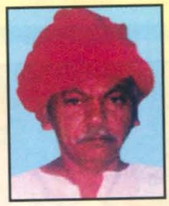
अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

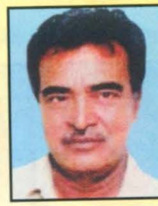
श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

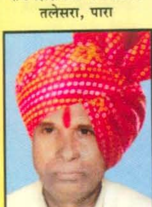
श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

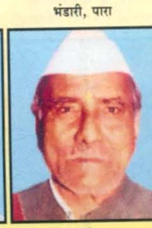
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी
राजगढ़

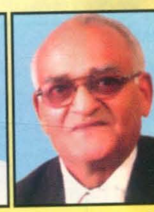
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा (गांधीनगर)
पि. ३८२००७
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

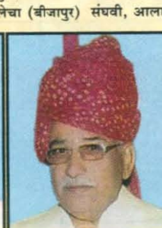
शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
नवम्बर-2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 11
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी (संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू (परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा (महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन (न्यासी)
श्री विनोद संघवी (न्यासी)
आदि

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

क्षमा मांगी तो पाट पर उत्तराधिकार मिला

आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजी द्वारा नमुत्थुणं पर रचित 'ललित विस्तरा' ग्रंथ उपाश्रय के पाट पर रखा हुआ था। आचार्य गर्गर्षि उसे छोड़कर बाहर चले गये। शिष्य सिद्धर्षि वहीं बैठा था। उसने ग्रंथ उठाया तथा पढ़ना शुरू कर दिया। सिद्धर्षि महाबोध नामक बौद्धनगर से आया था। वह गुरु गर्गर्षि का ही शिष्य था लेकिन गुरु की आज्ञा लेकर बौद्ध धर्म का अध्ययन करने चला गया था।

गुरु जानते थे कि बौद्ध आचार्य इसे भ्रमित कर देंगे लेकिन सिद्धर्षि की तीव्र रुचि ने आज्ञा दिला दी। वहाँ बौद्धों के चक्कर में आ गया, रजोहरण लौटाने के लिये गुरु के पास आया। गुरु ने अकाट्य तर्कों से उसका भ्रम दूर किया।

लेकिन वह पुनः बौद्धाचार्य के पास चर्चा के लिये गया। उनने उसे फिर प्रभावित कर लिया। इस तरह उसके चक्कर में इधर से उधर होने लगे। सिद्धर्षि से जो तार्किक बहस करता वह वहीं का हो जाता।

जैन गुरु गर्गर्षि 'ललित विस्तरा' ग्रंथ रखकर बाहर चले गये। सिद्धर्षि के 'ललित विस्तरा' ग्रंथ पढ़ने से भ्रम के काले बादल दूर होने लगे, ज्ञान का सूर्य उदित हो गया। वीतराग - परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का दर्शन हो गया।

गुरु के लौटने पर सिद्धर्षि उनके चरणों में गिर पड़ा। उसने क्षमा मांगी तथा प्रायश्चित की प्रार्थना की। गुरु ने शिष्य को क्षमा कर दिया तथा बाद में अपने पाट पर आसीन कर गौरवान्वित किया। सिद्धर्षि ने उपदेश माला ग्रंथ पर हेयोपादेया टीका की रचना की तथा उपमित्ति भवप्रपंच ग्रंथ का सर्जन किया।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

353329

1. गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीजी वचनामृत	09
2. सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	10
3. गणधरवाद (स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	12
4. समय और सामायिक (डॉ. दिलीप धींग)	15
5. अशुभ वचनयोग (35) प्रवचन (स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	18
6. चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	20
7. उत्तम आहार – शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	22
8. अध्यक्षीय पाती (श्री वाघजीभाई वोरा)	23
9. अध्यक्षीय संदेश (श्री रमेशभाई धरू)	24
10. डिसेक्शन हेतु जीवों की हिंसा अतिचार ही नहीं अनाचार है (श्री शान्तिलाल सगरावत)	25
11. तीर्थंकर तारेश (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	27
12. किस्मत की बात (स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	28
13. प्रश्नोत्तरी	30
14. जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	31
15. श्री जयंतसेन जयनाद (प्रस्तोता– मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	32
16. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' के हस्ताक्षर	35
17. भ. महावीर के निर्वाण कल्याण की प्रेरणाएँ (कविरत्न डॉ. दिलीप धींग)	36
18. जिनशासन की वर्णमाला (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	38
19. हमारी पसंदगी की सज्झाय (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	40
20. श्रावक का मुख्य कर्त्तव्य 'आणाए धम्मो' (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	41
21. निर्मल दृष्टि–अतिथि रचना (आचार्यश्री विद्यासागरजी)	42
22. ज्ञान और आनन्द के महत्व को रेखांकित करती है दीपावली (प्रो. डॉ. वीरसागर जैन)	44
23. भगवान ऋषभ और अयोध्या (श्री जी.डी. तपास)	45
24. अखण्ड अग्नि–अखण्ड दीपक	47
25. जैन धर्म व श्रावक जीवन...	50
26. स्तवन (श्री शेरसिंह पारख)	53
27. गुजराती संभाग	54–65
27. कुमकुम सने पगलिये	66–67
28. श्रीसंघ सौरभ	68–72
29. परिषद प्रांगण से	73–76
30. जैन विश्व	77–78
30. शाश्वत धर्म के संरक्षक	79–80

गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी

वचनामृत

* तुम्बे का पात्र मुनिराज के हाथ में जाकर सुपात्र बन जाता है, संगीतज्ञों के द्वारा विशुद्ध बांस में वह जोड़ा जाकर मधुर स्वर का साधन बन जाता है। दोराओं से बंधकर समुद्र या नदी को पार कराने का कारण बन जाता है और मदिरा-मांसार्थी लोगों के हाथ जाकर रुधिर या माँस रखने का भाजन बन जाता है। इसी प्रकार मनुष्य सज्जन और दुर्जन की संगति में पड़कर गुण या अवगुण का पात्र बन जाता है। अतः मनुष्य को सदा अच्छी संगति में ही रहना चाहिए।

* विष मिश्रित भोजन को देखकर चकोर पक्षी अपने नेत्रों को मींच लेता है। हंस कोलाहल करने लगता है। सारिका वमन करने लगती है, तोता आक्रोश में आ जाता है। बंदर विष्टा करने लगता है, कोकिल पक्षी मर जाता है, कौंच पक्षी नाचने लगता है, नकुल तथा कौआ प्रसन्न होने लगता है, अतः जीवन को सुखी रखने के लिए सावधानी से संशोधन कर भोजन करना चाहिए।

* चार्वाक-नास्तिक मती प्रत्यक्ष प्रमाण को, बौद्धमती प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द इन तीन प्रमाणों को, अक्षपाद नैयायिकमती प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान इन चार प्रमाणों को, प्रभाकरमती तथा भट्टानुयायी प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान, अर्थापत्ति इन पाँच प्रमाणों को और जैनधर्मावलंबी प्रत्यक्ष और परोक्ष इन दो प्रमाणों को मानते हैं। जैनों के सिवाय शेष मत एकान्त वस्तुस्थिति के समर्थक हैं। जैनी अनेकांत दृष्टि से वस्तुस्थिति के समर्थक हैं, जो सर्व प्रकार से यथार्थ है।

* गृहस्थों के साथ परस्पर अकारण बातों में समय बिताना, हँसी-मजा करना, आक्रोश वचन बोलना, कटु प्रपंच रचना, वस्तु लेकर नहीं दी कहना, बात-बात में हँसना और भोजन करते, पेशाब करते तथा क्रियानुष्ठान करते बोलना, ये सभी बातें असत्यवादिता के ही अँग हैं। इन बातों के आचरण से द्वितीय महाव्रत का भंग होता है।

सम्पादकीय

मिच्छा मि दुक्कड़म्

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

'मिच्छामि दुक्कड़म् याने 'दुष्कृत्य मिथ्या हो' या 'मैं दुष्कृत्य मिथ्या घोषित करता हूँ।' यह जैन संस्कृति का पवित्र सूत्र है जो आत्मा को संवर तथा निर्जरा की ओर अग्रसर करता है। प्रतिक्रमण में इस पंक्ति का उपयोग पापों की आलोचना करते समय उनके विसर्जन के लिये किया जाता है। संवत्सरी के दिन या पाक्षिक क्रम में आपसी व्यवहार में इस सूक्ति को प्रयुक्त कर औसत जैन क्षमापना की उद्घोषणा करता है। विशेषतः श्वेताम्बर जैन समाज में इसका प्रचलन बाहुल्यता से है। दिगम्बर जैन समाज के अनुयायी इस के विकल्प के रूप में 'उत्तम क्षमापना' शब्द का उपयोग करते हैं हालांकि 'मिच्छामि दुक्कड़म' सूक्ति से उनकी असहमति या परहेज नहीं है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने इसी वर्ष संवत्सरी पर्व के पश्चात् एक अहम राष्ट्रीय सम्मेलन में 'मिच्छामि दुक्कड़म' सूक्ति का उपयोग समस्त अंतर्राष्ट्रीय शासनाध्यक्षों के नाम सांवत्सरिक क्षमा याचना के लिये किया। नई दिल्ली में आयोजित इस सम्मेलन में दो सौ राष्ट्रों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इससे पूर्व महिनों के अंतराल में लोकसभा में प्रधानमंत्री ने एक भाषण के अंत में इस सूक्ति 'मिच्छामि दुक्कड़म' का प्रयोग किया था। तब सदन में उपस्थित लगभग सदस्यों ने इस पर अटपटापन महसूस किया तथा अर्थ पूछा। प्रधानमंत्री ने कहा कि जैन समाज द्वारा आध्यात्मिक अर्थों में इसका प्रयोग किया जाता है।

महात्मा गांधी का परिवार विशुद्ध वैष्णव था लेकिन उनकी माता पुतलीबाई करमचंद गांधी जैन परिवार से आई थीं तथा माता के संस्कार भी जैन थे। महात्मा गांधी जब अध्ययनार्थ विदेश जाने लगे तब उनकी माता उन्हें एक जैन संत श्री प्रभुदासजी म. के पास ले गईं थीं तथा प्रतीज्ञाएँ दिलवाई थीं इस दृश्य को चित्रित करने वाला चित्र आईल पेंट से बना हुआ आज भी नई दिल्ली स्थित बिड़ला हाऊस में दीवाल पर दर्शनीय है। इसी मैदान में गांधीजी की हत्या हुई थी। महात्मा गांधी अपना आध्यात्मिक गुरु श्रीमद् राजचंद्रजी को मानते थे जो जैन संत थे। वे कहा करते थे कि रूस के टॉलस्टॉय तथा यूरोप के रस्किन से भी आध्यात्मिक ज्ञान में श्रीमद् राजचंद्र आगे हैं। दक्षिण अफ्रिका में गाँधीजी ईसाई मिशनरियों के प्रभाव में आ गये थे। वे ईसाई बन जाते लेकिन उनने अपनी शंकाओं की प्रश्नावली तब श्रीमद् राजचंद्र को भेजी थी, श्रीमान् राजचन्द्र ने जो सटीक उत्तर उन्हें दिये, उनने उन्हें ईसाईवाद से दूर कर दिया।

संत विनोबा भावे कहा करते थे कि– 'मैं जीवन श्रीकृष्ण प्रदत्त जीना चाहता हूँ

तथा मृत्यु श्री महावीरस्वामीप्रदत्त चाहता हूँ।'यही कारण है कि विनोबा भावे ने जीवन के अंतिम दिनों में संथारा (सम्पूर्ण अनशन) ग्रहण किया, स्वयं श्रीमती इंदिरा गाँधी उनसे अनशन तोड़ने का निवेदन करने वर्धा गईं लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया। संथारे में ही श्री विनोबा भावे की मृत्यु श्री महावीर निर्वाण दिवस (दीपावली के दिन) हुई। ये 'मिच्छामि दुक्कड़म' का प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

भारत के इतिहास में मौर्यवंश जैन धर्म का अनुरागी था। महाराजा चंद्रगुप्त मौर्य तो राज्य त्याग कर आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामी के साथ दक्षिण भारत चले गये थे। उनने दीक्षा ली चेटक, श्रेणिक (बिन्दुसार), कूणिक, खारवेल, विक्रमादित्य जैसे प्रखर राजाओं ने जीवन का उद्धार जैन धर्म के माध्यम से किया। गुर्जर प्रतिहार जैन धर्म के प्रबल समर्थक थे। तीर्थंकर श्री महावीर देव को छब्बीस सौ वर्ष व्यतीत होने को हैं। इस समय-खण्ड में सैंकड़ों राजाओं का आश्रय जैन धर्म को प्राप्त हुआ, इससे विपरीत दर्जनों राजाओं ने जैन धर्म के प्रति दमन की भूमिका भी निर्वाहित की तथा कत्लेआम तक जैन अनुयायियों का किया लेकिन जैन संघ, परम्पराएँ, साधना क्रियाएं बने रहे। 'मिच्छामि दुक्कड़म' का उच्चारण, प्रयोग तथा अस्तित्व बना रहा। वर्तमान में जैन धर्म श्रमण संस्कृति का प्रतीक बनकर विश्व के कई कौनों में प्रभावित हो रहा है। अमेरिका के व्हाईट हाउस की तरंगों में जैन लहरें जगमगा रही हैं। पिछले अमेरिका के दो-तीन राष्ट्रपति जैन धर्म का पृथक उल्लेख प्रसंगवश करते रहे हैं। ऐसी स्थिति में जैन पहचान के कुछ चिन्हों को व्यापक स्वीकृति तथा प्रचार प्राप्त होना आवश्यक हो गया है। ईस्वी सन् 1975 में तीर्थंकर श्री महावीर देव के 2500 वें निर्वाण वर्ष में इस दिशा में जैन समाज के मुख्य समुदायों के प्रमुख आचार्यों को एकत्र कर उभयनिष्ठ जैन चिन्ह निश्चित व प्रचारित करने का कार्य सक्रियता से हुआ फलतः जैन प्रतीक का निशान, पंचरंगा ध्वज सर्वमान्य तथा सर्वव्याप्त हो गये हैं। उस समय एकता की उत्पन्न जागृति के परिणाम में 'जय जिनेन्द्र'का प्रचलन भी आज खूब हो गया है। यह निनाद सिखों के 'सत्श्रीअकाल'की भांति ही प्रचारित होने में सफल हुआ है। जैन प्रतीक पंचरगी जैन ध्वज, जय जिनेन्द्र, नवकार मंत्र ये सम्पूर्ण जैन समाज की प्रबल एकता के द्योतक हो गये हैं। इसी प्रकार वर्तमान स्थिति का लाभात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए 'मिच्छामि दुक्कड़म' को आदर्श वाक्य मान्य कर लिया जाना चाहिए। हालांकि जैन प्रतीक में 'परस्परोग्रहो जीवानाम्' वाक्य अंकित है लेकिन वह अपने स्थान पर पृथक स्थिति में है, 'मिच्छामि दुक्कड़म' अधिक आसानी से सम्पूर्ण जैन समाज के आदर्श वाक्य का स्थान ले सकता है। यह वाक्य सत्यमेव जयते, अहिंसा परमो धर्मः, सच्चं भयवं की भांति जैन संस्कृति में द्योतक बन सकता है।

आशा है इसके लिये सम्पूर्ण जैन समाज में पुनः पहल कर एकता के एक और चिन्ह के निर्माण के लिये सकारात्मक तथा सार्थक प्रयास किया जायेगा। ◆◆◆

प्रवचनकार

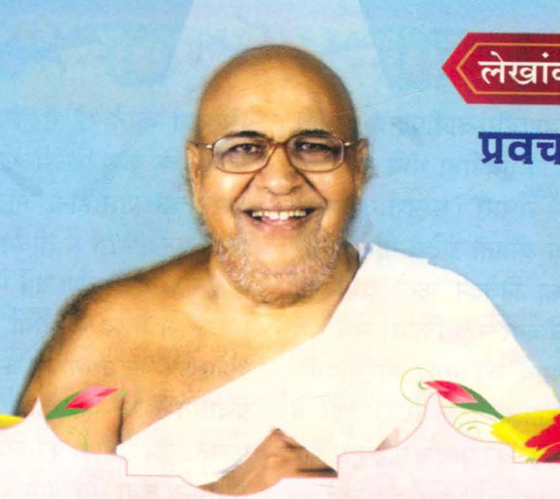

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

जीव का बंध

मंडिक - आर्य ! चाहे कर्म सन्तान अनादि हो, किन्तु यहाँ तो जीव के बंध-मोक्ष की चर्चा है। उस चर्चा के साथ कर्म सन्तान की अनादिता का क्या सम्बन्ध है?

महावीर - संबंध तो है ही। क्योंकि जो कर्म करता है, वही तो बंधता है। इसलिए यदि कर्म सन्तान अनादि हो, तो बंध भी अनादि सिद्ध हो जाता है।

मंडिक - कर्म सन्तान के अनादि सिद्ध होने से बंध का संभव आप कहते हैं, किन्तु आपने तो शरीर और कर्म में परस्पर कार्यकारण भाव सिद्ध किया है। तो इसमें जीव को क्या लेना देना है? इससे यह कैसे कहा जा सकता है कि जीव कर्म का संयोग अनादि है।

महावीर - शरीर और कर्म में कार्य कारण भाव है जरूर, लेकिन कोई कर्ता न हो, तो शरीर या कर्म दोनों में से एक भी उत्पन्न नहीं होगा। इसलिए मानना चाहिए कि जीव कर्म द्वारा शरीर को उत्पन्न करता है। जिससे वह शरीर का कर्ता है, ठीक वैसे ही जैसे दंड द्वारा घट को उत्पन्न करने वाला

कुम्हार घट का कर्ता कहलाता है। इसलिए यदि शरीर और कर्म की सन्तान अनादि हो, तो जीव को भी अनादि और उसका बंध भी अनादि मानना चाहिए।

कर्म की सिद्धि

मंडिक - लेकिन कर्म तो अतीन्द्रिय होने से असिद्ध है, तो फिर आप उसे कारण कैसे कह सकते हैं ?

महावीर - आयुष्मन् । कर्म भले ही अतीन्द्रिय हो, किन्तु असिद्ध तो नहीं है, क्योंकि उसकी सिद्धि कार्य द्वारा होती ही है। वह इस प्रकार - शरीर आदि की उत्पत्ति में कोई कारण होना चाहिए, क्योंकि घटादि की तरह वह कार्य है। घटादि कार्य होने से वे जैसे दंडादि करण के बिना उत्पन्न नहीं होते, वैसे ही शरीर कार्य होने से करण के बिना उत्पन्न नहीं होता। शरीर कार्य में जो करण है वही कर्म है।

अथवा जीव और शरीर इन दोनों का किसी करण से संबंध होना ही चाहिए, क्योंकि इन दोनों में एक कर्ता है और दूसरा कार्य। जैसे कुम्हार और घट ये दोनों कर्ता और कार्य है, तो दंड उनका करण है, वैसे ही आत्मा और शरीर कर्ता और कार्य रूप होने से कर्मरूप करण मानना चाहिए।

इसके सिवाय चेतन की कृषि आदि क्रिया जैसे सफल हैं, वैसे ही दानादि क्रिया भी सफल होनी चाहिए और उसका जो फल है, वह कर्म है।

तुमने जो यह कहा है कि जो अनादि हो उसे अनन्त भी होना चाहिए वह युक्तियुक्त नहीं है। याने 'सन्तान अनादि है, अतः उसे अनन्त भी होना चाहिए' ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि बीज-अंकुर की संतान अनादि होने पर भी उसका अंत हो जाता है। वैसे ही कर्म संतान के अनादि होने पर भी उसका नाश हो सकता है।

मंडिक - वह कैसे ?

महावीर - बीज और अंकुर में किसी एक का अपने कार्य को उत्पन्न करने से पहले यदि नाश हो जाये, तो बीज-अंकुर की

सन्तान का भी अन्त हो जाता है। जैसे मुर्गी और अंडे की संतान अनादिकालीन है, किन्तु जब इन दोनों में से कोई एक अपने कार्य को उत्पन्न करने के पूर्व ही यदि नष्ट हो जाये, तो इनकी सन्तान का भी अन्त हो जाता है।

इसके अलावा स्वर्ण और मिट्टी का संयोग अनादि सन्तति गत होने पर भी अग्नितापादि से उस संयोग का नाश हो जाता है, उसी प्रकार जीव एवं कर्म का संयोग भी अनादि सन्तति गत होने पर भी सम्यग्श्रद्धा आदि रत्नत्रय द्वारा उसका नाश किया जा सकता है।

जीव-कर्म का संयोग अनादि - सान्त और अनादि-अनन्त

मंडिक - तो क्या जीव और कर्म का संयोग जीव और आकाश के संयोग की तरह अनन्त है अथवा स्वर्ण और मिट्टी जैसा अनादि-सान्त ?

महावीर- जीव में दोनों प्रकार का संबंध घटित हो सकता है। इसमें किसी प्रकार का विरोध नहीं है।

मंडिक - ऐसा कैसे संभव है ? क्योंकि ये दोनों संबंध तो परस्पर विरुद्ध हैं, इसलिए यदि जीव में अनादि - अनन्त संबंध हों, तो अनादि-अनन्त नहीं हो सकता। परस्पर विरुद्ध होने के कारण दोनों संबंध एक साथ तो संभव नहीं हैं।

महावीर - जीव सामान्य की अपेक्षा से मैंने कहा है कि उक्त दोनों प्रकार के संबंध उसमें हैं। जीव विशेष का विचार किया जाये, तो अभव्य जीवों में वह संबंध अनादि-अनन्त है। इसका कारण यह है कि अभव्य जीवों को मोक्ष नहीं है अर्थात् अभव्य जीव कभी मुक्त होते नहीं हैं, इसलिए उनके कर्म संयोग का भी कभी नाश नहीं होता। भव्य जीवों में वह संयोग अनादि सान्त है, क्योंकि वे कर्म संयोग का नाश करके मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं।

(क्रमशः)

◆◆◆

समय और सामायिक

(डॉ. दिलीप धींग)

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

जैन धर्म की प्रमुख साधना है- सामायिक। जिसके द्वारा समता और समभाव की आय/प्राप्ति हो, वह सामायिक है। सामायिक साधना के द्वारा सभी स्तरों और श्रेणियों के समताभावों में बढ़ोत्तरी होनी चाहिये। संक्षेप में कहें तो समत्व और सम्यक्त्व की साधना का नाम सामायिक है। समत्व से सम्यक्त्व निर्मल और अनुत्तर बनता है और सम्यक्त्व से समत्व सुदृढ़।

समत्व दशा बढ़ने से साधक समय से शासित होने की बजाय समय का स्वामी बनता जाता है। समत्व दशा में गहरे उतरना यानी विभाव से स्वभाव की दिशा में आगे बढ़ना। यह एक ऐसी साधना-प्रक्रिया है, जिसमें समय का सर्वोत्तम उपयोग होता है। समता की साधना में समय लगाकर समय (आत्मा) को पाना सामायिक है। परसमय (विभाव) से स्वसमय (स्वभाव) में लौटना सामायिक है। इस प्रकार सामायिक का समय के साथ गहरा सम्बन्ध है।

सामायिक का मूल शब्द 'सम' है। 'सामायिक' शब्द 'समाय' के साथ 'इक' प्रत्यय लगाकर बना हुआ है। 'समाय' शब्द सम+आय से बना है। 'समय' के साथ 'इक' 'प्रत्यय' लगाने से जो शब्द बनता है, वह सामायिक होता है, जिसका अर्थ होता है- प्रासंगिक। 'सामायिक' जैन साधना का विशिष्ट शब्द है। साधना की दृष्टि से 'सामायिक' समाय और समय, दोनों से जुड़ी साधना है। 'सामायिक सूत्र' में कहा गया है- **समये कर्त्तव्यम् सामायिकम्**' अर्थात् समता, अहिंसा आदि की जो उत्कृष्ट साधना समय पर की जाती है, वह सामायिक है।

'समय' शब्द काल के अर्थ में तो प्रयुक्त होता ही है, आत्मा के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। सामायिक समयातीत (कालातीत) होने की साधना है। जब हम समयातीत होते हैं तो आत्मा के परम समीप होते हैं। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि जब हम आत्मा के नजदीक या आत्मस्थ होते हैं तो समयरहितता (टाइमलेसनेस) की स्थिति में होते हैं। आत्मस्थ होना यानी समय को जीत लेना। समय को जीत लेना यानी समय को पा लेना। इस अर्थ में

आत्मा को समय और समय को आत्मा कहा जाता है। आत्मा की कर्ममुक्त सिद्धावस्था को भी काल से परे माना जाता है। इसे तिलोकऋषि ने **'सकल करम टाल, वश कर लियो काल'** के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

सिद्धान्त के अर्थ में भी समय का सामायिक से सम्बन्ध है। जो आत्म-शुद्धि और आत्म-सिद्धि के सिद्धान्त हैं, उन्हें स्वमत या स्वधर्म कह सकते हैं और आत्म-विस्मरण के सिद्धान्तों को परमत या परधर्म कह सकते हैं। समत्व की उपलब्धि और समयजयी होना समयसाध्य और श्रमसाध्य है। हर साधक की पात्रता और क्षमता अलग-अलग होती है। सबका क्षयोपशम अलग-अलग होता है। सबके कर्मों का चिट्ठा और पराक्रम भिन्न-भिन्न होता है। ऐसी अनेक विभिन्नताओं में ऐसे पथ और प्रक्रियाएँ जरूरी हैं, जिनका अनुसरण करके अधिक से अधिक जीव अपनी-अपनी पात्रता के अनुसार अपना परम लक्ष्य पा सकें। ऐसी क्रियाएँ, प्रक्रियाएँ, विधियाँ और उपाय सिद्धान्त कहलाते हैं। ऐसे सिद्धान्तों को भी समय कहते हैं। जो आत्महितकरी सिद्धान्त हैं, वे स्वसमय हैं। इस प्रकार समय का अनुपालन करते हुए समय की साधना करना सामायिक है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने 'समयसार' ग्रंथ की रचना की। जिसमें समय (आत्मा) का सार है, वह है- समयसार। उन्होंने समय की शिला पर समयसार ग्रंथ का भव्य प्रसाद खड़ा किया। इस प्रासाद में अध्यात्म की सुहावनी हवाएँ अनेकान्त की खिड़कियों के आर-पार बहती रहती हैं। जिस समय को इतना सारपूर्ण और महत्वपूर्ण बताया गया है, उसके अनेक अर्थ और भावार्थ होते हैं।

समय के अर्थ :- शास्त्रों और शब्दकोषों में समय शब्द के अनेक अर्थ और परिभाषाएँ प्राप्त होती हैं। काल के अलावा समय के अर्थ हैं- अवधि, वक्त, अवसर, ऋतु , युग, जमाना आदि। आगम ग्रंथों में इन अर्थों में समय और काल शब्द के प्रयोग हुए हैं। वहाँ स्थान-स्थान पर **'तेण कालेणं तेणं समएणं'** शब्द प्रयुक्त हैं। इसका अर्थ होता है, उस काल और उस समय में। साधारणतः समय और काल पर्यायवाची हैं, लेकिन दोनों के अर्थ में अन्तर भी है। काल शब्द उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी रूप कालचक्र का बोधक है और समय शब्द उस कालचक्र में हुए व्यक्ति के समय का बोधक है। आगम ग्रंथों में

समय के विशेष अर्थ भी दिये गये हैं,

जिनके अन्तर्गत आत्मा, मत, सिद्धान्त, दर्शन, शास्त्र, आगम, पदार्थ, चीज, वस्तु, संकेत इशारा, आचार, रिवाज आदि आते हैं। समय का एक अर्थ कालद्रव्य की अविभाज्य सूक्ष्मतम इकाई भी है। समय का माप करते हुए कहा गया है कि परमाणु लोकाकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जितने काल में पहुँचता है, उसे 'समय' कहा जाता है।

यह समय अत्यन्त सूक्ष्म है। उदाहरण के तौर पर बताया जाता है कि चक्षु के उन्मेष (पलक झपकने) में जितना समय लगता है, उसमें असंख्य समय व्यतीत हो जाते हैं। व्यवहार नय की दृष्टि से प्रत्येक कालाणु में अनन्त समय होते हैं। स्थानांग सूत्र में प्रदेश और परमाणु की तरह समय (काल के सबसे छोटे भाग) को अच्छेद्य, अभेद्य, अदाह्य, अग्राह्य, अनर्ध (अर्ध भाग से रहित), अमध्य और अप्रदेशी बताया गया है। ग्रंथों में व्यवहार समय और निश्चय समय के रूप में समय के भेद भी किये गये हैं। आधुनिक विज्ञान और विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में भी समय (टाइम) को अनेक दृष्टियों से परिभाषित और विवेचित किया गया है।

सूत्रकृतांग में समय के अर्थ :-

'सूत्रकृतांग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कंध के प्रथम अध्ययन का नाम समय है। इस अध्ययन में स्व-पर सिद्धान्त, स्व-पर दर्शन, स्व-पर मत और स्व-पर आचार आदि का प्ररूपण किया गया है।

इसमें समय शब्द के उपर्युक्त अर्थों के अलावा कुछ अन्य अर्थ भी दिये गये हैं, यथा - शपथ, सौगंध, अंगीकार, स्वीकार निर्देश, भाषा, सम्पत्ति, आज्ञा, शर्त, नियम, कालविज्ञान, समयज्ञान, शास्त्र, प्रस्ताव, सामायिक, सुन्दर परिणाम, परिणमन, पदार्थ आदि।

इस ग्रंथ में समय शब्द सिद्धान्त, आगम, शास्त्र, मत, दर्शन, आचार, नियम आदि अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। सूत्रकृतांग निर्युक्ति में समय शब्द के बारह आयाम बताये गये हैं- (1) नामसमय (2) स्थापना-समय (3) द्रव्यसमय (4) कालसमय (5) क्षेत्रसमय (6) कुतीर्थ-समय (7) संकेत-समय (8) कुलसमय/कुलाचार (9) गणसमय/संघाचार (10) संकर-समय/सम्मिलित एकमत (11) गंडीसमय (विभिन्न सम्प्रदायों की प्रथा), और (12) भावसमय विभिन्न अनुकूल प्रतिकूल सिद्धान्त। इनमें कुछ उपादेय तो कुछ ज्ञेय हैं।

(क्रमशः)

◆◆◆

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (35)

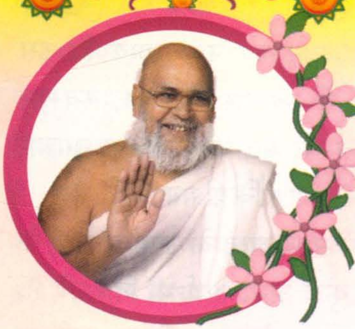

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उस नये राजमहल की विशेषता यह थी कि उसमें जल की जगह स्थल दिखाई देता था और स्थल की जगह जल। इसी प्रकार दीवार की जगह फाटक दिखाई देता था और फाटक की जगह दीवार।

ऐसी विशेषताओं से युक्त कोई भवन दुर्योधन ने कभी कहीं देखा तक नहीं था। पाण्डव ऐसा विशिष्ट भवन दिखाकर दुर्योधन को चकित करना चाहते थे।

आमन्त्रण स्वीकार करके दुर्योधन अपने कुछ भाइयों के साथ वहाँ पहुँचा। वहाँ फाटक को दीवार समझकर खड़ा रह गया और दूसरी जगह दीवार को फाटक समझकर आगे बढ़ा तो उससे टकराकर गिर पड़ा। किसी तरह उठकर आगे चलने पर जल को स्थल समझ लेने के कारण उसकी पोशाक गीली हो गई। फिर कुछ आगे बढ़ने पर स्थल को जल समझकर अधोवस्त्र ऊँचा ले लिया ! यह ऊपर की मंजिल के गवाक्ष में बैठी द्रोपदी देख रही थी। वह दुर्योधन की दशा देखकर जोर से हँस पड़ी। इतना ही नहीं, बल्कि व्यंग्य से बोल उठी- 'अन्धे के पुत्र भी आखिर अन्धे ही होते हैं।'

दुर्योधन के हृदय में द्रौपदी का यह मार्मिक वचन चुभ गया, परन्तु उस समय उचित अवसर न होने से वो मन-ही-मन अपना गुस्सा पी गया।

वहाँ से अपने राज्य को लौटकर द्रौपदी के द्वारा किए गए अपमान का

बदला लेने के लिए उसने शकुनि मामा की सलाह के अनुसार कपटद्यूत की योजना बनाई। उन्हें मालूम था कि द्यूत खेलना युधिष्ठिर का शौक है और ईमानदारी से खेलना उसकी कमजोरी। इसी का लाभ उठाया गया है।

दुर्योधन ने द्यूत-क्रीड़ा के लिए पाण्डवों को आमन्त्रित किया। युधिष्ठिर के साथ चारों पाण्डव वहाँ गए। शकुनि मामा ने कपट - द्यूत से पाण्डवों को पराजित करने के बाद भी सभा में दुःशासन से चीर हरण करवाया और इस तरह द्रौपदी के द्वारा किए गए अपने अपमान का बदला दुर्योधन ने ले लिया। अनर्थ यहीं- तक सीमित नहीं रहा, अपितु पाण्डवों का वनवास, अज्ञातवास और महाभारत युद्ध में अट्ठारह अक्षौहिणी सेना का सर्वनाश हुआ।

रोगों की जड़ खाँसी, लड़ाई की जड़ हाँसी ।।

हिन्दी की कहावत हमें बताती है कि जिस प्रकार खाँसी से सारे रोग उत्पन्न होते हैं, वैसे ही हँसी उड़ाने से सब तरह की लड़ाइयाँ उत्पन्न होती हैं, इसलिए पूरी सावधानी रखनी चाहिए कि भूल से भी किसी के लिए कोई व्यंग्यवचन मुँह से न निकलें। (क्रमशः) ◆◆◆

एक सामायिक से भगवान कैसे बन सकते हैं ?

एक सामायिक 48 मिनिट की होती है। 48 का उलटा करो तो 84. अर्थात् 4 गति. 8400000 लाख योनियों में जीवो की रक्षा करते हुए उनकी गुड ब्लेसिंग प्राप्त कर सकता है। 48 का आधा करे तो 24 मिलेगा अर्थात् 24 तीर्थंकर भगवान को स्तुति कर हम उनके ओरा (आभामंडल) तक पहुंच सकते हैं।

24 का आधा 12. अर्थात श्रावक के 12 व्रतों को धारण कर हम अपने चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

12 का आधा 6. अर्थात् 6 काया की रक्षा करना।

6 का आधा 3. अर्थात् मन, वचन, काया के दोषों को दूर करना मनके 10, वचन के 10 और काया के 12 दोष टोटल 32 दोषों को दूर कर 32 आगम का स्वाध्याय करना, जो हमें अरिहंत भगवान के समीप ले जा सकती है और हमें मोक्ष दिला सकती है। अर्थात् एक सामायिक हमको मोक्ष दिला सकती है।

चिन्तन का चित्रांकण

सभी खेल मन पर आधारित

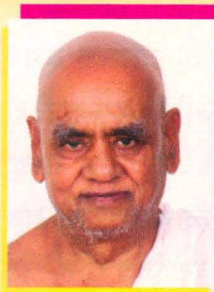

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 27.3.2016

मन चंचल है, मन भटकता है। दुनिया की बातें सुन-सुनकर मन कहाँ से कहाँ चला जाता है। इस मन के कारण से ही टेंशन बढ़ा है, बढ़ता है। आँखें देखती हैं, कान सुनते हैं, इसीसे मन भटक जाता है। मन को स्थिर करके आत्म चिन्तन में चित्त को लगाकर अन्य विचारों को त्याग दो। आत्म शान्ति की प्राप्ति होगी।

दिनांक 28.3.2016

मन मर्कट जैसा है, सबसे तेज दौड़ मन की है। एक आँख पलकाये ये मन हजारों, लाखों कोस की यात्रा कर लेता है। मन से जीव ऊर्ध्वगति एवं अधोगति का प्रवासी है।

मन के दो भेद हैं शुभ और अशुभ। जब शुभ की ओर मन का चलन आरम्भ होता है तब सम्यग् दृष्टि खुल जाती है और आत्मश्रेय का पथगामी बन जाता है। अशुभ मन का चलन मिथ्यादृष्टि कषायों में लिप्त रहकर चलता है तब अधोगति का प्रवासी बन जाता है. यह सभी खेल मन के आधार पर प्रचलित है।

दिनांक 29.3.2016

मन से जो भी कार्य होता है, वह अच्छा होता है। बिना मन से कार्य करने पर जीवन में उसकी फलश्रुति अच्छी नहीं होती। मन को शुद्ध रखकर कार्य करना चाहिये, जिससे हर कदम पर प्रगति ही प्रगति हो। मन के बिना किया गया कार्य कभी भी सुधरता नहीं है अर्थात् बिगड़ता है।

दिनांक 30.3.2016

मन ने चेतन के उपर राज्य करने का नाटक किया। अज्ञदशा में रहा चेतन भी शिथिलता अनुभव करने लगा और श्रेय पथ से विचलित होकर माया जाल में फँसने लगा तब चारों तरफ से चेतन

टेंशन में आने लगा। टेंशन मुक्त चेतन विपदाओं में घिर गया। मन के घेराव में न आकर चेतन स्वयं की चेतना को प्रगटाए।

दिनांक 1.4.2016

व्यर्थ की उपाधि पैदा करने वाला फिरा दिमाग का होता है। बिना कारण प्रपंच पैदा करना और मजा देखना उसी विचारधारा में घूमता रहता है। छल-कपट-माया कैसे करना उसी विचारों में विचरण करता है। उसी टेंशन में गुम-सुम रहता है। ऐसे व्यर्थ की उपाधि पैदा करने वाले व्यक्ति को भोले जीव पहचान नहीं पाते और चक्कर में फँस जाते हैं। ऐसे लोगों से हमेशा सावधान रहना आवश्यक है।

◆◆◆

वैराग्य शतक

वैराग्य शतक- विवेचनकार आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान- दिव्य संदेश प्रकाशन, ठि. सुरेन्द्र जैन, 205, सोना (ई), मुंबई 400002 मो. 9892069330 आवत्ति- तृतीय, मूल्य- एक सौ रुपये, पृष्ठ -132, कागज व छपाई सफाई- संतोषजनक, मुख पृष्ठ- बहुरंगी आर्ट कार्ड पर - आकर्षक ।

मुमुक्षु की पहली इच्छा, प्रार्थना या अपेक्षा भव-निव्वेओ है। भव निव्वेओ या भव निर्वेद से तात्पर्य है संसार के सुखों के प्रति वैराग्य भाव । सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिये यह अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत ग्रंथ पूर्वाचार्य की मूल रचना है जिनका नाम अज्ञात है। पूरी रचना में भी कहीं उल्लेख नहीं है। इस रचना में आगामों की कई गाथाओं का संग्रह भी है। ग्रंथ मूलतः प्राकृत भाषा में है, इसका हिन्दी विवेचन आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म. ने किया है जो प्रेरक तथा प्रभावकारी ही नहीं आंतरिक भावोत्तेजक है। ग्रंथ में मूल गाथा के साथ शब्दार्थ तथा विवेचन दिया गया है। विवेचन सरल भाषा में आध्यात्मिक भावों से परिपूर्ण होने के कारण ग्रंथ काफी उपयोगी व सार्थक बन गया है ।

– **सुरेन्द्र लोढ़ा**

* बाहुबली को तीन लाख पुत्र थे ।
* बाहुली के पुत्र चन्द्रयशा के 72000 पुत्र व 24000 स्त्रियां थी।
* रामचन्द्रजी ने दीक्षा ली तब उनके साथ 16000 राजा, 37000 रानीयों ने सुव्रत मुनि के पास दीक्षा ली ।
* सामायिक बैठे-बैठे प्रतिक्रमण बैठे-बैठे करे तो आयंबिल का प्रायश्चित आता है।

(श्राद्धर्जित कल्प)

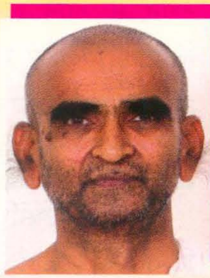

मांसाहार विश्व के लिये एक संकट

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

विश्व में मांसाहारियों की संख्या प्रबल है तथा शाकाहारियों की संख्या सीमित है, मांसाहारी शाकाहारियों को अपने व्यंगबाणों से घायल कर उन्हें चिढ़ाते रहते हैं लेकिन हकीकत में निष्कर्श प्राप्त किया जाए तो बहुमुखी प्रतिभा का विकास शाकाहार से ही संभव है। विश्व के कोने-कोने में जो विश्वविख्यात राजनेता, उद्योगपति, चिंतक, बुद्धिजीवी, पत्रकार, पहलवान, अभिनेता तथा अभिनैत्रियां, वैज्ञानिक उद्भूत हुए वे शाकाहारी ही हैं। लेखक के रूप में रूसी टॉल्सटॉय, नाटककार के रूप में ब्रिटिश जार्ज बर्नाड शा, दार्शनिक रूप में यूनानी पैथोगोरस, वैज्ञानिक के रूप में अमेरिकी आइन्स्टीन, बॉडी बिल्डर के रूप में चैम्पियन एण्डज रिंगलिंग, दौड़ चेम्पियन मुरेरोज, डार्विन, सुप्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा , सुप्रसिद्ध गायक माइकल जैक्सन आदि सभी शाकाहारी ही थे। भारत का उदाहरण पुष्ट करते हुए स्वयं महात्मा गांधी ने लिखा है कि सबसे महान हिन्दू समाज सुधारक शाकाहारी ही हुए हैं। महात्मा गाँधी स्वयं शाकाहारी ही थे उनने स्वामी दयानंद सरस्वती तथा शंकराचार्य का उल्लेख भी शाकाहारी के रूप में किया है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार मांसाहार विश्व के लिये एक बड़े संकट के समान है। डॉ. हीडहीक का कथन है कि हृदयरोग, मस्तिष्क रोग अथवा पाचन क्रिया की गड़बड़ी से मरने वाले लोगों की संख्या में वे अधिक हैं जो नित्य मांस खाते हैं। डॉ. कलाउसन ने मत दिया है कि जिन्हें बचपन से मांसाहार कराया जाता है, वे बड़े होकर आलसी, सुस्त, झेंपू तथा दुर्बल निकलते हैं। किसी भी प्रकार के मांस में कार्बोहाइट्रस नहीं होते। उनके अभाव में आंतों में तरह - तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं। मांस में विटामिन सी भी नहीं होता। अमेरिका के नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. माइकेल ब्राऊन तथा डॉ. जोसेफ गोल्डस्टीव ने पाया है कि मांस में कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक होती है जो हृदयरोग, चर्मरोग, पथरी आदि का घर है। (क्रमशः)

◆◆◆

अध्यक्षीय पाती

विचारणीय स्थिति में जैन जनसंख्या

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जैन तथा हिन्दू ये दोनों शब्द प्रचलित शताब्दियों के ही हैं, तीर्थंकर काल में इनका प्रचलन नहीं था। श्रमण तथा वैदिक संस्कृतियों के रूप में श्रमण तथा वैदिक जैसे शब्दों का उपयोग इनके लिये होता था। समय-समय पर अन्य कई शब्दों का प्रयोग भी इतिहास के पृष्ठों पर हैं।

लेकिन वास्तविकता यह है कि सभ्यता का सूत्रपात प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के समय से हुआ था। वही अवधारणा श्रमण संस्कृति के रूप में असंख्यात युगों-युगों को पार कर आज है। मध्य समय में जात व धर्म के नाम पर विभाजन होते रहे। छब्बीस सौ वर्ष पूर्व ही तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के काल में जितने धर्म या विचारधारा या आध्यात्मिक मार्गों का अस्तित्व था उनमें से अधिकांश आज लुप्त हैं। महात्मा बुद्ध का बौद्ध धर्म अवश्य भारत की सीमाओं से बाहर दिखाई देता है, अन्यथा उस युग के प्रमुख चिन्तक मक्खली गौशाल, अजित केस कम्बलिन, आलार कालाम, प्रबुद्ध कच्चान के नाम भी आते हैं लेकिन आज न तो इनके कोई अनुयायी हैं, न इनके धर्म का अस्तित्व है। फिर पूर्व के लाखों वर्षों में कितने पंथ, सम्प्रदाय, धर्म उत्पन्न हुए होंगे तथा लुप्त हो गये, यह अंदाज लगाया जा सकता है। विगत भारतीय इतिहास में भी गुप्त वंश का स्वर्ण काल माना जाता था। गुप्तवंश मूलतः प्राचीन प्रात्य (जैन) जाति का वंश था। गुप्त काल के राजा विशिष्ट योद्धा थे। इस समय जैन समाज की जनसंख्या संतोषजनक थी लेकिन आज हमारी घटती हुई जनसंख्या प्रश्नवाचक चिन्ह बनी हुई है। फिर वर्तमान में जैन परिवार टूट कर शिक्षा या जॉब के नाम पर विदेशों अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम आदि में तेजी से जा रहे हैं। इससे भारत में जैनों की संख्या घट रही है। भारत में भी जैनों के परिवार छोटे होते जा रहे हैं। इस चिन्तनीय स्थिति पर मुंह अवश्य सभी खोल रहे हैं लेकिन कोई ठोस प्रयास नहीं हो रहा है ऐसी उपेक्षा जैन समाज के लिये हितकारी तथा सुदृढ़ भविष्य की परिचायक नहीं है।

पारसी समाज की स्थिति उदाहरण है। जहाँ भारत के संविधान में सन् 1950 में ही जैनों से अधिक प्राथमिकता देते हुए पारसी समुदाय का अल्पसंख्य के रूप में उल्लेख हो गया था, आज 70 वर्ष के अरसे में इस समाज की जनसंख्या इतनी घट गई है कि यह भारत में नाममात्र की रह गई है। हमें भी जैन समाज की संख्या पर गंभीरता से विचार करना होगा। ◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

उत्साहपूर्ण नतीजे के लिये हम बढ़ रहे हैं

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

परिषद् के चतुः दिव्य उद्देश्यों के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण बिन्दु धार्मिक शिक्षा प्रसार है। इस पर परिषद के प्रणेता लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने सदैव बल दिया। वे अपने परामर्शोपदेशों में धार्मिक पाठशालाएं हर ग्राम, नगर में स्थापित करने पर प्राथमिकता स्थापित करते थे। मेरे परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित होने पर उन्होंने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए यही निर्देश दिया कि धार्मिक शिक्षा को समाज में प्रबल बनाने के लिये अधिकाधिक प्रयास करें। मैंने उनसे वासक्षेप ग्रहण करते हुए इस दिशा में अपने संकल्प का निवेदन उन्हें कर दिया था। उनके देवलोकगमन से मेरी संकल्प शक्ति के लिये परिस्थिति की अनुकूलता अनुपस्थित - सी हो गई लेकिन मैं पूरे उत्साह से जुटा रहा। प्रथम कार्य श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा संचालित परीक्षाओं को निरंतर रखने का कर उस हेतु साधन की सुविधा की। इसके साथ पाठशालाओं को सशक्त तथा सक्रिय बनाने का कार्य किया। इस हेतु पाठशालाओं में अभ्यास करते हुए सूत्रों व उनके अर्थों को मुखाग्र करने वाले छात्रों के लिये उनके परिश्रम व परिणाम के अनुसार पुरस्कारों के लिये कूपन योजना प्रारंभ की। प्रसन्नता है कि इस योजना ने अच्छा प्रतिसाद दिया। हमारी टीम ने पाठशालाओं में दौरा करते हुए प्रत्यक्ष पहुंचकर प्रगति का मूल्यांकन किया। यही अनुभव हुआ कि छात्रों ने काफी सीखा है। साथ ही ज्ञानपीठ के परीक्षा केन्द्रों की संख्या भी दुगुनी से अधिक हो गई है। इस योजना की समीक्षा में पाया गया कि सूत्र याद करवाने पर इतना जोर दिये जाने का अच्छा परिणाम प्राप्त होने के बावजूद इसी दिशा में अधिक अग्रसर होने की आवश्यकता है। तदनुसार प्रतिक्रमण की विधि तथा सूत्र कंठस्थ किये जाने तक पहुंचने के लिये प्रतिक्रमण कंठस्थ करवाने की प्रायोजना अधिक आकर्षक पुरस्कारों के साथ प्रारंभ की गई जो पूरे उत्साह के साथ पाठशालाओं में गतिशील है। इन परिणामों की प्रतीक्षा की जा रही है। एक तरह से वर्तमान में हम अपना अभियान सूत्रों के शिक्षण तक ले जाना चाहते हैं जिनसे (1) प्रत्येक श्रीसंघ में राई व देवसी प्रतिक्रमण करवाने वालों की पर्याप्त संख्या में परिप्राप्ति हो सके। विशेषतः पुरुष वर्ग में अवस्थित कमी दूर की जा सके। (2) प्रत्येक परिषद सदस्य को सामायिक लेने व पारने, गुरुवन्दन, पूजा के नवांग दोहों तथा चैत्यवन्दन की विधियों का ज्ञान होना ही चाहिए।

आशा है उत्साहपूर्ण नतीजे हमारे साथ होंगे।

◆◆◆

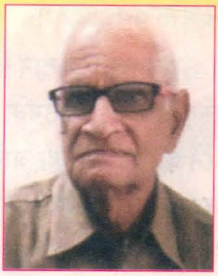

डिसेक्शन हेतु जीवों की हिंसा अतिचार ही नहीं अनाचार है

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

बच्चे जो डॉक्टरी की पढ़ाई करते हैं, उनसे डिसेक्शन के लिये मेढ़क, केंचुआ आदि को जीवित मंगवाते हैं। उन पर प्राणघातक वार कर उनकी जीवन लीला खत्म कर देते हैं। यह एक तरह का अमानवीय कृत्य होकर अतिचार ही नहीं अनाचार है। इस तरह के अनाचार को नहीं करने की यदि बच्चे ठान लें, तो यह हिंसा रुक सकती है।

पेनिसिल्वेनिया (अमेरिका) निवासी 16 वर्षीय छात्रा जेनिफर ग्राहम के समक्ष एक गंभीर स्थिति तब पैदा हुई, जब जीव विज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा में उसको मेढ़क का विच्छेदन करने को कहा गया। लेकिन जेनिफर ने दृढ़ संकल्प एवं विश्वास के साथ जीवित प्राणी का विच्छेदन कर हत्या करने से मना कर दिया। अध्यापक ने उसे परीक्षा में शून्य अंक दे दिये, किन्तु जेनिफर ने संघीय न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। अंततः जेनिफर के पक्ष को स्वीकार कर, उसे परीक्षा में सम्मिलित किया गया। जेनिफर को इस मुकदमे के कारण राज्य ही नहीं, सारे देश में ख्याति प्राप्त हुई है।

इस प्रेरणादायी घटना का लाभ उठाकर अमेरिका के कम्प्यूटर निर्माता 'एप्पल कम्पनी' ने इस प्रकरण को आगे बढ़ाया जिससे जेनिफर की मान्यतानुसार मेढ़क को बिना चीर फाड़ किये ही उसके विभिन्न शरीर के अंगों का ज्ञान दिया जा सकता है। जेनिफर की जीव हिंसा के विरुद्ध उनकी नैतिक मान्यता की चर्चा सम्पूर्ण केलिफोर्निया राज्य में फैल गई। जनता के प्रबल समर्थन और दबाव में आकर उसके अपने पाठ्यक्रम एवं परीक्षा नियमों में संशोधन किया गया, जो 1 जनवरी 1989 से प्रभावशाली हुआ, जिसमें विद्यार्थियों को अपनी धार्मिक और नैतिक मान्यता के कारण मेंढ़क विच्छेदन में आपत्ति करने वालों को प्रयोगशाला में इस प्रकार के प्रयोग करने से मुक्त किया जाता है। इसी तर्ज पर भारत में भी राजस्थान और मध्यप्रदेश में स्कूली शिक्षा में विच्छेदन क्रिया से मेंढ़क

को मुक्त कर दिया गया है।

आजकल देह दान करने की परम्परा के बलवती होने से उनके अंगों का उपयोग करने की सुविधा हो जाने से प्रयोगशाला में मेढ़क, केचुएँ आदि प्राणियों की हिंसा के बंद होने का रास्ता खुल गया है। छात्रों को इस हिंसात्मक क्रिया को एक मत से नकारकर अनाचार न करने की मानसिकता को अपनाना चाहिये।

देश में देहदान के प्रति केन्द्र और राज्य सरकारों के नित नये प्रयासों से लोगों में, जिनमें धार्मिक, सामाजिक संगठन ही नहीं, एन.जी.ओ. और व्यक्तिगत रूप से भी जागृति आ रही है। लोगों में आज देहदान के प्रति जागृति आ रही है अच्छे कर्म प्रदर्शन हेतु जनजागृति कर प्रेरित करने की आवश्यकता है।

मेडिकल कौंसिल ऑफ इण्डिया के अनुसार सरकारी मेडिकल कालेजों की संख्या 355, एमबीबीएस की सीटें 44050 हैं। जानकारी के अनुसार एक देहदान पर तीन डॉक्टर तैयार होते हैं और कई को जीवन दान देते हैं। देश में विभिन्न बीमारियों और हादसों में हर वर्ष बड़ी संख्या में शारीरिक अंगों की जरूरत पड़ती है। लेकिन पर्याप्त देहदान न होने से और अस्पतालों में तालमेल के अभाव में जरूरतमंदों को अंगों के न मिलने से प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। एक व्यक्ति के अंग दान से आठ लोगों को नई जिन्दगी मिल सकती है। किडनी , लीवर, हार्ट, कार्निया, लंग्स, खून की नलियाँ, टिशूज और कार्टिलेज का दूसरे इंसानों में प्रत्यारोपण होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर अंगदान का लाभ जरूरतमंदों को मिल सके और यह काम पारदर्शी तरीके से हो, इस हेतु सरकार ने एक नेशनल को आर्डिनेशन सेन्ट्रल बनाने पर विचार किया है। यह देश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों और चिकित्सालयों के बीच तालमेल करेगा। देश के अलग-अलग हिस्सों में छह जोनल सेंटर भी बनाये जाएंगे। ऐसे में केन्द्र सरकार के इस दिशा में कदम बढ़ाने के परिणाम में देहदान करने वालों को वी.आई.पी. ट्रीटमेंट अर्थात मुफ्त ईलाज की सुविधा देने की राष्ट्रनीति बनाए जाने की सोच सामने है। देहदानियों को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य सरकारें भी रोल मॉडल जैसे कदम उठाने से पीछे नहीं हटेंगी। मध्यप्रदेश सरकार को भी देहदानियाँ के सम्मान और प्रोत्साहन स्वरूप असरकारक कदम उठाकर ऐसी योजना का नक्शा तैयार करने में देर नहीं करना चाहिए ताकि देह -दानियों के त्याग को चिरस्मरणीय बनाया जा सके।

◆◆◆

तीर्थंकर – तारेश (36)

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

महाराजाधिराज श्रेणिक की पटरानी चेतना ने कूणिक के पश्चात् दो पुत्रों को और जन्म दिया, इनका नाम हल्ल तथा विहल्ल रखा गया। श्रेणिक मगध का महाराजा होने के कारण काफी शक्तिशाली माना जाता था। भारत के प्रचलित इतिहास में इसका नाम बिम्बसार दिया हुआ है। शक्तिशाली श्रेणिक की सेना में सेचनक हस्ती (हाथी) भी शामिल था। जो अद्‌भुत लक्ष्णोंवाला था। इसे पकड़ने के लिये श्रेणिक स्वयं सेना लेकर जंगल में गया था लेकिन यह किसी के हाथ नहीं आया। राजकुमार नन्दीषेण के व्यवहार ने हाथी को जातिस्मरण ज्ञान करवा दिया, हाथी ने पूर्व जन्म में राजकुमार नन्दीषेण से अपने रिश्ते का भान कर नन्दीषेण के निमंत्रण को स्वीकार किया। श्रेणिक इस हाथी को प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

सेचनक हाथी के बारे में उल्लेख यह आता है कि राजगृह के शैलशिखरों पर एक हाथी ऐसा भी था जिसके अनेक हथिनियाँ थीं, वह नहीं चाहता था कि कोई नरहाथी उसके जंगल में पैदा हो अतएव किसी भी हथिनी द्वारा नरहाथी जन्म देने पर यह हाथी नरबालक को जान से मार डालता था। एक हथिनी के गर्भवती होने पर उसने सोचा की नर होने पर कप्तान हाथी उसे मार डालेगा, इसलिये उस समूह से अलग होकर वह जंगल के एक आश्रम में चली गई, वहाँ नर बच्चे को जन्म दिया। आश्रम के तापसों का उसे भरपूर स्नेह मिला, उसका नाम तापसों ने सचेनक रख दिया। सेचनक सुन्दर तथा बलिष्ठ था। उसने जंगल को अपना राज्य बनाने के लिये तापसों के आश्रम उजाड़ दिये।

तापसों ने राजा श्रेणिक को खबर भेजी। श्रेणिक ने उसे अपने राज्य की सेना में शामिल कर लिया। तीर्थंकर महावीर देव का विचरण राजगृही क्षेत्र या मगध में अधिकांश रहता था। जब भी प्रभु महावीर राजगृही आते थे श्रेणिक अपनी पत्नी, पुत्र परिवार तथा सभासदों सहित उनका उपदेश सुनने जाता था। भगवान समवसरण में बिराजमान थे, उनने अपनी देशना दी। देशना से श्रेणिक अत्यन्त प्रभावित हुआ। तभी एक कुष्ठी व्यक्ति समवसरण में आया। वह भगवान महावीर की ओर बढ़ा। (क्रमशः)

◆◆◆

(लेखांक-7)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जो कुछ व्यक्ति शेष रहे, उन्हें एक के बाद एक क्रमशः रानी के रोग का परीक्षण करने के लिये कहा गया। ये व्यक्ति कनकपुर के राजवैद्य की उपस्थिति में रानी का परीक्षण करते थे। इन व्यक्तियों में से भी किसी को कोई सफलता नहीं मिल पाई। इस प्रकार यह उपाय भी निरर्थक ही सिद्ध हुआ। केवल कनपुर के राज्यवैद्य की औषधि ही रानी को दी जाती रही। इस औषधि का प्रभाव यह था कि इससे रानी की बीमारी बढ़ नहीं पा रही थी। इसके अतिरिक्त इस औषधि से रानी की चेतना बराबर बनी रहती थी।

राजा वीरधवल ने अपनी रानी पद्मावती के उपचार में कोई कमी नहीं आने दी। पानी की तरह पैसा बहाया किन्तु कर्मों के आगे आज तक किसी की नहीं चल पाई। महामात्य सुमतिचन्द्र भी रानी की बीमारी से चिंतित था। उसने भी जो कुछ उपाय वह कर सकता था, अथवा करवा सकता था, करवाये, किन्तु सभी उपाय निष्फल ही सिद्ध हुए। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि किसी को भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि रानी कौन-सी बीमारी से पीड़ित है? जब तक रोग का पता चलता, तब तक सही उपचार संभव नहीं हो पाता है। सामान्य लक्षणों के आधार पर ही राजवैद्य औषधि देते जा रहे थे।

रानी पद्मावती स्वयं एक विदुषी महिला थी। अपनी रुग्णता की असाध्यता वह समझ चुकी थी। उसने अपने पति राजा वीरधवल को कई बार अपने मन की बात कहनी चाही, किन्तु राजा ने सदैव उसे बोलने से रोक दिया।

आज जब राजा वीरधवल उसके निकट बैठा था, उसके दोनों पुत्र अपने-अपने कक्ष में थे, तब रानी से रहा नहीं गया। उसने कहा- 'स्वामी, मुझे आपसे कुछ कहना है।'

'तुम्हें इस समय बोलना नहीं चाहिए। तुम स्वयं जानती हो कि बोलने से शक्ति क्षीण होती है। तुम पहले ही काफी कमजोर हो गई हो। अच्छा हो कि तुम चुपचाप लेटी रहो।' सदैव की भांति राजा वीरधवल ने कहा।

'स्वामी ! मैं आज चुप नहीं रहूँगी। आपसे भी निवेदन है कि आज मुझे आप रोकें नहीं।' रानी ने कुछ दृढ़ता से कहा।

राजा समझ गया कि आज रानी बोलकर ही मानेगी। इसलिये उसने कहा- 'ठीक है। तुम जो कुछ भी कहना चाहती हो, बिल्कुल संक्षेप में कह दो।'

'स्वामी ! मुझे लगता है कि मेरा रोग असाध्य है। आपने सभी प्रकार के उपाय से मेरा उपचार करवाया, किन्तु मुझे उससे कोई लाभ नहीं हुआ। लगता है कि अब मेरा अंतिम समय आ गया है।' रानी ने कहा और चुप हो गई। वह कुछ देर तक आँखें बंद किये लेटी रही। लगता था कि वह इतना बोलने से थक गई है और विश्राम कर रही है। राजा वीरधवल बोला कुछ नहीं। वह उसके चेहरे की ओर अपलक दृष्टि से देखता रहा। रानी ने आँखें खोलीं । उसके चेहरे पर हास्य की हल्की-सी रेखा खिंच गई। उसकी आँखों में कुछ तेज-सा दिखाई दिया। राजा को कई दिनों के पश्चात् रानी के चेहरे पर हास्य दिखाई दिया था। रोग से पीड़ित बुझे-बुझे चेहरे पर कुछ आकर्षण दिखाई दिया। राजा ने रानी का हाथ अपने हाथ में लिया और उस पर अपना दूसरा हाथ फिराते हुए कहा- 'प्रिये ! तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अभी विश्व में और भी चिकित्सक हैं। मैं उन्हें बुलाकर तुम्हारा उपचार करवाऊंगा।' देखना तुम शीघ्र ही पहले की भांति स्वस्थ हो जाओगी।'

'स्वामी ! झूठी तसल्ली देने से कोई लाभ नहीं है। आप भले ही कुछ भी कहें। किन्तु मुझे लग रहा है कि अब मैं अधिक दिनों तक जीवित नहीं...।' रानी इतना ही कह पाई थीं कि राजा ने उसके मुख पर अपना हाथ रख दिया और बोला- 'प्रिये! ऐसा न कहो। ऐसे अशुभ वचन और अपने मुख से मत निकालो।

(क्रमशः) ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

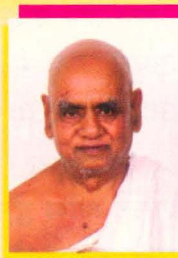

पंच परमेष्ठी मंत्र कौन सा है ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. परमेष्ठी किन को कहते हैं ?

उ. जो परम (उत्कृष्ट) पद में स्थित हों, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. परमेष्ठी के कितने भेद हैं ?

उ. परमेष्ठी के पाँच भेद - 1. अरिहन्त 2. सिद्ध 3. आचार्य 4. उपाध्याय 5. साधु मुनिराज

प्र. पञ्च परमेष्ठी मंत्र कौन सा है ?

उ. णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। अर्थ- अरिहन्त भगवान् को नमस्कार हो, सिद्ध भगवान को नमस्कार हो, आचार्य महाराज को नमस्कार हो, उपाध्याय को नमस्कार हो और अढ़ाई द्वीप रूप लोक में विराजमान सर्व साधु- मुनिराज को नमस्कार हो।

प्र. अरिहन्त किसे कहते हैं ?

उ. जिनके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय ये चार घाती कर्म नष्ट हो गये हों, उन्हें अरिहन्त कहते हैं।

प्र. सिद्ध किसे कहते हैं ?

उ. जो घाती -अघाती सब कर्मों का क्षय करके सिद्धगति में विराजमान हो चुके हैं, जिन्हें पुनः जन्ममरण नहीं करना है उन्हें सिद्ध कहते हैं।

प्र. आचार्य किसे कहते हैं ?

उ. जो पाँच आचार स्वयं पालते हैं, दूसरों से पालन करवाते हैं, ऐसे गच्छ के नायक को आचार्य कहते हैं।

प्र. उपाध्याय किसे कहते हैं ?

उ. द्वादशाङ्ग को पढ़ने और पढ़ाने वाले मुनिराज को उपाध्याय कहते हैं।

(क्रमशः)

◆◆◆

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

(संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.)

मल्लीकुंवर ने शिबिका से उतरकर सहस्त्राम्र वन उद्यान के अशोकवृक्ष के नीचे अपने संसार त्याग की क्रिया प्रारंभ कर दी। उनने अपने वस्त्रों तथा आभूषणों को महारानी प्रभावती को सौंप दिये एवं पंचमुष्ठि लुंचन किया लुंचित केश इन्द्रराज शक्र ने ग्रहण किये। उपरांत सामायिक का उद्घोष किया तथा चारित्र मार्ग पर अग्रसर हो गए तभी उन्हें मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया। उनके साथ तीन सौ महिलाओं तथा तीन सौ पुरुषों ने संयम ग्रहण किया जिनमें आठ राजकुमारों द्वारा ली गई दीक्षा भी शामिल है।

उल्लेखनीय घटना यह हुई कि पौष शुक्ला एकादशी के दिन मल्लीकुंवर ने संयम ग्रहण किया तथा उसके पश्चात् ध्यानावस्थित हो गये। उसी दिन याने पौष शुक्ला एकादशी को ही घनघाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। इस तरह उनका छद्मस्थ काल केवल एक प्रहर से कुछ अधिक समय रहा जो अन्य तेवीस तीर्थंकरों के छद्मस्थ काल में सबसे कम है। भगवान मल्लीनाथ का प्रथम पारणा राजा विश्वसेन के यहाँ सम्पन्न हुआ।

प्रभु मल्लिनाथ को केवल ज्ञान की प्राप्ति होने पर देवों ने उसी उद्यान में समवसरण की रचना की। महाराजा कुम्भ अपने परिवार तथा जन मेदिनी के साथ समवसरण में पहुँचे। उधर छह राजा भी वहाँ उपस्थित होने में पीछे नहीं रहे। प्रभु ने देवीय सिंहासन पर आरूढ़ होकर अपनी प्रथम देशना दी। उनने चतुर्विद धर्मतीर्थ की स्थापना की। आपकी देशना से प्रभावित होकर महाराजा कुम्भ ने प्रथम श्रावक तथा महारानी प्रभावती ने प्रतम श्राविका बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। छहों राजा देशना से ऐसे प्रभावित हुए कि उनने दीक्षा ग्रहण कर ली। धर्मदेशना पूर्ण होने पर सभी विसर्जित हो गये। उपरांत तीर्थंकर मल्लीनाथ ने उद्यान से विहार कर दिया। वे पूरे क्षेत्र में विचरण कर उपदेश प्रदान करने लगे। उनने संसार की असारता, आत्मा के कल्याण, दुःखों के आराधना द्वारा अन्त, त्रिरत्न के मार्ग पर अनुकरण, सिद्धशिला पर आरोहण, मुक्ति की प्राप्ति जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया। शास्त्रों में उनका विचरण काल 54 हजार 900 वर्ष उल्लेखित है। उनकी देशना से सैंकड़ों भव्य जीवों ने धर्म प्राप्त किया। (क्रमशः)

◆◆◆

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज

बाल्यकाल

(प्रस्तोता – मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

पहली कविता

गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज अपने गृहस्थाश्रम में ही काव्य के क्षेत्र में कदम रख चुके थे। वे धार्मिक कविताएं लिखते थे एवं साथियों को सुनाते थे। स्कूल में पढ़ते समय ही आपकी प्रतिभा में निखार आना प्रारंभ हो गया था। आपने मिडिल कक्षाओं का अध्ययन थराद स्थित गबलीबाई मिडिल स्कूल में किया था। वहां तब प्रधानाध्यापक श्री कीकाणी थे। अध्यापकों में श्री डी.के. मोदी एवं श्री पूनमचंद नागरलाल दोशी थे। श्री पूनमचंद नागरलाल दोशी आपको कविताएं लिखने के लिए प्रेरित करते थे। वे आपकी गलतियों का सुधार भी करते थे। जब आपने कविता लिखने का संकल्प किया तब कई दिनों तक पंक्तियां दिमाग में जमाते, बिगाड़ते रहे। कई तुकबंदियों को बनाया एवं बिखेरा। कई बार कागज पर उतारने का विचार किया। अंततः एक दिन श्री पूनमचंद कागज एवं कलम लेकर बैठ ही गये। उनने अपनी पहली कविता कागज पर उतार दी। श्री पूनमचंद के स्वहस्ताक्षरों से लिखित प्रथम कविता।

प्रथम कविता का मूल लेखन

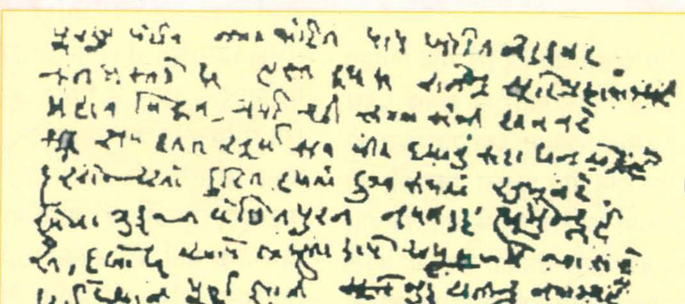

जयंतनाम जपो

(कु. धनिष्ठा मयूर तलेरा)

जिस देश में जिस वेश में जिस हाल में रहो
जयंत नाम जपो ? जयंत नाम ही जपो
आचार्यश्रीजी के चरणो में हम झुका रहे अपना माथा
जिनसे जीवन की हर चर्चा बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा
पेपराल नगर में जन्म है पाया धरू है आपका कुल
गुजरात की गर्मी में भी खिल रहा था जहाँ हर फूल
माँ पार्वती के लाल हैं और स्वरूप के राजदुलारे
भाई-बहन के प्यारे भाई परिवार की आँख के तारे।
माघ सुदी 4 पर आपने वीर प्रभु का मार्ग अपनाया
यतीन्द्रसूरि के हस्तों से पूनम जयंत कहलाया
क्रोध विजेता ज्ञानी मूरत बोलो जय गुरु जयंत
तारण हारे मोक्ष पधारे प्यारे जय गुरु जयंत।
सातम को भाण्डवपुर नगरी में आप हम सभी को
अनाथ कर छोड़ चले गए।
दो वर्ष बीत गये सातम आ गई आँखें भर गईं आज
इस अवसर पर गुरु गुण गाण कर रहे हैं।
नित्यसेनसूरि कृपा बरसती रहे चाहे दिन या रात
दोनों हाथों को जोड़कर नमन करती आज
धनिष्ठा पर सदा आपका आशीर्वाद रहे।

साध्वी मंडल विराजे हैं। श्रावक-श्राविका के साथ

इनके चरणों में वंदन है सभी को जय जिनेन्द्र

एक साथ 'जय गुरु जयन्त।'

श्री जयंतसेनसूरि मौक्तिक

* श्रद्धा ही जीवन है, प्राण है। जहाँ श्रद्धा नहीं है, वहाँ अंधकार है, मृत्यु है।

* जो श्रद्धा निर्मित हो तो हमें चौक्कस सत्य के प्रति समर्पित हो जाना है।

* निष्कपट समर्पण व्यक्ति को सभी प्रकार से आगे बढ़ाता है।

* गुरु की परमकृपा प्राप्त करने वाला शिष्य महान हो जाता है।

* स्वयं की हुई भूल को स्वीकार करने वाला व्यक्ति महान बन जाता है।

* जिसके अंदर मान-माया और मोह ये तीन मकार विद्यमान होते हैं, वह कहीं भी नमस्कार नहीं कर पाता है।

* द्रव्य स्थिति में रहने वाला जीव हमेशा समस्याओं से घिरा हुआ ही रहता है।

* किसी का भी चरित्र सुनने में आता है तो वह स्वयं के चारित्र निर्माण हेतु है।

इंसान की पहचान

एक गुरु अपने शिष्य के लिए औषधि खोजने जंगल में गए। एक शिकारी भी शिकार के लिए वहाँ गया और एक सैनिक भी जंगल का रास्ता भटक गया। तीनों को प्यास लगी। दूर कहीं झोपड़ी दिखाई दी, जिसमें एक दृष्टिहीन व्यक्ति बैठा था। शिकारी वहाँ पहुंचा और बोला 'ए अंधे ! मुझे पानी पिला दे, वरना तीर से तेरा जलपात्र फोड़ दूंगा । दृष्टिहीन व्यक्ति ने कहा, 'चल भाग शिकारी कहीं का, नहीं दूंगा पानी ।' उसी के पीछे सैनिक आया और बोला, 'अंधे, पानी पिलाकर मेरी प्यास बुझा । चाहे तो धन और वस्त्र ले ले।' उस व्यक्ति ने चिढ़कर कहा, 'राजा का सैनिक है, मुझे लोभ दिखाता है, जा नहीं मिलेगा पानी ।' तब तक गुरुजी भी वहां पहुंच गए थे । उन्होंने कहा, 'सूरदासजी, थोड़ा-सा जल प्रदान करें, बड़ी कृपा होगी।' दृष्टिहीन व्यक्ति बोला, गुरुदेव, मेरा सौभाग्य है कि आप मेरी कुटिया में पधारे।' उसने गुरुजी को पानी पिलाया। पानी पीकर गुरुजी ने कहा, आप देख नहीं सकते, फिर यह कैसे जान गए कि पहले आया व्यक्ति शिकारी, दूसरा सैनिक और तीसरा मैं, एक अध्यापक हूँ ? वह बोला, 'गुरुजी, बोलचाल से ही इंसान की पहचान हो जाती है। यह सुनकर गुरुजी ने उससे विनती की कि वह शिकारी और सैनिक को भी पानी पिला दे ताकि इनके मन की आँखे भी खुल जाएं।

राष्ट्रसंत, साहित्य मनीषि, तीर्थ प्रभावक, जैनाचार्य प्रवर

श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' के हस्ताक्षर

सुश्रावक श्री सुश्रीलजी मिरिया सपरिवार।

धर्मलाभ। गुरु कृपा से हम सुखशाता में है। पूना से विहार कर वाई आये। यहाँ पर पंचाह्निका उत्सव सानन्द सम्पन्न करवा कर क्रमशः विहार करते हम कराड आये। यहाँ श्रीनमिनाथ जिन प्रतिष्ठांजनशलाका उत्सव खूब उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। भव्यतम अष्टाह्निका उत्सव का आयोजन सुन्दरतम जिन मन्दिर निर्माता श्री छाजेड परिवार एवं तिलेसरा मुथा परिवार आहोर निवासी की ओर से हुआ जो कि यहाँ के इतिहास एक नये पृष्ठ के रूप में हुआ।

महोत्सव अन्तर्गत दि. १५।६।२००५ को मुमुक्षु श्री शिल्पा कुमारी की दीक्षा भी हुई। जिन का नाम साध्वीजी श्रेयस लता श्रीजी दिया गया। यह आत्मा सियाणा निवासी हीराचंदजी सालेचा की सुपुत्री है। साध्वीजी कोमललता श्रीजी की शिष्या के रूप में इन को दीक्षा दी गई है।

अब हमारा विहार कराड से बेंगलोर की ओर शुरु हो रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में होते हुए हम दि. १६।७।२००५ तदनुसार अषाढ सुदि ३ शनिवार को सुबह बेंगलोर प्रवेश करीशुं।

मुनि मंडल सह हम पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। सभी का ज्ञान ध्यान बराबर चल रहा है। संघ में सभी को ही धर्मलाभ कहें।

धर्म उद्यम रखें।

शेष कुशल। कल हुबली होकर आगे बढ़ेंगे।

[illegible]

पारवाड

दि. २५।६।२००५

भ. महावीर के निर्वाण कल्याण की प्रेरणाएँ

(कविरत्न डॉ. दिलीप धींग)

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण ईस्वी पूर्व 527 (विक्रम पूर्व 470) में कार्तिक अमावस्या की अर्द्धरात्रि में साढ़े बहत्तर वर्ष की आयु में पावापुरी में हुआ था। उस समय भगवान महावीर के दो उपवास थे। लगातार दो दिन दो रात (48 घण्टों) से उनकी धर्म-देशना(उपदेश - धारा) प्रवाहित हो रही थी। समवशरण में बिना थके लाखों की परिषद् उनकी देशना का श्रवण कर रही थी। मानवों के अलावा देव-देवियाँ और पशु-पक्षी भी तीर्थंकर महावीर की दिव्य वाणी का अमृतपान कर रहे थे। तीर्थंकर महावीर के अत्यन्त तेजस्वी आभामण्डल और ज्ञानालोक से सम्पूर्ण लोक प्रकाशमान था। उनके निर्वाण के साथ ही एकाएक सर्वत्र अन्धकार छा गया। क्षणभर के लिए देवलोक (स्वर्ग) में भी अंधकार व्याप्त हो गया। करोड़ों आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं। देवगण भीं अपना रुदन रोक नहीं सके।

ज्ञान-ज्योति की प्रतिपूर्ति में देवताओं, राजाओं और सभी मानवों ने मणि -रत्नों के दीप जलाकर ज्योति (प्रकाश) की आराधना का संकल्प किया। मल्ल और लिच्छवि गणराज्यों में भी दीप जलाये गये। अमावस की वह निशा पुनः प्रकाशमय हो गई। उसी दिन से भगवान महावीर निर्वाण-कल्याणक के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष दीपावली का पर्व मनाया जाता है। दीपावली मनाने का यह प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण है। जैन ग्रन्थ कल्पसूत्र , हेमचन्द्राचार्य रचित त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र तथा हरिवंश पुराण में इस तथ्य के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। भगवान महावीर की अन्तिम देशना का संकलन मूल आगमग्रंथ उत्तराध्ययन-सूत्र और विपाक-सूत्र में है। दीपावली के अवसर पर उत्तराध्ययन-सूत्र के वाचन और श्रवण की परम्परा है। अगणित श्रद्धालु भगवान महावीर के निर्वाण-कल्याणक के उपलक्ष्य में दीपावली के उपवास, बेला, तेला और विविध जप-साधनाएँ करते हैं।

कार्तिक शुक्ल पक्षीय प्रतिपदा को भगवान की पार्थिव देह का अग्नि संस्कार किया गया। अन्तिम संस्कार के समय नौ मल्लवी और नौ लच्छवी सहित अठारह देशों के राजा, उनकी प्रजा, भगवान महावीर के ज्येष्ठ भ्राता राजा नन्दीवर्द्धन एवं उनके परिवारजन सहित लाखों मनुष्य और देवता उपस्थित थे। देवताओं ने ही प्रभु के अन्तिम संस्कार के लिए गोशीर्ष चन्दन की चिता का निर्माण किया था। अग्निकुमार देवों ने अग्नि प्रज्ज्वलित की और वायुकुमार देवों ने सुगंधित हवाएँ संचारित कीं। अनेक दुर्लभतम सुगन्धित पदार्थों के साथ प्रभु के चरम शरीर की दाह-क्रिया सम्पन्न हुई। तत्पश्चात्

मेघकुमार देव ने जलवृष्टि करके चिता शान्त की।

मनुष्य और देवता चिता-स्थल से पवित्र राख और अस्थियाँ ले गये। जब कुछ नहीं बचा तो भक्तगण वहाँ की मिट्टी ही खोद-खोद कर ले जाने लगे. फलस्वरूप भगवान के अग्नि-संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा खड्ड़ा हो गया। बाद में वह खड्ड़ा सरोवर में परिवर्तित हो गया। वर्तमान में उसी पावापुरी में स्थित कमल-पुष्पों से आच्छादित जलाशय में जलमन्दिर बना हुआ है। जलमन्दिर सफेद मार्बल से देव-विमान के आकार में निर्मित है। बिहार के नालन्दा जिले में स्थित पावापुरी में प्रतिवर्ष दीपावली को विशाल मेला लगता है। पटना से 100 किमी एवं राजगृह से 38 किमी दूर इस पावन निर्वाण-भूमि पर लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष पहुँचते हैं और वहाँ भगवान महावीर की उपासना करते हैं।

सन् 1974-75 में देश-दुनिया में भगवान महावीर का 2500 वाँ निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया गया। पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी पर 13 नवम्बर 1974 को भारतीय डाक विभाग ने25 पैसे मूल्य वर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी किया। डाक टिकट पर पावापुरी जलमन्दिर का चित्र अंकित किया गया। टिकट पर हिन्दी और अंग्रेजी में भगवान महावीर की 2500 वीं निर्वाण जयंती लिखा हुआ है।

इसी निर्वाण कल्याणक वर्ष में जैन आगमों के आधार पर जैन धर्म का मंगल-प्रतीक तय किया गया, जिसे सभी सम्प्रदायों के आचार्यों , सन्तों और विद्वानों ने अनुमोदित किया। इस प्रतीक के नीचे 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' लिखा गया। यह आदर्श वाक्य संस्कृत भाषा के जैन ग्रंथ 'तत्त्वार्थ-सूत्र' से लिया गया। वर्ष 2001 में जब भगवान महावीर का 2600 वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया, तब भारतीय डाक विभाग द्वारा इसी जैन प्रतीक को अंकित करते हुए तीन रुपये मूल्य वर्ग का बहुरंगी डाक टिकट तथा पाँच रुपये का सिक्का जारी किया गया।

उल्लेखनीय है कि भगवान महावीर की 25 वीं निर्वाण जयन्ती पर ही 1974 में सर्वसम्मति से पाँच रंगों वाला जैन ध्वज तय किया गया। उसी वर्ष भारत-रत्न आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा से जैन धर्म की श्वेताम्बर -दिगम्बर सम्प्रदायों के प्राकृत भाषा के ग्रंथों के आधार पर 'समणसुत्तं' पुस्तक तैयार की गई और भी अनेक ऐतिहासिक और अविस्मरणीय कार्य भगवान महावीर की 2500 वीं निर्वाण जयन्ती पर हुए। भगवान महावीर का हर निर्वाण कल्याणक (दीपोत्सव) जन-जीवन में अहिंसा, समता, सदाचार और प्रेम का आलोक प्रसारित करने का पावन निमित्त है। इस निमित्त से हमारे उपादान शुभ, शुद्ध और समर्थ बनें। हम भगवान के हर कल्याणक को हमारे लिए तथा देश-दुनिया के लिए कल्याणमय बनाते रहें।

◆◆◆

जिनशासन की वर्णमाला (4)

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

(लेखांक -2)

ढ ढंढणमुनि :- श्री कृष्ण के पुत्र का नाम ढंढणकुमार था। माता ढंढणा थीं। दीक्षा लेकर ढंढणमुनि बने। एक बार ढंढणमुनि ने भगवान से अभिगृह लिया कि जब तक मेरी लब्धि से आहार नहीं मिलेगा तब तक आहार नहीं करूँगा।' एक बार श्री कृष्ण महाराजा ने भगवान से पूछा - अभी श्रेष्ठ मुनि कौन हैं ? प्रभु ने उत्तर दिया। ढंढण मुनिजी 6 महिने से गौचरी के लिये घूम रहे हैं। ऐसा सुनकर श्रीकृष्ण ढंढणमुनि को वंदन करने गए। ढंढणमुनि को देख श्रीकृष्ण ने हाथी पर से नीचे उतरकर बहुत अहोभाव से वंदन किया। ऐसा अद्भुत दृश्य देखकर एक सेठ ढंढणमुनि को गौचरी के लिए बुलाते हैं। ढंढणमुनि गौचरी वोहरकर आते हैं। प्रभु को गौचरी बताते हैं- प्रभु कहते हैं कि आपकी लब्धि से गौचरी नहीं मिली है। तब ढंढणमुनि प्रभु से पूछते हैं कि प्रभु !!! मैंने ऐसा कौनसा कर्म किया जिससे गौचरी नहीं मिल रही है। प्रभु ने कहा - पूर्वभव में आपके अधिक बहुत सारे कर्मचारी काम करते थे और जब उनका भोजन का समय होता था तब आप उनको भोजन नहीं देते थे। एक घण्टा काम करवाकर भोजन देते थे। उस कारण से आपको लाभान्तराय कर्मबन्ध हो गया। पूर्वभव का वृतान्त सुनकर ढंढणमुनि गौचरी को परठने गए। लड्डु चूरते भावना भाने लगे। भावों की धारा इतनी बढ़ी कि वहीं केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई।

ण-णमो :- णमो अर्थात् नमस्कार करना नमना। मनुष्य में सबसे ज्यादा अहंकार होता है। जो झुकता है वो पाता है, जो अकड़ रहता है वो खोता है। बाहुबलि मुनि ने 12 महिने तक कठोर साधना की लेकिन मन में अभिमान रखने पर केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। जो सरल, नम्र व्यक्ति होते हैं वे शीघ्र ही मोक्षपद को प्राप्त करने वाले होते हैं। जब तक अपने अन्दर 'अहं' भाव रहता है तब तक अपने हृदय में ना गुरु के वचन प्रवेश होंगे ना प्रभु के वचन प्रवेश होंगे। भाव से किया गया एक भी नमस्कार संसार

रूप सागर से तिरा देता है।

नमो का उलटा शब्द होता है मोन। मान समयक्त्व का पर्यायवाची शब्द है। मौन से आत्मशुद्धि एवं आत्मशक्ति बढ़ती है। मौन से कितने ही सावद्य पापों से बच सकते हैं।

त-तत्व :- जगत का मूल है तत्व। जो उत्पन्न होता है, नाश होता है और स्थिर रहता है उसे तत्व कहते हैं। जैसे- अभी हम मनुष्य रूप में उत्पन्न हुए , मरकर जहाँ जाएंगे वहाँ मनुष्य का नाश हो जाएगा, नया जन्म होगा और आत्मा तो स्थिर रहती है, आत्मा नहीं बदलती है। गणधर भगवंतों ने 'उप्पन्नेइवा विगमेइ वा धुवेइ वा' इन तीन पदों यानी त्रिपदी के आधार पर दादशांगी (12 शास्त्र) की रचना की। प्रभु ने 'नौ तत्व' बताए हैं। प्रभु की पूजा भी नौ अंग की होती है क्योंकि प्रभु ने नौतत्व का उपदेश दिया । 9 तत्व का नाम इस प्रकार है (1) जीव (2) अजीव (3) पुण्य (4) पाप (5) बंध (6) आश्रव (7) संवर (8) निर्जरा (9) मोक्ष। इन नौ तत्त्वों में से जो तत्व छोड़ने योग्य हैं उसे छोड़ देता है, जो तत्व जानने योग्य हैं उसे अच्छी तरह से जान लेता है। और जो तत्व स्वीकारने योग्य हैं उनको श्रद्धा से स्वीकार लेता है वह सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व पूर्वक की गयी सारी क्रिया निर्जरारूप होती है जो तत्वज्ञाता होता है वह सारे विश्व के स्वरूप को जानता है।

थराद :- यह एक धर्मनगरी है। जहाँ से लगभग 100 से अधिक दीक्षाएँ हुईं। गुरुदेव श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की यह कर्मभूमि है। उन्होंने स्कूल का एवं धार्मिक अध्ययन यहाँ पर किया था। यह एक ऐसी नगरी है जहाँ पर सैंकड़ों वर्षों से त्रिस्तुतिक परंपरा चल रही है। यहाँ पर लगभग 5000 से अधिक घर हैं जो अभी अहमदाबाद, सूरत, मुंबई आदि स्थानों में रहते हैं। यहाँ 10 भव्य जिनालय हैं। इस भूमि को लघु कश्मीर का विरुद मिला है यहाँ पर श्री राजेन्द्रसूरि, श्री यतीन्द्रसूरि, श्री जयंतसेनसूरि आदि पूज्याचार्य भगवंतों का चातुर्मास हुआ। राजेन्द्रसूरि गुरुदेव ने थराद से पालिताणा का पैदल संघ निकाला था। यहाँ पर मुख्य मंदिर मोटा महावीर का है। यह थिरपुर नगरी भी कहलाती है। थराद के राजा थिरपाल धरू थे।

◆◆◆

हमारी पसंदगी की सज्झाय

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

(लेखांक -2)

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती को अपने रूप पर गर्व था। एक बार उसकी प्रशंसा सुनकर इंद्र ने अपनी सभा में सनत्कुमार के रूप की प्रशंसा की। दो देवों को ईर्ष्या हुई। वे उसके रूप को देखने के लिए ब्राह्मण के वेश में आए। उस समय चक्रवर्ती स्नानागार में स्नान कर रहा था। उसका रूप देखकर देव आश्चर्यचकित हो गए। तब चक्रवर्ती कहता है कि मेरा वास्तविक रूप देखना है तो राजसभा आना जब मैं वस्त्रालंकारादि पहनकर तैयार हो जाऊं..। छः खंड के स्वामी, अढ़लक धन सम्पत्ति के स्वामी ऐसे सनत्कुमार चक्रवर्ती सर्वश्रेष्ठ रत्नजड़ित मुकुटादि अलंकार धारण करके राजसभा में आते हैं। उस समय देव उनका रूप देखकर मुँह बिगाड़ते हैं। चक्रवर्ती बोलते हैं क्यों ?? क्या हुआ ?? मुँह क्यों बिगाड़ रहे हो? तब देव ने कहा- आपके शरीर के अंदर 16 महारोग फैल गए हैं। अगर आपको विश्वास नहीं है तो आप पीकदानी में थूंक के देखो। सनत्कुसार के देखा तो बहुत सारे कीड़े दिखे। तब चक्रवर्ती चिंतन करता है कि बाहर के शरीर को देखकर मैं मोहित हो रहा था लेकिन वास्तव में तो यह शरीर गंदगी का ढेर है, गटर है। जैसे गटर खुली हो तो उसके पास में कोई खड़ा रहना पसंद नहीं करता है। वैसे ही शरीर को अंदर से खोलने पर एक भी बच्चा उसके पास खड़ा नहीं रहेगा ऐसे शरीर पर क्या मोह रखना ? क्या आसक्ति करना ? इस प्रकार भावना भाने से चक्रवर्ती को वैराग्य भाव आ जाता है। दीक्षा ग्रहण करता है। इसी शरीर में आसक्ति करने से कितने ही महात्माओं ने भवभ्रमण बढ़ाया।

लाड़ी, वाड़ी, गाड़ी, पाछल जीवन चाल्यु जाए...

बेटे-बहु, महल-बगीचा, गाड़ियाँ सबको इकट्ठा करते हैं और यह सब मेरे हैं, यह गाड़ी मेरी है, यह बंगला मेरा है, यह संपत्ति मेरी है, यह पत्नी-पुत्र आदि मेरे इस प्रकार ममत्व भाव बन्द न हो तब तक संसार का कोई भी पदार्थ हमें सुखी-दुःखी नहीं कर सकता है। हम ही अपने मन के अनुकूल पदार्थ में सुख मानते हैं और प्रतिकूल पदार्थ में दुःख मानते हैं। सुख-दुःख काल्पनिक हैं। फिर क्यों जड़ पदार्थ में आसक्ति रखना, जड़ पदार्थ के कारण सुखी-दुखी होना ? ज्ञानी भगवंत कहते-जड़ पदार्थ में आसक्ति करना यह आर्तध्यान है और आर्तध्यान तिर्यंच गति का कारण है। कहते हैं- 'जहाँ आसक्ति वहाँ उत्पत्ति।'

(क्रमशः)

◆◆◆

'श्रावक का मुख्य कर्त्तव्य 'आणाए धम्मो'

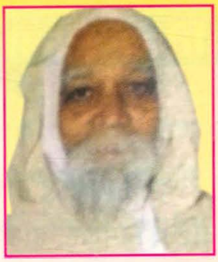

(संकलन- मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

श्री जिनेश्वर प्रभु की आज्ञा का यथार्थ पालन करना यह श्रावक का मुख्य कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य का पालन मनुष्य को इस लोक में सुख और शांति देने वाला है और परलोक में स्वर्ग और परम्परा से शाश्वत सुख देने वाला है।

अनादि काल से संसार समुद्र में भ्रमणा करते जीव को प्रथम तो मानव जन्म, आर्य देश, उत्तम कुल, जाति, सुरूप, दीर्घ आयुष्य और सर्वांग संपूर्ण देह आदि सब सामग्री प्राप्त होनी दुर्लभ है। इसमें सर्वथा कथित जैनधर्म प्राप्त होना अति दुर्लभ है जैसे कि पुण्यहीन प्राणी को चिंतामणि रत्न प्राप्त होना कठिन है।

इसलिए जब महाभाग्य के उदय से यह सब प्राप्त हो जावे तब इस जीवन को हर तरह से सफल बनाना हरेक का कर्त्तव्य है। इस सफलता का एक मात्र उपाय धर्म का पालन याने जिनेश्वर प्रभु की आज्ञा का यथार्थ पालन है। ◆◆◆

भूल से दुखी हैं हम

मानव भौतिकता से संत्रस्त भौतिकता में ही शांत की खोज कर रहा है। जहां जो वस्तु है ही नहीं वह प्राप्त कैसे हो सकती है। बाहर के भौतिक साधनों में सुख नहीं है। सुख तो अपने ही भीतर है। आनंद का स्त्रोत, शांति का भंडार एक अपनी आत्मा ही है। सब कुछ प्राप्त करने के बाद भी अगर मनुष्य कुछ प्राप्त नहीं कर पाता तो वह है शांति। शांति का स्त्रोत भले ही सबसे निकट हो पर उसकी जानकारी के अभाव में मानव मृग-मरीचिका में भटक रहा। अगर यह ज्ञान हो जाये कि अपनी ही आत्मा में आनंद का भंडार दबा हुआ है तो जीवात्मा शांति के लिए भौतिक जगत की ओर नहीं भागेगा अपितु अपनी ओर झुकेगा।

क्षण भर की बाहर की दौड़ से रुकेगा। जीवन मात्र के अंदर आनंद के अपार स्त्रोत विद्यमान हैं पर मिथ्या-अवधारणाओं के कारण वह बाहर में आनंद की खोज कर रहा है। पत्नी, बच्चे परिवार और भौतिक संसाधनों में वह आनंद, सुख, शांति खोज कर रहा है जबकि वहां किंचित भी सुख शांति नहीं है। सारे स्त्रोत स्वयं के भीतर हैं। इस जीवन ने सारी यात्राएँ कर ली हैं, एकमात्र अपने भीतर की ही यात्रा नहीं की है, अगर वह एक बार भीतर की यात्रा कर लेता तो बाहर की सारी यात्राएँ थम जाती।

निरर्थक भटकन से विश्रांति मिल जाती। अगर हमें सुख, शांति की चाहना है तो अपने आत्म तत्व पर दृष्टि देनी ही होगी इसके अलावा कोई रास्ता नहीं। व्यसन मुक्त और सदाचारी व्यक्ति ही आनंद और अद्भुत शांतिका अनुभव कर सकता है। अतः सच्चरित्र बनने का पुरुषार्थ अत्यन्त आवश्यक है।

अतिथि रचना

निर्मल दृष्टि

(आचार्यश्री विद्यासागरजी)

दर्शन विशुद्धि मात्र सम्यक दर्शन ही है। दृष्टि में निर्मलता होना दर्शन विशुद्धि है और दृष्टि में निर्मलता आती है तत्व चिंतन से। कार्य से कारण की महत्ता अधिक है। क्योंकि यदि कारण न हो तो कार्य निष्पन्न नहीं होगा। फूल न हो तो फल की प्राप्ति नहीं होगी।

कुछ लोग ऐसे भगवान की कल्पना करते हैं जो उनकी सब इच्छाओं की पूर्ति करे। 'खुदा महरबान तो गधा पहलवान' ऐसा लोग कहते हैं। इसलिए महावीर को बहुत से लोग भगवान मानने को तैयार नहीं। किन्तु सत्य तथ्य ये है कि भगवान बनने के पहले तो शुभाशुभ कार्य किए जा सकते हैं, भगवान बनने के बाद नहीं। भगवान महावीर जब पूर्व जीवन में नंदराज चक्रवर्ती थे, तब उनको एक विकल्प हुआ कि 'मैं संपूर्ण प्राणियों का कल्याण करूं' और इसी विकल्प के फलस्वरूप उन्हें तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ। कल्याण करने के लिए भी बंधन स्वीकार करना पड़ा। ये बंधन चेष्टापूर्वक किया जाता है और इस बंधन के पश्चात मुक्ति होती है। यदि मां केवल अपनी ही ओर देखे तो बच्चों का पालन करना संभव नहीं होगा।

'पर' के कल्याण में भी 'स्व' कल्याण निहित है। यह बात दूसरी है कि फिर दूसरे का कल्याण हो अथवा न भी हो। किसान की भावना यही रहती है कि 'वृष्टि समय पर हुआ करे' और वृष्टि तो जब भी होगी सभी के खेतों पर होगी किन्तु जब किसान फसल काटता है तो अपनी ही काटता है, किसी दूसरे की नहीं। अर्थात कल्याण सबका चाहता है किन्तु पूर्ति अपने ही स्वार्थ की करता है। दर्शन विशुद्धि मात्र सम्यग्दर्शन नहीं है। दृष्टि में निर्मलता का होना दर्शन-विशुद्धि है और दृष्टि में निर्मलता आती है तत्व चिंतन से । हमारी दृष्टि बड़ी दोषपूर्ण है। हम देखते तो अनेक वस्तुएं हैं किन्तु उन्हें हम साफ नहीं देख पाते। हमारी आंखों पर किसी न किसी रंग का चश्मा लगा हुआ है। प्रकाश का रंग कैसा है ? आप बतायें। क्या लाल है? क्या हरा या पीला है? नहीं प्रकाश का कोई वर्ण नहीं। वह तो वर्णातीत है, किन्तु विभिन्न रंग वाले कांच के संपर्क से हम उस प्रकाश को लाल, पीला या हरा कहते हैं,

इसी प्रकार हमारा स्वरूप क्या है? 'अवर्णोंह' मेरा कोई वर्ण नहीं 'अरसोहं' मुझ में कोई रस नहीं, 'अस्पर्शोंह' मुझे छुआ नहीं जा सकता। यह मेरा स्वरूप है। किन्तु इस स्वरूप को आप पहचान हीं पाते। यही है हमारी दृष्टि का दोष। हम पदार्थों में इष्ट-अनिष्ट की धारणा बनाते हैं। कुछ पदार्थों को इष्ट मानते है, जिन्हें हम हितकारी समझते हैं। कुछ पदार्थों को अनिष्ठ मानते हैं, अहितकारी समझते हैं पर वास्तव में कोई पदार्थ न इष्ट है और न अनिष्ट है। इष्ट- अनिष्ट की कल्पना भी हमारी दृष्टि का दोष है। इसी प्रकार जैनाचार्यों ने बताया है कि आत्मा भिन्न है और शरीर भिन्न। ऊपर का आवरण ये शरीर केवल एक छिलके के समान है यह उन्होंने अनुभव द्वारा बताया है किन्तु हम अनुभव की बात भी नहीं मानते।

हमारी स्थिति बच्चे जैसी है। दीपक जलता है तो बच्चे को यह समझाया जाता है कि इसे छूना नहीं। उसे दीपक से बचाने की चेष्टा की जाती है किन्तु फिर भी वह बच्चा उस दीपक पर हाथ रख ही देता है तो फिर वह उस दीपक के पास अपना हाथ नहीं ले जाता। हमारी दृष्टि का परिमार्जन तभी समझा जाएगा, जब हम प्रत्येक वस्तु को उसे असली रूप में देखें, समझें।

यह दर्शन विशुद्धि लाखों-करोड़ों में से एक को होती है, किन्तु होगी ये विशुद्धि केवल मंद-कषाय में ही। शास्त्रीय भाषा में दर्शन-विशुद्धि चौथे गुणस्थान से आठवें गुणस्थान के प्रथम भाग तक हो सकती है। सद्गृहस्थ की अवस्था से लेकर उत्कृष्ट मुनि की अवस्था तक यह विशुद्धि होती है। श्रेणी में भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता है किन्तु होगा मंद-कषाय के सद्भाव में । दूसरे के कल्याण की भावना का विकल्प जब होगा, तब बंध होगा। तीर्थंकर प्रकृति एक निकाचित बंध है जो मोक्ष ही ले जाएगा।

मृत्यु की मृत्यु

अब हम अमर भये न मरेंगे, अब.
या कारण मिथ्यात दीयो तज, क्युं कर देह धरेंगे। अब. 1
राग दोस जग बंध करत है, इनको नास करेंगे,
मर्यो अनंत कालतें प्रानी, सो हम काल हरेंगे। अब. 2
देह विनाशी हुं अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे,
नासी जासी हम थिर वासी, चोखे व्है निखरेंगे। अब. 3
मर्यो अनंतवार बिन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे,
आनंदघन निपट निकट अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेंगे। अब. 4

ज्ञान और आनन्द के महत्व को रेखांकित करती है दीपावली

प्रो. डॉ. वीरसागर जैन

दीपावली का मूल सन्देश है कि जिस जीवन में ज्ञान और आनन्द है, वही जीवन वास्तविक जीवन है, उत्तम जीवन है। तथा जीवन में ज्ञान और आनन्द नहीं, वह जीवन-जीवन नहीं, मरण है। ऐसा व्यक्ति तो चलता-फिरता शव है।

अतः अपने और दूसरों के जीवन में से अज्ञान एवं दुःख को दूर करना और ज्ञान एवं आनन्द को प्राप्त करना-कराना ही सही अर्थों में दीपावली मनाना है।

यद्यपि हम सभी जानते और कहते तो रहते हैं कि जीवन में ज्ञान और आनन्द का बड़ा महत्व है, परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि हमारे जीवन में ज्ञान और आनन्द की बहुत उपेक्षा होती रहती है। हम हर छोटी से छोटी चीज का महत्व/ मूल्य समझ लेते हैं, उनकी हानि नहीं होने देते हैं पर ज्ञान और आनन्द को जीवन में सर्वोपरि नहीं रख पाते। तभी तो ज्ञानाराधना छोड़कर जड़ भौतिक पदार्थों के चक्कर में उलझ जाया करते हैं और इसी तरह अपने आनन्द स्वभाव को भूलकर व्यर्थ की छोटी-छोटी बात पर दुःख मनाने लग जाते हैं। दीपावली हमें पुनः पुनः याद दिलाने आती है कि जीवन में ज्ञान और आनन्द का महत्व समझो। जीवन रोटी-कपड़ा, सोना-चांदी, नौकर-चाकर से नहीं संवरता, ज्ञान से संवरता है, ज्ञान से पवित्र विश्व में अन्य कुछ भी नहीं है- **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' (गीता)।**

ज्ञान की तरह आनन्द भी जीवन का एक बड़ा भारी मूल्य है। दीपावली हमें कहती है कि सदा आनन्दित रहो, कभी दुःखी मत होओ चाहे कुछ भी हो जाए आनन्द तुम्हारा स्वभाव है।

खेद, ताप, संताप, तनाव, शोक, चिन्ता, भय आदि सब दुःख के ही विविध प्रकार हैं और तुम इन सबसे ऊपर उठकर सदैव आनन्द की आराधना में लगे रहो, इस प्रकार दीपावली ज्ञान और आनन्द के महत्व को ही रेखांकित करने वाला महापर्व है। काश, हम सब इस संदेश को भलीभांति सुनें-समझें। ◆◆◆

भगवान ऋषभ और अयोध्या

श्री जी.डी. तपास

हमारे देश की सांस्कृतिक परम्परा अत्यंत प्राचीन है। इस परम्परा का आदि काल की परिधि में निश्चित करना संभव नहीं है। जो दो प्रमुख विचारधाराएं हमारी संस्कृति को प्रभावित करती रही हैं उन्हें वैदिक और श्रमण परम्पराओं के नाम से जाना जाता है। वैदिक परम्परा प्रवृत्ति मूलक और श्रमण परम्परा निवृत्ति प्रधान मुख्यतया है। प्रवृत्ति और निवृत्ति, अथवा भोग और त्याग, मानव की सहज प्रवृत्तियां हैं। अतः इन प्रवृत्तियों के आधार से जो चिन्तन परम्परायें विकसित हुई हैं वे मानवीय संस्कृति के प्रवाह में प्रायः एक साथ ही प्रस्फुटित हुईं, ऐसा मानना समीचीन प्रतीत होता है।

श्रमण परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में वर्तमान में जैन धर्म प्रमुख रूप से विद्यमान है। जैन धर्म में मान्य तिरेसठ (63) शलाका पुरुषों में प्रमुख स्थान चौबीस तीर्थंकरों का है जिन्होंने वर्तमान कालचक्र में सभ्यता के प्रारम्भ से समय-समय पर जीवधारियों को आत्मकल्याण का मार्ग दिखाया। इनमें सर्वप्रथम ऋषभनाथ थे और अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। जैन परम्परा के अनुसार आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ ने सभ्यता का प्रवर्तन किया था। उन्होंने ही सर्वप्रथम मनुष्यों को शस्त्र विद्या, लेखन विद्या, कृषि, शिल्प और वाणिज्य की शिक्षा दी थी तथा समाज व्यवस्था एवं राज्य व्यवस्था की स्थापना की थी। उन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा, ऐसी भी जैन परम्परा में मान्यता है। भारत की आदि लिपि ब्राह्मी का नामकरण भी ऋषभ की पुत्री ब्राह्मी के नाम पर हुआ माना जाता है।

ऋषभ नाम से महापुरुष का स्मरण जैनेतर आर्ष साहित्य में भी बहुधा मिला है जो यह सूचित करता है कि भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठापक चिन्तक मनीषियों में ऋषभ का एक महत्वपूर्ण सर्वमान्य स्थान था। ऋषभ से सम्बन्धित जैन पौराणिक अनुश्रुति और वैदिक पौराणिक अनुश्रुति ऐतिहासिक दृष्टि से उनका काल निर्णय करने में हमें सहायता नहीं देती। उनसे इतना ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस महापुरुष का आविर्भाव सुदूर अतीत में हुआ था और वे भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के प्रतिष्ठापकों में से थे। भगवान ऋषभ का जन्म अयोध्या में हुआ था। उनके उपरान्त चार अन्य तीर्थंकरों का जन्म भी इसी नगर में हुआ

था। हिन्दू मतानुसार विष्णु के अवतार भगवान राम जो जैन परम्परा के भी एक शलाका पुरुष हैं, की जन्म-भूमि एवं लीला-भूमि भी यही नगर रहा है। इस प्रकार इस अयोध्या नगर का भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में एक विशिष्ट स्थान है। जैनों की पौराणिक अनुश्रुति में यह 'आदि नगर' के रूप में मान्य है। वैष्णव परम्परा में भी इसे देव-निर्मित बताया गया है। बौद्ध परम्परा में इसे स्वयं आगत बताया गया है, और मध्ययुग में मुसलमानों ने भी इसे मक्का का नाम दिया है। विभिन्न परम्पराओं में इस नगर का उल्लेख और उन सभी का इस नगर को अपनी परम्परा से सम्बद्ध करने का प्रयास यह सूचित करता है कि भारत के धार्मिक जीवन से इस नगर का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ रहा है।

भगवान ऋषभ की चिन्तन परम्परा का भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है। जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति मनुष्य की अन्तः प्रवृत्ति को जागृत करने का जो अभियान उन्होंने मानव सभ्यता के आदि काल में चलाया था वह आज भी उतना ही उपादेय है जितना कि तब था जबकि उन्होंने उसका प्रवर्तन किया था। उनकी चिन्तन परम्परा का मूल आधार अहिंसा और सहिष्णुता थे। अहिंसा हमें दूसरों के दुखों के प्रति संवेदना की अनुभूति कराती है और हमें अपने व्यवहार को ऐसा बनाने के लिये प्रेरित करती है कि उससे दूसरों को क्लेश न हो। सहिष्णुता हमें दूसरों के विचारों को समझने और उनसे समझौता करने की प्रेरणा देती है। अहिंसा और सहिष्णुता केवल धार्मिक सिद्धांत की वस्तु नहीं हैं वरन् वे व्यवहारिक पक्ष के मूलाधार हैं और हमें एक करुणाशील परोपकारी एवं सुसंस्कृत नागरिक बनाने के साधन है।

अहिंसा मनुष्य को भयरहित बनाने का एक अप्रतिम उपाय है और इसका वर्तमान काल में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल प्रयोग किया था। उनके सत्याग्रह आन्दोलन का आग्रह विशेष इसी बात पर था कि भारतीय जनमानस से सत्ता का भय निकल जाये और इसी का यह परिणाम था कि अंग्रेज भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित करने के लिये बाध्य हुए।

इस पावन अवसर पर मैं जैन समाज से तथा भारतीय समाज के सभी प्रबुद्ध वर्गों से यह अपेक्षा करना चाहूंगा कि भगवान ऋषभ की परम्परा को शाश्वत बनाये रखने के लिये हम सभी उनके द्वारा प्रणीत अहिंसा और सहिष्णुता के सिद्धान्तों को अपने आचरण और व्यवहार का मूल आधार बनायेंगे और जन-कल्याण के कार्यों में अधिकाधिक योग देंगे। ◆◆◆

अखण्ड अग्नि- अखण्ड दीपक

प्राचीनकाल में घर में, मंदिर में, उपासना स्थल आदि स्थानों पर अखण्ड अग्नि की स्थापना होती थी जिस प्रकार मंदिरों में भगवान की मूर्ति स्थापना करते समय, समय पर उसकी पूजा-अर्चना की क्रियाएं की जाती हैं और प्राण-प्रतिष्ठा के उपरांत उस मूर्ति को मंदिर में ही स्थापित रखना होता है, उसी प्रकार मंदिर आदि स्थानों पर अग्निरूपी देवप्रतिमा को निरंतर स्थापित रखने और देवार्चना करने का विधान होता था। पीढ़ी दर पीढ़ी यह अखण्ड अग्नि सुरक्षित रखी जाती थी। उसे बुझने न देने के लिये सभी लोग पूरा- पूरा ध्यान रखते थे। ये अग्नियां जिसके यहां जितनी पुरानी होती थी, वह अपने को उतना ही साधना का धनी समझता और और अपनी निष्ठा के अनुरूप प्रतिष्ठा प्राप्त करता था।

जिस प्रकार माता-पिता परिवार में अन्य कार्य करते हुए भी अपने नन्हें शिशु का सदा ध्यान रखते हैं और उसे सभी अनिष्टों से बचाते हुए पाल-पोसकर युवा बनाते हैं, उसी प्रकार अखण्ड अग्नि की सुरक्षा पर निरंतर ध्यान रखकर एक प्रकार से प्रभु चिंतन करने वाले योगी या मंदिर में पूजा करने वाले सच्चे पुजारी की भांति अपने मनःक्षेत्र में भगवान की प्रतिष्ठा किये रहता है। निरंतर नियमित रूप से उपासना की हुई अग्नि की सूक्ष्म आध्यात्मिक विशेषता दिन-दिन उसी प्रकार बढ़ती रहती है, जैसे पौष्टिक पदार्थों का सेवन करती हुई बालिका दिन-दिन विकसित होती हुई बलवती परिपुष्ट युवती बनती जाती है। उसी प्रकार अखण्ड अग्नि में विराजमान अग्नि भी प्रतिदिन घी, मेवा, मिष्ठान्न, हविष्यान्न तथा नाना प्रकार की गुणवान औषधियां खा-खाकर प्रचंड शक्ति सम्पन्न भवानी का साक्षात आकार ही बन जाती है। उसकी प्रभा से अनेक अनिष्ट, रोग नष्ट होते हैं।

जिस प्रकार सोने, चाँदी, हीरा, मोती आदि की भस्म अनेक रोगों को दूर करने में समर्थ होती है, उसी प्रकार अखण्ड अग्नि भी किसी बढ़िया से बढ़िया औषधि की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं होती। इसके उपयोग से जहाँ अनेक शारीरिक रोग दूर होते हैं, वहां उन्माद, मंद, बुद्धि, उत्तेजना, आवेश, कुबुद्धि आदि मानसिक रोगों का निवारण होता है। अनेक रोगों में भी अखण्ड अग्नि बड़ी उपयोगी सिद्ध

होती है। मस्तक पर अखण्ड अग्नि की राख का तिलक लगाने से आज्ञाचक्र, सहस्रकमल, ब्रह्मरंद्र, सुषुम्णा संस्थान आदि अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक केन्द्रों का विकास होता है। हृदय पर यज्ञभस्म को लगाने से सूर्यचक्र जाग्रत होता है और अंतःकरण चतुष्टय में से तामस तत्व घटते एवं सात्विक तत्व बढ़ते स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। लाठी चलाने वाले लोग अपनी लाठी को तेल में डुबो-डुबोकर मजबूत बनाते हैं। कहते हैं कि जो लाठी जितना तेल पी जाती है, वह उतनी ही मजबूत हो जाती है। घी-दूध में काम आने वाले मिट्टी के बरतन जितनी चिकनाई पी जाते हैं, उतने ही उपयोगी बन जाते हैं। अग्नि भी जितना घी पी लेती है, उतनी ही बलवान बन जाती है। इसलिये यह विधान मिलता है कि किसी को अग्नि प्रज्ज्वलित करना हो तो उसे किसी के यहाँ से चिर उपस्थित अग्नि लाकर उसे अपनी अखण्ड अग्नि प्रज्ज्वलित करना चाहिये।

नन्हें बालक और अधेड़ आयु के पुरुष में जो अंतर होता है, वही अंतर तुरन्त उत्पन्न की गई और चिरसेवित अग्नि में भी रहता है। बालक को दिया हुआ दान उतना फलप्रद नहीं होता, जितना वयोवृद्ध को, क्योंकि बच्चे की अपेक्ष वयोवृद्ध मनुष्य निश्चय ही दान के सद्पुयोग की जिम्मेदारी को अधिक अच्छी तरह समझता है। वह उस दानदाता का अधिक उपकार करने में समर्थ होता है। यही कारण है कि नित्य का साधारण काम ही नित्य प्रज्ज्वलित की हुई अग्नि में कर लिया जाता है, पर किन्हीं महान आयोजनों के लिये चिरसेवित अखण्ड अग्नि की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी अग्नि के मुख में दी हुई आहुति साधारण अग्नि की अपेक्षा अधिक सत्परिणाम उपस्थित करने में समर्थ होती है।

अब लोग आलस्य और अश्रद्धा के कारण अखण्ड अग्नि का महत्व भूल गये हैं और फास्फोरस, गंधक आदि दुर्गंधित अशुद्ध पदार्थों से बनी हुई दियासलाई से जलाई हुई अग्नि का उपयोग कर लेते हैं। प्राचीनकाल में लोग अरणिमंथन, सूर्यकांत मणि आदि के द्वारा अग्नि प्रज्ज्वलित करते थे। अखण्ड अग्नि की उपासना सनातन धर्म के अनुसार तो आवश्यक है।

अग्नि की भांति अखण्ड दीपक की भी महानता असाधारण है। शुद्ध घी से अखण्ड दीपक जलता रखने से एक प्रकार का घृत-हवन निरंतर अपने आप होता रहता है। ऐसा दीपक जिस स्थान पर प्रकाश करता है, वह स्थान एक नित्य

प्रकाशज्योति से प्रदीप्त रहता है। उसके निकट बैठकर की हुई उपासना विशेष फलवती होती है। यों तो सामान्य अनुष्ठानों के समय भी घृत का दीपक जलता रखा जाता है, पर विशेष अनुष्ठानों में तो उसे अखण्ड रखने की ही प्रतिष्ठा है। यह भी एक प्रकार से अखण्ड अग्नि की स्थापना ही नहीं, वरन उससे भी कुछ अधिक है, क्योंकि अखण्ड अग्नि तो विशेष अनुष्ठानों के समय ही प्रज्ज्वलित की जाती है, पर दीपक तो निरंतर प्रकाशवान रहकर उस वातावरण में दिव्यप्रकाश को भरता रहता है। दीपक में अहर्निश अग्नि होती है। अग्नि की अखण्डता में झंझट, खर्च और देखभाल, साज-संभाल कम है। दीपक को अखण्ड रखने से ये सभी बातें अधिक करनी पड़ती हैं, साथ ही उसी झंझट एवं खर्च के अनुपात से उसका महत्व भी अधिक है।

जन्म-सूतक के समय आने वाली अनिष्टकर आशंकाओं की निवृत्ति एवं सुरक्षा प्रसूतिगृह में 10 दिन अखण्ड अग्नि रखने से हो जाती है, पर किसी की मृत्यु हो जाने पर उस मृत्युस्थल पर अखण्ड दीपक ही जलाना पड़ता है क्योंकि मत्यु के समय उस मृत शरीर में से निकलते हुए शारीरिक रोग कीटाणु तथा मानसिक वेदना, पीड़ा, छटपटाहट, करुणा, मोह शोक आदि के प्रभाव को नष्ट करने में अखण्ड दीपक की विशेष शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। उसके बिना वह मृत-सूचक का स्थान शुद्ध नहीं हो पाता। ऐसी अशुद्धि वाले घरों में प्रायः भूतबाधा, दुःस्वप्न, मृगी, उन्माद, अपस्मार आदि रोग बने रहते हैं और उस घर में रहने वालों को शारीरिक एवं मानसिक उद्वेग अनुभव होते रहते हैं। पितृ शांति कर्मों में दीपक अनिवार्य होता है। यश, कीर्ति, अनुष्ठान, ब्रह्मभोज पाठशाला आदि में दीपक की आवश्यकता होती है। गंगा आदि नदियों के तट पर लोग दीपक जलाते हैं।

दीवाली तो दीपकों का त्यौहार है। व्यापक रूप से अखण्ड दीपक का त्यौहार मनाकर हम दरिद्रता की व्यापक शक्ति को घटाने एवं लक्ष्मी शक्ति का बल बढ़ाने का पुनीत आयोजन करते हैं। यह उद्देश्य मोमबत्ती या बिजली जलाकर प्रदान नहीं कर सकते। अखण्ड अग्नि और अखण्ड दीपक के लाभ अपरिमित हैं, उन्हें कोई भी व्यक्ति अनुभव कर सकता है।

– आत्मोद्धार

◆◆◆

जैन धर्म व श्रावक जीवन...।

श्रावक यानी जिनका जीवन श्रेष्ठ हो, श्रद्धा, विवेक, क्रिया से युक्त जिनका विचार व आचरण हो उन्हें श्रावक माना गया है। जिनेश्वर की आज्ञा में श्रद्धा व तद्नुरूप विवेकपूर्वक जो क्रिया करता हो वही श्रावक है। श्रावक का जीवन सहज ही धर्ममय होता है । सादगी, सदाचार, सेवा समता, समन्वय एवं सहिष्णुता जैसे गुणों से ओतप्रोत जीवन जीनेवाला व्यक्ति जैन धर्म की दृष्टि में श्रावक है। वर्तमान में प्रायः हमारे जीवन में अधिकतर व्याप्त है चंचलता, असंतोष, महत्वाकांक्षा, अहंकार एवं इन्द्रिय लोलुपता आदि इनसे छुटकारा पाकर ही श्रावक जीवन में प्रवेश पाया जा सकता है। क्रोधादि कषाय आत्मा के शत्रु हैं वैसे ही आवेश व उत्तेजना होगी तो विवेक का संतुलन डगमगा जायेगा, अतः सर्वप्रथम जीवन को स्वच्छ व स्थिर बनाना चाहिये तभी लक्ष्य की ओर प्रयास संभव है। आत्मा का अनुसंधान ही श्रावक का परम पुरूषार्थ है, आत्मा की अनुभूति में ही परम आनंद है।

आत्मा स्वभाव से शुद्ध दर्पण स्वरूप है, जो मात्र चैतन्य, ज्ञाता व दृष्टा है। आत्मा अरूपी है, हवा की तरह जो केवल अनुभवगम्य है। आत्मा के अभाव में शरीर मिट्टी के समान है, अतः आत्मा के अस्तित्व का ही मूल्य है, यद्यपि आत्मा देखी नहीं जा सकती वह दूध में मक्खन की तरह विद्यमान है, जिस प्रकार शरीर में रहा हुआ दर्द देखा नहीं जाता, मात्र महसूस किया जा सकता है। बिजली के तार में रहने वाला करन्ट दिखाई नहीं देता परन्तु उपयोग में लाया जा सकता है, ठीक इसी तरह आत्मा दिखाई नहीं देती परन्तु उपयोग में लायी जा सकती है, ठीक इसी तरह आत्मा शरीर की चेतना है, उसी चेतन शक्ति को कर्म रूपी पुद्गल के संयोग से मुक्त करना ही आत्म अनुसंधान का अंतिम लक्ष्य है। आत्मा अंतरंग का दीपक है, जिससे ज्ञान रूपी अखण्ड बत्ती है जिसे मात्र पुरूषार्थ से प्रज्ज्वलित किया जा सकता है, यही हमें करना है। जब प्रकाश हो जायेगा अज्ञानरूपी अंधकार स्वतः समाप्त हो जायेगा।

जगत में पुण्य व पाप रूपी द्रव्य निरंतर कार्य करते हैं जो पौदगलिक क्रिया है जिसमें मन व इन्द्रियां तब तक प्रभावित

होती रहती हैं जब तक आत्मा का उपयोग मन के माध्यम से बहिर्मुखी होता है। आत्मा और शरीर के बीच मनरूपी बर्तन है, जैसे बर्तन में रखा पानी अग्नि पर रखने से गर्म हो जाता है जबकि पानी का स्वभाव शीतलता है। यदि बीच में बर्तन न हो तो वही पानी गर्म होने के बजाय अग्नि को ठंडा कर दे । इसी प्रकार आत्मा व शरीर के बीच मन की चंचलता न हो तो आत्मा अपने स्वभाव में स्थिर होकर शाश्वत सुख शांति का अनुभव कर सकती है। परमात्मा आत्मा का ही विशुद्ध रूप है, परमात्मा की भक्ति स्वयं की आत्मशक्ति को प्रकट करने हेतु ही की जाती है। इसलिये जब ध्यान करना हो तो जगत में जीवों का ध्यान, मंदिर में परमात्मा का ध्यान व एकान्त में आत्मा का ध्यान करना चाहिये।

यदि कोई परमात्मा के ध्यान में लीन होकर परमात्मा स्वरूप का चिंतन करता है व परमात्मा से जानने का प्रयास करता है व पूछता है कि प्रभु मैं तो आपका ध्यान करता हूं, परन्तु आप किसका ध्यान कर रहे हैं ? तब परमात्मा करुणावश कहते हैं- मैं जगत के जीवों का, उनके पर्याय का नहीं, बल्कि जात का, मूल द्रव्य स्वरूप का जो तेरा मेरा एक समान है, मात्र विभावदशा के आवरण से तेरी अशुद्ध स्थिति बनी हुई है। जैसे खान में सोना व पत्थर एक साथ रहते हुए भी एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं यदि सोना एक बार शुद्ध कर दिया जाये तो सदा के लिये शुद्ध ही रहेगा, वैसे ही आत्मा यदि सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाये तो सदा के लिये विभावदशा से मुक्त होकर अपने स्वभाव में स्थिर हो जायेगी। यही आत्मा का स्वभाव धर्म है, यही शुद्ध आत्मा परमात्मा है।

जैन धर्म का मूल सर्वज्ञ है, सर्वज्ञ प्ररूपित धर्म व वस्तु स्वभाव का यथार्थ श्रद्धान करना ही परम पुरुषार्थ है, जो आत्म सिद्धि का हेतु है। सभी जीव जाति, स्वरूप व स्वभाव से एक समान हैं, परमात्म स्वरूप ही हैं, मात्र जड़ व चेतन का भेद ज्ञान होना व शुद्ध स्वरूप को पहचानना है, यही तत्व का सार है। यह भाव जागृत होना चाहिये कि मैं और मेरी आत्मा ही सदा शाश्वत है, जैसा कि व्यवहारिक भाषा में भी कहा जाता है- 'मेरा सो जावे नहीं, जावे सो मेरा नहीं' अतः आत्मा से परे जो कुछ भी है सभी पर पदार्थ है। व्यवहारिक क्षेत्र में धर्म वही है जो आत्मशांति व मन की प्रसन्नता प्रदान करें। जगत के व्यवहार में धर्म, लोकाचरण का सही मार्ग - दर्शक है, जो सदा सहिष्णुता एवं सहानुभूति का सही पाठ पढ़ता है।

जिससे सभी जीवों के साथ मैत्री एवं करुणा की भावना बनी रहे, इसी में सभी की प्रसन्नता निहित है।

ज्ञानी कहते हैं– जगत का परिचय सभी के लिये क्षणिक है, जगत जैसे चलता है चलता रहेगा, जगत के काम कभी कम न होंगे, मगर अफसोस तो यह होता है कि आखिर हम नहीं होंगे जगत का संचालन निश्चित, नियमित क्रमबद्ध व्यवस्था में आरोपित है जो स्वयंमेव सदा गतिशील रहता है तथा नियमित क्रम से जगत का वर्तमान भविष्य जो निश्चित है। जैसा सर्वज्ञ ने देखा है, वैसे ही होता है व होता रहेगा। जगत में द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव तद्नुरूप वस्तु स्वभाव, निमित्त, पुरूषार्थ, काल लब्धि व भवितव्यता (होनहार) स्वयंमेव पांचों समवाय क्रमबद्ध, व्यवस्था के अंतर्गत एकसाथ समाविष्ट हो जाते हैं, यही क्रमबद्ध पर्याय का शाश्वत सिद्धांत है जो प्रत्येक कार्य व कारण का मूलभूत आधार है। हमें यह जानना व मानना आवश्यक है कि कर्म का संयोग ही आत्मा के लिये संसार में परिभ्रमण का कारण है, संयोग में ही संसार के सुख-दुख निहित हैं जहाँ एक से अधिक वहाँ संघर्ष, आत्मा कर्म के संयोग से ही संसार में सुख-दुःख अनुभव करता है।

कर्म सत्ता प्रवृत्ति के नियमानुसार निश्चित न्याय करती है व यथावत फल देती है, सजा हो या मजा, सभी कर्माधीन है इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

सुख दियो सुख होत है, दुःख दीयो दुख होय।
आप न हणे ओरन को, अपन हणे न कोय।।

◆◆◆

चातुर्मास को सार्थक बनाने के लिए व्यक्तिशः कम से कम निम्नलिखित दृढ़ संकल्प होने चाहिए।

(1) प्रतिदिन एक सामायिक करना।
(2) नियमित प्रवचन सुनना।
(3) पखवाड़े में कम से कम एक उपवास का आयंबिल करना।
(4) निश्चित पृष्ठों का प्रतिदिन स्वाध्याय करना।
(5) विशेष तिथियों एवं पर्वों पर विशेष संयम एवं त्याग करना।
(6) रात्रि भोजन नहीं करना।
(7) कम से कम पक्खी का प्रतिक्रमण अवश्य करना।

निम्बाहेड़ा नगर में चातुर्मासार्थ बिराजमान

गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की सूरि मंत्र आराधना पर सादर समर्पित....

* स्तवन *

(राग-जब खिड़की खोलूं तो तेरा....)

शुभ घड़ियाँ शुभ अवसर, पावन दिन आया है।
गुरुदेव के दर्शन कर, मेरा मन हर्षाया है...गुरुदेव के दर्शन० ।।

माँ कंचन के नंदन, करते हम लख वंदन,
श्रद्धा से जो भी झूके, मिट जाते भव क्रन्दन,
सूरि आराधना के बाद, गुरु में तेज छाया है ।।गुरुदेव के०।।

अर्पण किया जयन्तसेन, गुरु चरणों में जीवन,
सतत् नम्रता रखकर, किया गुरु आज्ञा पालन,
वरिष्ठ मुनि वीररत्न, सिद्धरत्न को पाया है ।।गुरुदेव के०।।

मुनि विद्वद्रत्न और, प्रशमसेन है सुखकार,
साथ तारकरत्न का, निर्भयरत्न है हितकार,
सूरिमंत्र में तन तपा, मन कुन्दन बनाया है ।।गुरुदेव के०।।

सूरि मंत्र साधना में, लगे समोसरणधारी,
कलियुग में सतयुग सा, संयम बना भारी,
श्रेयकारी हेम गाये, देखो आनन्द छाया है ।।गुरुदेव के०।।

पारख परिवार देखो, चातुर्मास करा हर्षाया,
सूरिमंत्र लाभ मिला, 'रतन' मन आनन्द छाया,
'कवि शेरसिंह' के सिर पर, गुरु छत्र छाया है ।।गुरुदेव के०।।

रचनाकार-
'कवि शेरसिंह पारख'

शुभेच्छु

रतनसिंहजी, शेरसिंहजी, पारसमलजी, प्रकाशचन्द्रजी, दिलीपकुमारजी,
मनोजकुमारजी, ललितकुमारजी पक्षाल एवं मोक्ष एवं समसत पारख परिवार

ગુર્જર જૈન જયોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

પોતાનું દુઃખ

"એગો મય પચ્ચાણુહોઇ દુકખં"

(આત્માને એકલાં જ પોતાનું દુઃખ ભોગવવું પડે છે)

દુઃખ એ પોતે કરેલી ભૂલોનું એક અનિવાર્ય પરિણામ છે, જેને દરેક પ્રાણી ભોગવે છે. આપણા દુઃખમાં કોઈ ભાગ પડાવી શકતું નથી. ભલે કોઈ કેટલોયે ઘનિષ્ટ મિત્ર હોય, સંબંધી હોય, કુટુંબી હોય, પણ આપણા દુઃખમાં એ લોકો સહાનુભૂતિ પ્રગટ કરી શકે છે - સેવા કરી શકે છે - મદદ કરી શકે છે, પરંતુ આપણું દુઃખ તેઓ લઈ શકતા નથી - ભોગવી શકતા નથી. એમના સાંનિધ્યથી દુઃખનો વેગ ભલે કાંઈક ઓછો થાય, પણ એની વેદના તો આપણે જ ભોગવવી પડશે.

આ તો આ લોકની વાત છે, પરલોકમાં તો સેવા કે સહાયતા કરવાવાળું કોઈ નહીં મળે. જીવન પર્યંત જે કાંઇ શુભાશુભ કર્મો કરવામાં આવે છે તે આત્માની સાથો ચોંટતા જાય છે અને પરલોકમાં તેને અનુસાર સારાં કે નરસાં ફળ મળતાં રહે છે. ત્યાં આપણાં કરેલાં પાપોના પરિણામ સ્વરૂપ મળતાં સંકટોને પ્રતિકૂળતાઓને જીવ પોતે જ ભોગવે છે. માટે પાપોથી બચો.

યાદ રાખો, પાપી પોતાનું દુઃખ પોતે જ ભોગવે છે.

- સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૫/૨/૨૨

પારકી ચાદરની કરચલીઓ ગણવા માટે તો ઘણા બધા ઉત્સુક હોય છે!

આપણા સમાજમાં લોકોની રહેણીકરણી પર, સંશોધન કરવા જેવું છે. એમના વિચારો, એમની વાતો, એમનો સ્વભાવ, એમની આદતો, એમનો શોખ, એમના મિત્રો, એમના સંબંધો, એમની રોજિંદી દિનચર્યા, એમનું પારીવારિક જીવન, અને બાહ્ય જીવન વચ્ચેનો તફાવત વિગેરેનો છેક પાયામાંથી અભ્યાસ થવો જોઈએ. કોઈનો સ્વભાવો આવો જ છે તો તે આવો જ કેમ છે ? એની પાછળના કારણો શોધો ! એમની દરેક ટેવ-કુટેવ પાછળના કારણોજાણવા જોઈએ ! આ બધું ખરેખર ઈન્ટ્રેસ્ટિંગ છે. પણ એ સંશોધનનું કામ કરે કોણ ? સાવનવરો બેઠો હોય એ પણ કહેશે મારી પાસે સમય નથી ! તો આવું કામ કોને સોંપવું ? જેને આ કામમાં ઈન્ટ્રેસ્ટ હોય એને સમયના બંધનો નડતા નથી. એ પોતાની ચિક્કાર વ્યસ્તતામાંથી સમય ફાળવીને પણ કામ કરી શકે ! પણ આવા કામમાં ઈન્ટ્રેસ્ટ કોને હોય ? આ કામ એ જ માણસ કરી શકે જેને પોતાના પલંગની ચાદર બદલવાની ફુરસદ ન હોય ને બીજાના પલંગની ચાદરની કરચલીઓ ગણવા બેચેની પૂર્વક સતત કાર્યરત રહેતો હોય એને આ કામ સોંપી શકાય ? એવા માણસોની આપણા સમાજમાં ખોટ પણ નથી. પારકી ચાદરની કરચલીઓ ગણવા તો ઘણા બધા ઉત્સુક રહેતા હોય છે ! એમની પાસે પુષ્કળ નવરાશ પણ હોય છે ! લોકોની નિંદા-કુથલીમાં અને પારકી ચાદરની કરચલીઓ ગણવામાં જ સમય પસાર થઈ જતો હોય તો મારી પાસે સમય નથી એવું કહેવાનો એને અધિકાર છે !

મારી પાસે સમય નથી એવું વ્યસ્ત લોકોનાં મોઢે સાંભળી સાંભળીને નવરો માણસ પણ કહેતો હોય છે, મારી પાસે ટાઈમ નથી ! અલ્યા તારી આવી નકરી નવરાશમાં તને વળી ટાઈમની ખોટ ક્યારથી પડવા લાગી ? વેપાર ઉદ્યોગ સાથે સંકળાયેલા લોકો માટે માર્ચ એન્ડિંગનો સમય કટોકટીનો સમય હોય છે. એને તમે અન્ય કામ સોંપો તો એ કહેશે, હમણાં આ માર્ચ એન્ડિંગ પતી જવા દો. આ એમના માટે સાચું કારણ છે. માર્ચ એન્ડિંગમાં હિસાબો

સરખા કરવાના, લેવડદેવડનું પતાવવાનું નાણાંકીય વ્યવસ્થા સરખી કરવાની હોય છે. પણ ફ્રુટની લારી ફેરવતા ફેરિયા પાસે કે છુટક કામ કરનાર પાસે તમે ઉઘરાણી કરો તો એ પણ કહેશે - યાર શું તમેય - માર્ચ એન્ડિંગ ચાલે છે, તમને ખબર નથી ? હવે તમે આને શું જવાબ આપશો ? તમાચો મારી દેવાનું મન થતું હશે, પરંતુ તમારા સ્ટેટસ પર ઉઝરડા પડવાની બીકે તમે એને તમાચો નહિ મારી શકો ! બહુ બહુ તો મૌખિક જે કહેવાનું હશે તે જરાક ભાષા બદલીને વાત કરશો, જેની એના પર કોઈઅસર થવાની નથી. તમાચો મારો તો પણ એને નહિ, તમને અસર થશે. તમે વિચારતા થઈ જશો કે છૂટક મજૂરી કરનાર અથવા કોઈ ખાનગી ઓફિસમાં પટાવાળાની નોકરી કરનારને માર્ચ એન્ડિંગ સાથે શું નિસ્બત ? આ પ્રશ્ન, એ પ્રશ્ન જ રહેશે. જવાબ નહિ જડે ! જવાબ આપવાનો એની પાસે સમય નથી. પારકી ચાદરની કરચલીઓ એની નવરાશને ભરચક રાખે છે. સુશાંતસિંહ રાજપુતની આત્મહત્યા એના માટે કોયડો બની ગઈ છે. એ રોજ સુશાંતના સમાચાર વાંચે છે. પણ બધી અટકળો જ એના હાથમાં આવે છે. એ મૂંઝાય છે, સંજય લીલાભણશાળી, મહેશ ભટ્ટ તથા કરણ જોહરને સુશાંતની આત્મહત્યા સાથે શું લેવા દેવા છે, એ એને સમજાતું નથી. વચમાં એકાદવાર મીડિયાએ સલમાનખાનને પણ આ બાબતમાં ભેરવી દેવાનો પ્રયાસ કર્યો હતો. પણ યોગ્ય પ્રતિસાદ ન મળતા મીડિયાએ ફરી સલમાનનું નામ દોહરાવ્યું નહિ ! આપણે ત્યાં આત્મહત્યાની ક્યાં નવાઈ છે ? આત્મહત્યા એ આપણા દેશની રોજિંદી પ્રક્રિયામાંની એક પ્રક્રિયા છે. નેશનલ ક્રાઈમ રેકોર્ડ બ્યુરોનાં અહેવાલ અનુસાર ગયા વર્ષે એક જ વર્ષમાં બેતાલીસ હજાર ચારસો એંસી ખેડૂતો-ખેતમજૂરોએ આત્મહત્યા કરી, એમાં અન્ય ક્ષેત્રની આત્મહત્યાની ઘટનાનો ઉમેરો કરીએ તો એક લાખ ઓગણ ચાલીસ હજાર લોકોએ આત્મહત્યા કરીને જીવન ટૂંકાવ્યું ! આમ એક જ વર્ષમાં લગભગ દોઢ લાખ આત્મહત્યા અંગે કોઈએ પ્રશ્નો ઊભા કર્યા નથી ! તો એક માત્ર સુશાંતસિંહ રાજપુતની આત્મહત્યાને શા માટે આટલી બધી ગુંથવા અને ચગાવવામાં આવે છે ? સુશાંત ફિલ્મ એક્ટર હોવાથી સેલીબ્રિટિમાં એની ગણના થતી હોય તે પણ પ્રશ્ન રહે છે કે સેલીબ્રિટી જ માણસની ગણનામાં આવે ? ખેડૂતો અને અન્ય લોકો શું માનવી નથી ? એમના મૃત્યુથી એના પરિવારને દુઃખ

નહિ થતું હોય ?

નવરાશ, એ અટકળોની જનેતા છે. નવરાશનાં પેટે અટકળો જન્મે છે. એ ઉપરાંત નવરાશને અનેક ન જોઈતા પ્રશ્નો અંગે ચિતિંત રહેવું પડે છે. સરકાર રેલવેનું ખાનગીકરણ કરશે, એ અંગે નવરા લોકોમાં ચિંતાનો વિષય બને છે. અલ્યા રેલ્વેના ખાનગીકરણથી તારા બાપનું શું લૂંટાઇ જવાનું હતું ? અત્યારે તું ટિકિટ વગર મુસાફરી કરે છે ને ખાનગીકરણમાં ટીકીટ લેવી પડશે. એની ચિંતા તને પજવે છે ? છે શું ? રેલ્વેના ખાનગીકરણમાં તું શેનો આટલો ઊંચો નીચો થયા કરે છે ? ભલભલી જાહેર મિલ્કતો વેચાઇ ગઈ હોય ત્યાં એક રેલ્વેનું ખાનગીકરણ થાય એમાં આટલો બધો ઉહાપોહ શા માટે ?

આવા ઘણાં બધા મુદ્દાઓમાં મન અટવાયું હોય તો એની નવરાશમાંથી કઇ રીતે સમય ફાળવી શકે ? વડાપ્રધાન મોદીની દાઢી વધી ગઈ છે કે વધારવામાં આવી છે, એ જે હોય તે, એની સાથે આપણે શી લેવા દેવા ? પણ નવરા માણસને મોદીની આ દાઢી પજવે છે. મોદીએ શા માટે દાઢી વધારવા માંડી છે ? એ શું કરવા ઇચ્છે છે ? દાઢી વધારવા પાછળ એમનો શો ઈરાદો છે ? હવે એને કોણ સમજાવે કે, મોદીની દાઢી એ કોઇ રાષ્ટ્રીય પ્રશ્ન નથી. એ એમની અંગત બાબત મોદીજીની દાઢી પરથી એનું મન ભૂલથી લપસી જાય તો સીધો જઈને કોંગ્રેસના આંગણે ઊભો થઇ જાય છે ને મિત્રો સમક્ષ હૈયાવરાળ ઠાલવતા કહેવા માંડશે, આ કોંગ્રેસને થયું છે શું ? કોંગ્રેસના વચગાળાના પ્રમુખ પર નિભાવી લેવાને બદલે કાયમી પ્રમુખની નિયુક્તિ કેમ થતી નથી ? આ સાથે બીજા બે પ્રશ્નો આપમેળે જોડાઇ જાય છે. પ્રમુખની નિયુક્તિ ક્યારે થશે અને કોણ નિયુક્ત થશે ?

આ બધા પ્રશ્નો વૈચારિક ભૂમિમાંથી પેદા થતાં હોય તો કંઈ પડઘો પડે. પણ નવરા માણસનાં તુક્કાની કોણ પરવા કરે પણ એવું એ પોતે સમજતો નથી. એ સાવ નવરો છે. કંઇ કહેતા કંઈ જ કામ એ કરતો નથી. એની પાસે વપલુષ્કળ નવરાશ છે. પણ આવા બધા ન જોઇતા પ્રશ્નોના કારણે એની નવરાશને પણ નવરાશ મળતી નથી. એને કોઈ કામ ચીંધો તો તરત એ કહી દેશે, ના મને હમણાં સમય નથી ?

– ખલીલ ધનતેજવી (સાભાર : ગુજરાત સમાચાર)

સારા સંબંધો વગર સુખની અનુભુતિ શક્ય જ નથી !

કોઈ તમને પૂછે કે તમારી લાઈફની પ્રાયોરીટી શું છે, તો તમે શું જવાબ આપો ? જિંદગીમાં કંઈક હાંસલ કરવું ? ધનવાન થવું ? કરિયરમાં ટોપ ઉપર પહોંચવું ? બધાં ઓળખે એવી સેલિબ્રિટી બનવું ? કોઈ મોટો એવોર્ડ મેળવવો ? હા, આમાંથી કોઈ પણ હોઈ શકે છે ! કંઈ ખોટું નથી ! મહત્વાકાંક્ષા હોવી સારી વાત છે ? સવાલ એ છે કે, સફળ થઈ ગયા પછી કે ધનવાન બની યા પછી શું ? એનાથી સુખી થઈ જવાય ? એનો જવાબ છે, ના ! સુખી માત્રને માત્ર સારા, સ્વસ્થ અને સજીવન સંબંધોથી જ થવાય છે ! આ વાત કોઈ કલ્પના પર આધારિત નથી, પણ સતત પંચોતેર વર્ષથી ચાલતા અભ્યાસ બાદ એ વાત બહાર આવી છે કે, સંબંધો વગર સાચા સુખની અનુભૂતિ થતી જ નથી ! ઘણા લોકો એવું કહે છે કે, રૂપિયા હોય, સત્તા હોય અને માન-મરતબો હોય તો લોકો સામે ચાલીને સંબંધ બાંધવા અને સંબંધ રાખવા આવે છે ! હા, આવું થતું હોય છે, પરંતુ એ સંબંધ સાચા હોતા નથી ! સાચા સંબંધ તો એ છે કે, તમારી આર્થિક, સામાજિક કે માનસિક પરિસ્થિતિ ગમે તેવી હોય, તમારા લોકો તમારી સાથે જ હોય !

આપણી કોઈને ચિંતા હોય તો એ બહુ મોટી વાત છે. ઘરે કોઈ રાહ જોતું હોય, છીંક આવે ત્યારે કોઈ ખમ્મા કહેવાવાળું હોય, તમે જમ્યા કે નહીં એની ચિંતા કરવાવાળું હોય, કંઈ સારું કરો તો પીઠ થાબડવાવાળું હોય, નિષ્ફળતા વખતે સધિયારો આપનારું હોય, મજામાં હોવ ત્યારે સાથે કોઈ હસવાવાળું હોય, ડિસ્ટર્બ હો ત્યારે મજામાં લાવવાનો પ્રયાસ કરનારું હોય, બિમાર પડીએ ત્યારે કેર કરનારું હોય, તમારા મૂડની જેને ખબર પડી જતી હોય અને એકલું ન લાગવા દે એવું કોઈ હોય તો તમે દુનિયાના સૌથી નસીબદાર માણસ છો. આવું ક્યારે બને ? જ્યારે આપણા એની સાથેના સંબંધો સો ટચના હોય ! આપણી પાસે બધું જ હોય, પણ જો સંબંધો સારા ન હોય તો એક સમયે જિંદગીનો કોઈ અર્થ લાગતો નથી.

અમેરિકામાં ૧૯૩૮થી આજના દિવસ સુધી ચાલેલા અને હજુ પણ ચાલનારા એક અભ્યાસમાં એવું બહાર આવ્યું છે કે, સારી લાઈફ સારા સંબંધોથી જ શક્ય બને છે. અમેરિકાની હાર્વર્ડ મેડિકલ સ્કૂલમાં ફરજ બજાવતા વિશ્વ પ્રસિદ્ધ સાઈકિયાટ્રિસ્ટ રોબર્ટ જે. વાલ્ડીંગર તેના ગ્રાન્ટ સ્ટડીના ફાઈન્ડિંગ્સ પછી કહે છે કે,

સંબંધો જ જિંદગીને જીવવા જેવી બનાવે છે. ૬૯ વર્ષના રોબર્ટ વાલ્ડરિંગ ૭૫ વર્ષથી ચાલતા અભ્યાસના ચોથા હેડ છે. સુખની અનુભૂતિ વિશે ૭૨૪ લોકો ઉપર સાડા સાત દાયકાથી અભ્યાસ થઈ રહ્યો હતો. આ રિસર્ચમાં જોડાયેલા લોકોમાંથી અડધાથી વધુ લોકો હજુ જીવે છે. હવે તો મોટા ભાગના લોકોની ઉંમર ૯૦ વર્ષ જેટલી થઈ ગઈ છે.

રિસર્ચની ડિટેઈલમાં પડવા કરતાં એ બધાંની લાઈફનો જે નિચોડ છે એ જાણવો મહત્વનો છે. આ લોકોમાંથી ઘણાએ યુવાનીમાં એવું કહ્યું હતું કે, એમની લાઈફનો ઉદ્દેશ ધનવાન અને પ્રસિદ્ધ થવાનો હતો. ધીમે ધીમે એ લોકોએ જ કહ્યું કે, નાણાંવાળા કે જાણીતાં થઈ જવાથી સુખ મળતું નથી, સાચું સુખ તમારા સંબંધોથી મળે છે. તમારા લોકોથી મળે છે. મોટી ઉંમરના લોકોની મેન્ટલ અને ફિઝિકલ હેલ્થની તપાસ દરમિયાન પણ એ વાત બહાર આવી હતી કે, જો તમારા સંબંધો સારા હોય તો તમારી હેલ્થ પણ સારી રહે છે, યાદશક્તિ પણ ટકી રહે છે અને જિજીવિષા પણ જળવાઈ રહે છે. સંબંધો જીવવાનું કારણ પૂરું પાડે છે.

આ અભ્યસનું એક તારણ ખૂબ મહત્વનું માનવામાં આવે છે. એનો મર્મ એવો છે કે, સાથે રહેવું અને સાથે જીવવું એમાં હાથી-ઘોડાનો ફેર છે. પતિ-પત્ની વચ્ચેનું દાંપત્ય ધબકતું હોવું જોઈએ. જે સૌથી ઈમ્પોર્ટન્ટ વાત છે એ એવી છે કે, લાગણી વગર પત્ની સાથે રહેવું એ તલાક લેવા કરતાં પણ વધુ ઘાતક છે ! આ વાત પતિ-પત્ની બંનેને એટલી જ લાગુ પડે છે.

એકલતા માણસને ધીમે ધીમે નિચોવી નાખે છે. આ અભ્યાસમાં એકલતાની જે વ્યાખ્યા કરવામાં આવી છે એ પણ સમજવા જેવું છે. તમે ઘણા લોકો સાથે રહેતાં હો તો પણ તમે એકલા હોઈ શકો છો, તમારી ફરતે ટોળું હોય તો પણ તમને એકલતા લાગી શકે છે. તમારી સાથે અનેક લોકો કામ કરતાં હોય તો પણ તમને એવું ફીલ થઈ શકે છે કે, તમારું કોઈ નથી. સંબંધોમાં બે વસ્તુ સૌથી વધુ મહત્વની છે. નિકટતા અને ગુણવત્તા. તમે તમારી વ્યક્તિથી કેટલાં નજીક છો, તમારી વ્યક્તિ તમારાથી કેટલી નિકટ છે, એ હિસાબે વેવલેન્થ નક્કી થાય છે.

સંબંધોની વાતમાં એક દલીલ એવી પણ કરવામાં આવે છે કે, આપણે તો સારાં હોઈએ પણ આપણી વ્યક્તિને જ કંઈ કદર ન હોય તો ? આવું બની શકે છે, પણ આપણા ઉપર સારા સંબંધોનો વધુ આધાર રહે છે. તમે જો કોઈને ચાહો, કોઈની કેર કરો, કોઈનું ધ્યાન રાખો તો એનો પડઘો પડે જ છે. જો ન પડે તો એ સંબંધ વિશે વિચારવું પડે ! અલબત્ત, સારા લોકોને સારા માણસો મળી જ રહે છે. જો ન મળે તો એ પણ ચેક કરવું જોઈએ કે, આપણામાં તો કંઈ પ્રોબ્લેમ નથી ને ?

આ અભ્યાસમાં એવું પણ બહાર આવ્યું હતું કે, જેમ જેમ ઉંમર વધે છે તેમ તેમ સંબંધનું મૂલ્ય અને મહાત્મય વધુ સમજાય છે. હરીફરીને વાત ત્યાં જ આવે છે કે, તમારે સુખી થવું હોય, જિંદગી સરસ રીતે જીવવી હોય તો તમારા સંબંધોને સુકાવા ન દેતા ! વાત સાંભળવાવાળું, વાત કહેવાવાળું, હોંકારો દેવાવાળું કોઈ હશે તો જ જીવવાની ખરી મજા આવશે !

પેશ–એ–ખિદમત

એ શમ્મા તુજ પે રાત યે ભારી હૈ જિસ તરહ,
મૈંને તમામ ઉમ્ર ગુજારી હૈ ઈસ તરહ,
દિલ કે સિવા કોઈ ન થા સરમાયા અશ્ક કા,
હૈરાં હૂં કામ આંખો કા જારી હૈ કિસ તરહ.

- નાતિક લખનવી (સાભાર - દિવ્ય ભાસ્કર)

આ વિરાટ આકાશમાં એકાદ તારો હોય કે ન હોય તેનાથી શો ફરક પડે છે ?

અસ્તિત્વની ઈચ્છા સામે તમે નિરુપાય છો. તમારું કશું જ ચાલતું નથી. વધુમાં વધુ તમે એની ઈચ્છા સામે વિરોધ દર્શાવીને દુઃખી થઈ શકો છો. તમારો આક્રોશ વ્યક્ત કરી શકો છો. પણ તેથી શું ? તમને લાગે કે તમે કોઈ મહત્વની વ્યક્તિ છો. પરિવાર, સમાજ કે દેશ માટે તમે કોઈ જરુરી પાત્ર છો પણ એ બધું તમારા કે તમને પ્રેમ કરનારા લોકો તરફથી વિચારાતી વાત છે. પરંતુ આ અનંત કાળ, આ વિરાટ અસ્તિત્વ અને જીવનની સમસ્ત ધારામાં તમારી કોઈ નોંધ પણ નથી લેવામાં આવતી.

વિરાટ મહાસાગરમાં એક મોજું ઊઠે અને ફૂટી જાય, વિરાટ રણમાં વર્ષાનું એકાદ ટીપું પડે અને સુકાઈ જાય એનાથી વધારે તમારા હોવા કે ન હોવાનો કોઈ અર્થ નથી. હું કાર કરો તોય ભલે અને નત મસ્તકે એની ઈચ્છાને માથે ચઢાવીને ચાલતા થાવ તોય ભલે. પણ તમારા અહંકાર માટે અહીં કોઈ જગા નથી. જેમને મન તમે મૂલ્યવાન છો કે જેમને ડરાવી ધમકાવીને તમારો કક્કો ખરો કરો છો તેની પણ અહીં કોઈ નોંધ લેવાતી નથી. તમારા સિવાય તમારા અહંકારને કોઈ ગણતું પણ નથી. જે તમારાથી દબાય છે, તમારાથી નબળા કે આશ્રિત છે એ તમારી વાહ....! વાહ...! કરે છે અથવા તો તમારું મૂલ્ય આંકે છે. પરંતુ એ બધું ઉપરછલ્લું જ હોય છે. અંદર

ક્યાંય તમારા અહંકારની એક રેખા પણ અંકિત થતી નથી. તમારા સિવાય તમારા મૂલ્યને કોઇ માનતું જ નથી. તમને માન આપવા, તમારું મહત્વ સ્વીકારવા કોઈને મજબૂર થવું પડે તો એવા મહત્વનો આખરે અર્થ શો ?

આ વિરાટ આકાશમાં એકાદો તારો હોય કે ન હોય તેનાથી શો ફરક પડે છે ? અફાટ રણમાંથી એકાદો રજકણ ઊડીને ક્યાંક દૂર ફેંકાઇ જાય તો રણ શું ઘટી જવાનું છે ? મહાસાગરમાંથી ઊછળીને એકાદ બિંદુ પોતાના અલગ અસ્તિત્વની ઘોષણા કરતું કિનારા પર જઈને બેસી જાય તો એનું મહત્વ કેટલું ?

માણસનું પણ અહીં કોઈ મહત્વ નથી. કાળના વિરાટ સાગરમાં ઊઠેલો એ માત્ર એક તરંગ છે. એક પરપોટો, એક નાનો છાંટો, સમયના વંટોળમાં એ એક સૂકા પાંદડાની જેમ ઊડીને ક્યાંક ખોવાઇ જાય છે. સાથે જ વ્યક્તિના હોવા કે ન હોવાની અહીં ક્યાંય કોઇ નોંધ લેવાતી નથી.

એનું પોતાનું જીવન પણ એના હાથમાં નથી. ક્ષણ પહેલાં એ હોય અને ક્ષણ પછી ન પણ હોય. આગલી ક્ષણે એ હશે કે નહીં હોય એટલો ખ્યાલ પણ એને નથી હોતો. હૃદય ચાલતું હોય અને બંધ પડી જાય. શ્વાસનો દોર અચાનક તૂટી જાય. ક્યાંક કોઈ અકસ્માત થાય, ધાર્યું પણ ન હોય અને હવાનુ ઝોકું એને ઉઠાવી જાય. ધરતીકંપ થાય અને ક્ષણભરમાં બધું દટાઇ જાય. અચાનક આગ લાગે અને બળીને બધું ભડથું થઇ જાય. વર્ષાના તાંડવ વચ્ચે ફસાઈને જીવનની નૈયા કાગળની હોળીની જેમ ડૂબી જાય.

માણસ ધારે છે કંઇ અને થાય છે કંઈક જુદું જ. આથી શાણપણ તો એમાં છે કે અસ્તિત્વની ઇચ્છા સામે એ સહેજ પણ સંઘર્ષ ન કરવો. સૂકા પાંદડાની જેમ જ હવા જ્યાં લઇ જાય ત્યાં જવું. એ જિવાડે તો જીવવું ને મારે તો ઊંહકારો પણ કર્યા વિના એની ઇચ્છાને આધીન થઇ જવું. "Thy will be done" તું કરે તે બરાબર છે, એવી ઊંડી આસ્થા અને સ્વીકારભાવ સાથે જીવવું કે મરવું એ જ જીવનની મોટી સાધના છે.

સમજે તે સહેજ પણ પીડા વિના નિર્ભાર થઈને જીવી શકે છે. અને જે નથી સમજતાં, સંઘર્ષ કરે છે, ઇન્કાર કરીને ઊભા રહે છે તેને પણ આખરે તો હારવું જ પડે છે. અસ્તિત્વની ઇચ્છા સામે કોઇનું કશું જ ચાલતું નથી. જે સંઘર્ષ કરે છે તે તૂટી જાય છે. તરફડીને મરે છે, અને જે સ્વીકારભાવ સાથે સંપૂર્ણ હકારાત્મક બનીને જીવે છે તે જીવતા તો સુખી થાય જ છે અને મરે તો પણ એના મનમાં ક્યાંય કોઇ પીડા કે તરફડાટ નથી હોતો.

– વત્સલ વસાણી (સાભાર : ગુજરાત સમાચાર)

પિસ્તાળીસ આગમનો સંક્ષિપ્ત પરિચય

૧. **આચારાંગસૂત્ર :** આ સૂત્રમાં શ્રમણ નિગ્રંથોના આચારાદિનું વિસ્તારથી વર્ણન કર્યું છે.

૨. **શ્રી સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં જીવ - અજીવ વિગેરે સ્વસિદ્ધાંત અને પરસિદ્ધાંતનું વર્ણન છે. ક્રિયાવાદી વિગેરેના ૩૬૩ ભેદો (પાંખડિયો) વિગેરેનું વર્ણન છે. ચરણ સિત્તરીની પ્રરૂપણા કરતાં સહન કરવાની વાત આદ્રકુમારાદિનાં દૃષ્ટાંતથી વિસ્તારથી સમજાવી છે.

૩. **શ્રી સ્થાનાંગ સૂત્ર :** એકથી દસ સુધીની સંખ્યાવાળા જીવ-અજીવ નદીઓ વિગેરે વિવિધ પ્રકારનાં પદાર્થોનું વર્ણન ક્રમસર અધ્યાપનોમાં કર્યું છે.

૪. **શ્રી સમવાયાંગ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં એકથી માંડીને સો ઉપરાંત જીવ-અજીવ વિગેરે પદાર્થોનું વર્ણન કર્યું છે અને બાર અંગનો સંક્ષિપ્ત સાર જણાવેલ છે.

૫. **શ્રી ભગવતી સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં ચારે અનુયોગ વિગેરે પદાર્થોનું પ્રશ્નોત્તરાદિ રૂપે વર્ણન કરેલું છે.

૬. **શ્રી જ્ઞાતા સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં શૈલકરાજર્ષિ, દ્રૌપદી શ્રાવિકા વિગેરેની કથાઓ દ્વારા જુદી જુદી રીતે આત્મિક બોધ આપ્યો છે.

૭. **શ્રી ઉપાસક દશાંગ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં પ્રભુશ્રી મહાવીરદેવના દસ શ્રાવકોના ચરિત્રોનું વર્ણન છે.

૮. **શ્રી અંતકૃત દર્શાગ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં અનંત તીર્થંકર, ગણધર, સમલંકત પ્રસંગોનું પ્રસંગે કૃષ્ણા, ગજસુકુમાર, સોમિલ બ્રાહ્મણ વગેરેની વાતો તથા કૃષ્ણ વાસુદેવની રાણીઓએ અને શ્રેણિકરાજા વિગેરેની રાણીઓએ દીક્ષા લઈ કરેલ વર્ધમાન તપ આદિનું વિસ્તારથી વર્ણન છે.

૯. **શ્રી અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર :** આ સૂત્ર સંયમની નિર્મલ સાધના કરીને અનુત્તર વિમાનોમાં ગયેલા જાલિકુમાર, ઉતપશ્ચર્યા કરનાર શ્રી ધન્યમુનિ વિગેરેના ચરિત્રો જણાવ્યા છે.

૧૦. **શ્રી પ્રશ્ન વ્યાકરણ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં પાંચ આશ્વવોની અને પંચ સંવરો વિગેરે પદાર્થોની વિગતો વિસ્તારથી દષ્ટાંતો સાથે કરી છે.

૧૧. **શ્રી રિપાક સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં સુખ દુઃખ ફળોને ભોગવનારા જીવોની કથાઓ વિગેરેનું વર્ણન છે.

૧૨. **શ્રી દષ્ટિવાદ સૂત્ર :** આ અંગ વિચ્છેદ પામ્યું છે.

૧૩. **શ્રી ઔપપાતિક સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં મહેલથી મહોત્સવ - પૂર્વક પ્રભુશ્રી મહાવીરસ્વામિની પાસે જઈને કોણિક રાજાએ વિધિથી વંદના કરી, પ્રભુની દેશના સાંભળી વિગેરે બીના અને મુનિવરોનું તપ, સિદ્ધિના સુખ વિગેરે પદાર્થોનું વર્ણન કર્યું છે.

૧૪. **શ્રી જીવાભિગમ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં જીવ-અજીવ વિગેરે પદાર્થોનું વર્ણન કર્યું છે.

૧૫. **શ્રી પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં જીવાજીવોની પ્રજ્ઞાપના, સ્થાન વિગેરે ૩૫ પદાર્થોનું વર્ણન ચોવીસ દંડકમાં ગોઠવીને કર્યું છે.

૧૬. **શ્રી સૂર્ય પ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં સૂર્ય વિગેરેની બાબતનું વિસ્તારથી વર્ણન કર્યું છે.

૧૭. **શ્રી ચંદ્ર પ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં ચંદ્રાદિની બાબતનું વિસ્તારથી વર્ણન કર્યું છે.

૧૮. **શ્રી જંબુદ્વિપ પ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર :** આ સૂત્રમાં જંબુદ્વીપાદિ ક્ષેત્રોની અને શ્રી ઋષભદેવ પ્રભુ, ભરત ચક્રવર્તીઆદિની હકીકતો કહી છે.

૧૯. **શ્રી કલ્પિકા ઉપાંગ :** આ સૂત્રમાં કોણિકે કરેલા ચેડા મહારાજની સાથે યુદ્ધમાં મરીને નરકે ગયેલા શ્રેણિક રાજાના પુત્ર કાલ વિગેરેની તથા શ્રેણિકના મરણ વિગેરેની બીનાઓ કહી છે.

૨૦. **કલ્પાવંતક્ષિકા ઉપાંગ :** આ સૂત્રમાં શ્રેણિક પૌત્ર પદ્મકુમાર વિગેરે દશ જણા સંયમ સાધીને એક દેવ ભવ કરીને મોક્ષમાં જશે તેનું વર્ણન કર્યું છે.

૨૧. **શ્રી પુષ્પિકા ઉપાંગ :** આ સૂત્રમાં ચંદ્ર સૂર્ય વિગેરેના પૂર્વભવાદિનું વર્ણન કર્યું છે.

૨૨. **શ્રી પુષ્પચૂલિકા ઉપાંગ :** આ સૂત્રમાં શ્રીદેવી વિગેરે દશ દેવીઓના પાછલા ભવ વિગેરેની વિગત કહી છે.

૨૩. શ્રી વહ્નિદશા ઉપાંગ : આ સૂત્રમાં બળદેવના બાર પુત્રોના દીક્ષાની બીના અને તેમના પૂર્વભવાદિની બીના કહી છે.

૨૪ થી ૨૯ છ પયન્ના (કુલ ૧૦ પયન્ના છે) ચઉશરણ પયન્ના, આતુર પ્રત્યાખ્યાન પયન્ના, ભક્તિ પરિજ્ઞા પયન્ના, સંસ્તારક પયન્ના, મહાપ્રત્યાખ્યાન પન્ના, મરણ સમાધિ પયન્ના - આ છ પયન્નાઓમાં અંતિમ આરાધનાદિનો અધિકાર જુદા જુદા સ્વરૂપે સંક્ષેપથી કે વિસ્તારથી વર્ણવતા પ્રસંગાનુપ્રસંગે ઘણી જરૂરી બીનાઓ પણ જણાવી છે.

૩૦. શ્રી તંદુલ વેચાલિય પયન્ના : આ સૂત્રમાં ગર્ભનું કાલમાન, દેહરચના અને યુગલિક પુરુષાદિનું વર્ણન કરીને દેહની મમતાની તજવાનો ઉપદેશ આપ્યો છે.

૩૧. શ્રી ગચ્છાચાર પયન્ના : આ સૂત્રમાં મુનિવરોના આચારાદિના બીના કહી છે.

૩૨. શ્રી ગણિવિજ્જા પયન્ના : આ સૂત્રમાં દિવસ બળ વિગેરે નવ બળોને અંગે જ્યોતિષની હકીકત વિગેરે બીનાઓ જણાવી છે.

૩૩. શ્રી દેવેન્દ્ર સ્તવ પયન્ના : આ સૂત્રમાં પ્રભુની સ્તુતિ કરવાના અવસર પૂછાયેલાં ઉત્તરોરૂપે ઉર્ધ્વલોકાદિની બીના જણાવી છે.

૩૪. શ્રી આવશ્યક સૂત્ર : આ સૂત્રમાં છ આવશ્યકનું વર્ણન છે.

૩૫. શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્ર : આ સૂત્રમાં મુનિવરોના આચારનું વર્ણન છે.

૩૬. શ્રી ઓઘનિયુક્તિ સૂત્ર : આ સૂત્રમાં શ્રી ચાતુર્વિધ સંઘને મોક્ષમાર્ગની આરાધના કરાવનાર વિનયાદિનું તથા વૈરાગ્ય, શીલ, તપશ્ચર્યા, કર્મ, જીવાદિ તત્વ વિગેરે પદાર્થોનું સ્વરૂપ વિસ્તારથી સમજાવ્યું છે.

૩૭. ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર : આ સૂત્રમાં શ્રી ચતુર્વિધ સંઘને મોક્ષમાર્ગની આરાધના કરાવનાર વિનયાદિનું તથા વૈરાગ્ય, શીલ, તપશ્ચર્યા, કર્મ, જીવાદિ તત્વ વિગેરે પદાર્થોનું સ્વરૂપ વિસ્તારથી સમજાવ્યું છે.

૩૮. શ્રી નંદી સૂત્ર : આ સૂત્રમાં પાંચ જ્ઞાન વિગેરેનું તથા અંતે બાર અંગોનું પણ ટુંકું વર્ણન કર્યુ છે.

૩૯. શ્રી અનુયોગ દ્વાર સૂત્ર : આ સૂત્રમાં ઉપક્રમાદિ ચાર પ્રકારના

અનુયોગ વિગેરે પદાર્થોનું સ્પષ્ટ વર્ણન કર્યું છે. ઉપક્રમે, નિક્ષેપ, અનુગમ અને નય એમ ચાર દરવાજાનું વિસ્તારથી વર્ણન કર્યું છે.

૪૦ થી ૪૫ શ્રી છ છેદ સૂત્ર : આ સૂત્રમાં પ્રાયશ્ચિત, પાંચ વ્યવહાર અને મુનિવરોના આચરાદિનું વર્ણન વિસ્તારથી કર્યું છે.

ઉપર પરિચય કરાયેલ પિસ્તાલીસ આગમ સત્ય છે. અનુત્તર છે. કેવલી શ્રી તીર્થંકર ભગવંતોએ કહેલા છે.

આગમો પ્રતિપૂર્ણ તથા ન્યાયમાર્ગને અનુસરનારા છે. સર્વથા શુદ્ધ છે. આત્માને ત્રણ શલ્યમુક્ત બનાવનાર છે. આ આગમો મુક્તિમાર્ગને આરાધવામાં અસાધારણ કારણ છે. સર્વજ્ઞકથિત આગમોમાં ક્યાંય શંકાને સ્થાન છે જ નહી. આગમનો સાત્વિક આરાધક નિશ્ચિત ત્રિવિધ દુઃખોનો નાશ કરી સિદ્ધિ પદને પામે છે. તેથી જ આગમો નિર્વાણરૂપી નગરમાં પહોંચવાના માર્ગરૂપ કહેવાય છે.

આ આગમ ઉપર સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા રાખી, નિઃસંદેહ બની યથાશક્તિ જીવનમાં ઉતારી, આત્મકલ્યાણ સાધવા ઉદ્યમશીલ બનીએ.

– સાભાર : આચાર્ય જગરચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.
ગુજરાત સમાચાર

-: વાંચન મિત્રો જોગ :-

શાશ્વત ધર્મ હિન્દી માસિક, ગુર્જર જૈન જ્યોત ગુજરાતી વિભાંગના સંપાદક સુરેશ સંઘવીના બંને પગના ઢીંચણ કામ કરતાં બંધ થઈ જવાથી બંને ઢીંચણમાં સ્ટીલપ્લેટ બેસાડી ઓપરેશન કરાવવાની જરૂરિયાત ઉભી થઈ જતાં સુરતની પોસ હોસ્પિટલમાં દાખલ થઈ નિષ્ણાંત ડો. કૌશલભાઈ શાહ પાસે તા. ૨૮-૯-૨૦૨૦ના રોજ પાંચ કલાકની જહેમત બાદ બંને પગનું સફળ ઓપરેશન કરાવાયું હતું. પીડાદાયક સર્જરી કરાવવાથી લેખન કાર્યમાં અવરોધ ઉભો થતાં નવેમ્બર ૨૦૨૦ના શાશ્વત ધર્મ હિન્દી માસિક, ગુર્જર જૈન જ્યોત ગુજરાતી વિભાગમાં શાસન સમાચારને સ્થાન અપાઈ શકાયું નથી તે બદલ સહુ વાંચક મિત્રો ક્ષમા કરશો.

લિ. સુરેશ સંઘવી, સંપાદક : ગુર્જર જૈન જ્યોત

कुमकुम सने पगलिये

वात्सल्य विधि की उपाधि

महिदपुर । साध्वी श्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी का 41 वां अवतरण दिवस श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के तत्वावधान में मनाया गया। अनुमोदनार्थ स्नात्र महोत्सव पूजन पढ़ाई गई व गोपाल गौशाला में गौमाता को सूर्यास्त पूर्व खल, गुड़ व चापड़ का आहार कराया गया। दोपहर में सामायिक मण्डल का आयोजन किया गया। गुणानुवाद सभा में तपस्वी साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा. ने गुरुणी साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी के गुणों की व्याख्या की। रमेश लुणावत, माणकलाल छाजेड़, चमन सोनी व संगीता मोदी ने अपने विचार व्यक्त किये। त्रिस्तुतिक संघ की ओर से संघ अध्यक्ष मुकेश बांठिया ने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीजी म.सा. अमृतरसाश्रीजी को वात्सल्य निधि की उपाधि का तोहफा (गिफ्ट) देकर नवाजा। सभा के अंत में साध्वी डॉ. श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने समाजजनों को मंगल आशीष प्रदान करते हुए गुरुभगवंतों के प्रति कृतज्ञता, व्यक्त की। राजेन्द्रसूरि महिला मण्डल व बहु मण्डल की ओर से भावभरी भक्ति कर गरबा किया गया। संचालन मुकेश बांठिया ने किया। सुमतिलाल छजलानी, वर्धमान गादिया, नरेन्द्र धाड़ीवाल, सुरेश छजलानी, पंकज मेहता, दिनेश मालू, शरद बांठिया, विरेन्द्र मेहता, पारस लुणावत आदि उपस्थित थे। नागदा व महिदपुर रोड़ श्री संघ के भक्तों का भी आगमन हुआ। यह जानकारी संघ के मीडिया प्रभारी नरेन्द्र धाड़ीवाल ने दी। साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा. का 61 वां तथा साध्वीजीश्री जिनांशरसाश्रीजी म.सा. ने 41 आयम्बिल तप की तपस्याकी है। साध्वीश्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. के सान्निध्य में महावीर अनिल कुमरा मारू (मंदसौर) के वर्धमान तप के तपस्या निमित्त सम्पतबाई राजमल बांठिया परिवार की ओर से श्री राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में वृहद् श्री राजेन्द्रसूरि अभिषेक पूजन का भव्य आयोजन किया गया। पूजन की विधि स्वयं महावीर मारू ने सम्पन्न कराई।

'पुण्य सम्राट' ग्रंथ 250 जैनाचार्यों तथा दो सौ ग्रंथालयों को पहुँचाया गया

मंदसौर। युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन

सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन पर आधारित 'पुण्य सम्राट' ग्रंथ की लगभग एक हजार सभी प्रतियाँ विक्रय या भेंट के माध्यम से वितरित की जा चुकी हैं। विगत दिनों समग्र जैन समाज के लगभग 250 जैनाचार्यों को यह ग्रंथ भेंट स्वरूप प्रस्तुत किया गया।

इससे पूर्व देश भर के दो सौ ग्रंथालयों अथवा जैन शोध केन्द्रों को यह भिजवाया गया है। देश भर के एक सौ त्रिस्तुतिक संघों को उनके ज्ञान भण्डारों में संग्रहित करने हेतु यह उपलब्ध किया गया है। ग्रंथ के विमोचन समारोह में लेखक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने आह्वान किया था कि समाज के महानुभाव इस की प्रतियाँ क्रय कर जैनाचार्यों, समाजसेवियों, ग्रंथालयों, शोध केन्द्रों को भिजवाने में सहयोग करें। इस पर श्री सुशीलजी गिरिया (उज्जैन) ने दो सौ, श्री कमलेशजी काकड़ीवाला (अलिराजपुर) ने एक सौ, श्री माणकलालजी छाजेड़ महिदपुर ने एक सौ ग्यारह, श्री रमेशभाई धरू (मुंबई) ने एक सौ, श्री अशोक श्री श्रीमाल (इंदौर) अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद ने दो सौ, महिला शाखा परिषद मुंबई ने पचपन प्रतियां भिजवाने के लिये प्रदान की थीं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने युग प्रभावक श्री जयंतसेन सूरिजी म.सा. के सम्पूर्ण जीवन को 'अध्यायों में औपन्यासिक शैली में आलेखित कर अन्य सामग्री के साथ इस ग्रंथ की रचना की तथा युग प्रभावकश्री की द्वितीय पुण्य तिथि पर इसका प्रकाशन किया गया था। सभी वितरित की गई प्रतियों को डाक से सही स्थान पर सही पते पर मिल जाय यह सुनिश्चित किया गया है।

रजत रश्मियां

* पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनि साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म., साध्वीश्री निरागरसाश्रीजी म., साध्वीश्री जिनांशरसाश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री रमेश चन्द्रजी मेहता की पुत्र वधु श्रीमती एकता-पंकज मेहता के सिद्धी तप पूर्णाहुति पर 'शाश्वत धर्म' को 1100/- रुपये (ग्यारह सौ रुपये) मेहता परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

* महिदपुर स्व. श्रीमती सुदर्शना बांठिया स्व. सेठश्री सिरेमलजी बांठिया की पुण्य स्मृति में धूलचन्द नाथूलाल बांठिया परिवार (लालगड़वाला) की ओर से 'शाश्वत धर्म' को 2100/- (इक्कीस सौ रु.) की राशि भेंट की गई। आप श्री संघ अध्यक्ष श्री मुकेशजी बांठिया की माताजी थीं। 'शाश्वत धर्म' द्वारा धन्यवाद।

श्री संघ सौरभ

आराधक पुण्यात्मा की अनुमोदना

अहमदाबाद । त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ नेनावा के गौरवशाली पुत्र श्री अरविन्दभाई गणेशमलजी छाजेड़ ने आत्मा को धर्म से जोड़ने के लिए भद्रतप की तपश्चर्या निर्विघ्न सम्पन्न की। इस उग्र तप में 100 दिनों में 75 उपवास तथा 25 बियासने करने का प्रावधान है। आपने अपने जीवन में श्रेणिक तप, सिद्धितप, मासक्षमण, दो बार वर्षीतप, उवस्सग्गहरं तप, चत्तारी अट्ठ- दस- दोय तप, तीन बार अट्ठाई आदि की अनेक तपश्चर्याएं कर निर्जरा के माध्यम से मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया है।

उनकी अंतःकरण पूर्वक अनुमोदना। आपकी ऐसी तपश्चर्या के साथ सुकृत में भी आपका परिवार अनुमोदना का पात्र है। आपकी मातेश्वरी श्री छट्ठीदेवी गणेशमलजी रत्नाजी छाजेड़ परिवार ने स्व. लोकसंत गच्छाधिपति पुण्य सम्राट आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में मातृभूमि नेनावा से श्री जैसलमेर महातीर्थ का छःरिपालित श्रीसंघ संवत् 2068 में अड़तीस दिनों का निकाला जिसमें 125 श्रमण- श्रमणीवृन्द तथा 500 से अधिक आराधक यात्रियों ने भाग लेकर जीवन सार्थक किया था। आपका स्व. आचार्य भगवंत के प्रति अंतःकरण पूर्वक समर्पण भाव था, आज भी उनके पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी तथा आचार्य श्री जयरत्नसूरिजी के प्रति वैसा ही समर्पण भाव है। आपका भद्रतप का पारणा दिनांक 28 सितम्बर 2020 को सम्पन्न हुआ।आपका भद्रतप का पारणा दिनांक 28 सितम्बर 2020 को सम्पन्न हुआ।

संघवी रमेशजी का स्वर्गवास

परम गुरुभक्त, सहज एवं सरल व्यक्तित्व के धनी परम गुरुभक्त संघवी श्री रमेशजी भंवरलालजी रतनपुरा बोहरा का स्वर्गवास हो गया है। आपके परिवार का 68 जिनालय तीर्थ निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। श्री राज राजेन्द्र कीर्ति मंदिर ट्रस्ट भरतपुर के

अध्यक्ष श्री संघवी बाबुलालजी कटारिया तथा देश भर के श्रीसंघों तथा परिषद शाखाओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की है। 'शाश्वत धर्म' की ओर से श्रद्धांजलि।

पारिख का निधन

आलोट। परम गुरुभक्त , श्रीसंघ तथा परिषद के वरिष्ठ शिवकुमारजी पारिख का विगत 27 सितम्बर को इंदौर में आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल, धर्मनिष्ठ, मिलनसार तथा पुण्यसम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के निकटस्थ थे। श्री नागेश्वर तीर्थ के समीप होने से साधु-साध्वियों का आगमन बना रहता है, उस प्रसंग पर आपकी वैयावच्च सदैव सराहनीय रही। सामाजिक दायित्व निर्वाह करने में आप अग्रणीय थे। श्रीसंघ में सभी के सुख-दुःख में आप तत्काल आना जाना करते थे। समस्याओं के क्षणों में आपकी सटीक सलाह होती थी। जैन श्वे. श्रीसंघ, त्रिस्तुतिक संघ तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिवार में आपकी सेवाएं उल्लेखनीय थीं। 'शाश्वत धर्म' की ओर से श्रद्धांजलि।

– अशोक दीपमाला श्रीश्रीमाल, इंदौर

समाजसेवी श्री अचलचन्द जैन नहीं रहे

समाजसेवी श्री अचलचन्द जैन का 80 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। जालौर जिले के सायला गाँव निवासी श्री जैन प्रशासनिक अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे। अपने क्षेत्र में लोकप्रिय श्री जैन ने सेवानिवृत्ति के बाद गरीबों एवं जरूरतमन्दों के लिए एक सेवा केन्द्र की स्थापना की थी। सेवानिवृत्ति के बाद प्राप्त राशि एवं प्रतिमाह मिलने वाली पेंशन राशि से पिछले 27 वर्षों से गरीबों के हितार्थ कार्य कर रहे थे।

बेदाग एवं ईमानदार छवि वाले श्री जैन को राष्ट्रपति पदक, शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं समाजसेवा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। सरकारी पद पर रहते हुए श्री जैन ने सैकड़ों लोगों को नशे से मुक्ति दिलाई।

कुशल वक्ता एवं साहित्यकार श्री जैन ने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से

जुड़कर समाज के लिए उल्लेखनीय कार्य किये। वे अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राजस्थान प्रान्त के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर चुके थे। वे बाकरा रोड़ जैन तीर्थ के उपाध्यक्ष भी रहे।

शिक्षाविद् श्री जैन द्वारा लिखित प्रेरक कहानियाँ एवं प्रेम के रिश्ते नामक पुस्तकों को भी लोगों द्वारा सराहा गया। राष्ट्रसन्त आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वर ग्रंथ एवं साध्वी श्री सूर्यकरणाश्रीजी के 50 वें दीक्षा वर्ष पर प्रकाशित ग्रंथ के वे सम्पादक थे। राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर शोध एवं संशोधन का कार्य भी देखते थे।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित होने वाली परीक्षा में मुख्य परीक्षक के रूप में भी अपनी सेवा दे चुके थे। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन द्वारा वे सामाजिक सुधार एवं पारिवारिक मूल्यों की वकालात करते थे इसके अलावा वे अपने आलेखों द्वारा लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते रहते थे। नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन जीनेवाले श्री जैन को कई समाजों में सामाजिक विवादों के निपटारे हेतु बुलाया जाता था। सरकारी शिक्षक से शुरू हुआ सफर शिक्षा प्रसार अधिकारी, प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, तहसीलदार एवं विकास अधिकारी तक पहुँचा। वे परिवार के लिए एक योद्धा मार्गदर्शक एवं आदर्श थे उनका यूं चला जाना न केवल परिवार की क्षति है बल्कि, समाज की अपूरणीय क्षति भी हुई है। उनका जीवन युवाओं के लिये हमेशा प्रेरणादायी रहेगा। ऐसे कर्मयोगी को शत्-शत् नमन् ।

---

* **निम्बाहेड़ा।** प्रतिष्ठित परिवार श्री नानालालजी भंवरलालजी विरानी के सदस्य एवं त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के कर्मठ सदस्य श्री रिखबजी विराणी का अहमदाबाद में उपचार के दौरान स्वर्गवास हो गया। वे धर्म परायण समाजसेवी तथा परम गुरुभक्त थे। आप मंडी में व्यवसाय करते थे। पर्युषण पर्व के दिनों में श्री कल्पसूत्र वाचन में अग्रणीय रहते थे। समाज द्वारा हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित की गई।

* **खाचरौद।** त्रिस्तुतिक जैन समाज के वरिष्ठ, परम गुरुभक्त श्री ऋषभदेव टेकचंद न्यास के पूर्व ट्रस्टी एवं श्री राज

राजेन्द्र शिक्षण समिति के ट्रस्टी श्री माणकलालजी चौहान के ज्येष्ठ पुत्र, खाचरौद परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री विजयजी चौहान का स्वर्गवास हो गया। आपको श्रद्धांजली अर्पित करते हुए श्रीसंघ तथा परिषद परिवार ने शोक प्रकट किया।

पारिख का निधन

आलोट। परम गुरुभक्त , श्रीसंघ तथा परिषद के वरिष्ठ शिवकुमारजी पारिख का विगत 27 सितम्बर को इंदौर में आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल, धर्मनिष्ठ, मिलनसार तथा पुण्यसम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के निकटस्थ थे। श्री नागेश्वर तीर्थ के समीप होने से साधु-साध्वियों का आगमन बना रहता है, उस प्रसंग पर आपकी वैयावच्च सदैव सराहनीय रही। सामाजिक दायित्व निर्वाह करने में आप अग्रणीय थे। श्रीसंघ में सभी के सुख-दुःख में आप तत्काल आना जाना करते थे। समस्याओं के क्षणों में आपकी सटीक सलाह होती थी। जैन श्वे. श्रीसंघ, त्रिस्तुतिक संघ तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिवार में आपकी सेवाएं उल्लेखनीय थीं। 'शाश्वत धर्म' की ओर से श्रद्धांजलि ।

– अशोक दीपमाला श्रीश्रीमाल, इंदौर

परीक्षा दिवस का आयोजन

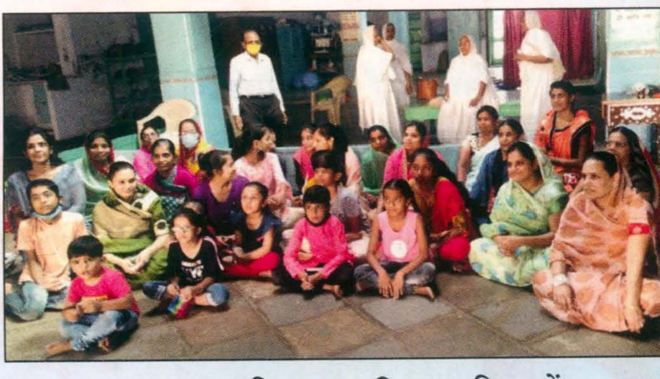

पुण्य सम्राट के पट्टधर पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवश्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा., आचार्य देव श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुसार तपस्वी रत्ना प.पू. साध्वीश्री शशिकलाश्रीजी म.सा. व मातृ हृदया साध्वी श्री अविचल दृष्टाश्रीजी की सुशिष्या सरल स्वभावी साध्वी श्री अमित दृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की शुभ निश्रा में रतलाम श्रीसंघ में चातुर्मास चल रहा है इसी कड़ी में पुण्य सम्राट के '81 वर्ष' के

उपलक्ष में 81 नई गाथाएँ, दो प्रतिक्रमण- पंच प्रतिक्रमण, नवस्मरण, बड़े सूत्र, सकलार्हत, अजी - शांति, जीव विचार, अतिचार आदि द्वारा ज्ञान पुष्प अर्पण हो रहा है।

इसी कड़ी में दिनांक 18-10-2020 को जिन्होंने नए सूत्र याद किए। महिलाएँ एवं बच्चों का परीक्षा दिवस का आयोजन किया गया उपस्थित सदस्यों द्वारा सूत्र एवं गाथाएँ पूज्य साध्वी भगवंत अमित दृष्टाश्रीजी की निश्रा में सभी साध्वी भगवंतों ने मौखिक परीक्षा के रूप में सुनी गई। जिसमें सहयोग हेतु पाठशाला संचालक सुरेन्द्र गंग, भाई प्रवीणजी बरबोटा एवं संजय कोठारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के संचालक चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री अभयजी सकलेचा रहे। रतलाम पाठशाला द्वारा सभी स्वाध्याय सूत्र सीखने वालों को अनुमोदना एवं आभार।

महिला परिषद को अभिनदंन पत्र

इंदौर। 'अखिल' भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद, गुमास्ता नगर इंदौर दिन दूनी, रात चौगुनी प्रगति पर कार्यरत है।

'मध्यप्रदेश' के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने गुमास्ता नगर परिषद अध्यक्षा श्रीमती विनीता सुशीलजी बांठिया एवं सचिव श्रीमती संगीता सुधीरजी सेठिया को लॉकडाउन के दौरान मानव सेवा, बाल विकास, स्वास्थ्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण 'कोरोना वारियर्स' के अंतर्गत हुए समस्त आर्थिक, सामाजिक, मानवीय, सहायता को देखते हुए गुमास्ता नगर इंदौर परिषद के कार्यों की सराहना एवं उस पर अपनी मोहर स्वरूप अखिल भारतीय महिला परिषद गुमास्ता नगर को प्रशस्ति पत्र मुख्यमंत्री द्वारा प्राप्त हुआ। प्रशस्ती पत्र सांसद ने परिषद को प्रदान किया।

आगामी कार्यों के अंतर्गत महिला परिषद द्वारा 200 मास्क, 100 सेनीटाइजर बॉटल, 100 जोड़ी कपड़े, महिला बाल विकास, मध्यप्रदेश को मदद स्वरूप भेंट करने जा रही है। इसकी लाभार्थी हैं परिषद की सक्रीय सदस्य विजयाजी मोदी। बहुत-बहुत अनुमोदना।

परिषद प्रांगण से

पदाधिकारियों का चार दिवसीय दौरा

परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने संयम वंदन यात्रा सम्पन्न की

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश जी धरू के नेतृत्व में राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने म.प्र. राजस्थान, गुजरात में विराजित श्रमण भगवंतों के दर्शनार्थ संयम' वंदन यात्रा की। दिनांक 17 अक्टूबर को यात्रा मोहनखेड़ा तीर्थ पर गुरु दर्शन कर प्रारंभ की । निम्बाहेड़ा में गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वंदन किए। परिषद परिवार द्वारा पुण्य सम्राट की भावना के अनुरूप प्रतिवर्ष श्रमण भगवंत व श्रमणी भगवंत की सुखशाता पृच्छा के लिए प्रवास किया जा रहा है।

परिषद पदाधिकारियों के साथ एक बैठक में गुरुदेव श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.ने अपने आशीर्वचन में फरमाया की परिषद समाज की रीढ़ है। परिषद जन संस्था के उद्देश्य के अनुरूप धार्मिक शिक्षा में सार्थक कार्य कर रही हैं। प्रत्येक पदाधिकारी को अपने दायित्व का समर्पणता के साथ निर्वहन करते हुए परिषद की प्रगति में अपना योगदान देना चाहिए। बैठक में मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने भी मार्गदर्शन प्रदान किया।पदाधिकारियों ने निम्बाहेड़ा में विराजित मुनिराज श्री वीररत्न विजय जी म.सा., मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजय जी म.सा. मुनिराज श्री प्रशमसेन विजय जी म.सा. मुनिराज श्री तारक रत्न विजय जी म.सा. मुनिराज श्री निर्ग्रंथ रत्न विजय जी म.सा. के वंदन भी किए।

निम्बाहेड़ा श्री संघ व चातुर्मास लाभार्थी पारख परिवार ने राष्ट्रीय

अध्यक्ष श्री रमेश जी धरू सहित अन्य पदाधिकारियों का बहुमान किया। पारख परिवार प्रमुख श्री रतनसिंह जी पारख,श्री संघ अध्यक्ष श्री मनीष बाबेल,श्री शेर सिंह जी पारख, श्री मनोज जी पारख,श्री सुरेंद्र जी डूंगरवाल,श्री रवि जी मोदी,श्री संतोष जी जैन ने बहुमान किया। बैठक में कोरोना संक्रमण से काल कवलित हुए समाज जनों की आत्मिक शांति हेतु नवकार मंत्र का स्मरण किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू व राष्ट्रीय महामंत्री सुधीर लोढ़ा, उपाध्यक्ष नवीन भाई बल्लु,जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड, प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन दंगवाड़ा वाला, शिक्षामंत्री भरत भाई वोहरा, मंत्री अतुल अदाणी, मुकेश जैन नाकोड़ा प्रचार मंत्री ब्रजेश बोहरा, संगठनमंत्री राजेश वागरेचा, सहमंत्री राजकमल दुग्गड, शैलेश ओरा,प्रवीण डूंगरवाल आदि राष्ट्रीय पदाधिकारीगण प्रवास के दौरान साथ थे। इसके पूर्व परिषद जनों ने नीमच में विराजित मुनिराज श्री संयमरत्न विजय जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए।

पुण्य सम्राट स्वर्गारोहण भूमि भाण्डवपुर तीर्थ में आचार्य भगवंत श्रीमद विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा आदि ठाणा के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद लिया।आपने परिषद जनों से भाँडवपुर तीर्थ जिन मंदिर प्रतिष्ठा में समर्पण भाव से सेवा देने का संदेश दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री धरूजी ने कहा कि संगठन का एक-एक स्वयं सेवक भांडवपुर प्रतिष्ठा के आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए संकल्पित है। परिषद जनों ने यहाँ विराजित साध्वी जी श्री सूर्यकिरणा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री काव्यरत्ना श्री जी म.सा. से भी आशीर्वाद लिया।

संयम वंदन यात्रा ने तृतीय दिवस पुण्य सम्राट श्री की जन्मभूमी पेपराल तीर्थ पहुँच कर तीर्थ का निरीक्षण किया व आरती का लाभ लिया पेपराल तीर्थ भव्य रूप ले चुका है। परिषद ने सभी गुरुभक्तों से पुण्य सम्राट की जन्मभूमी पेपराल तीर्थ पर वर्ष में एक बार आने का आव्हान परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने किया। बाद में यहा विराजमान साध्वी श्री दिव्यदृष्टा श्री जी म.सा. के दर्शन वंदन कर थराद पुण्य सम्राट के मन्दिर निर्माणाधीन का निरीक्षण कर भगवान महावीर स्वामी मन्दिर में पूजा अर्चना कर सयम वन्दन यात्रा के चतुर्थ दिवस

लाखणी में विराजित साध्वी श्री कल्परेखा श्री जी म.सा. के दर्शन कर सुखशाता पृच्छा की।

पाटण तीर्थ-मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजय जी म.सा. व मुनिराज श्री निपुण रत्न विजयजी म.सा.आदि ठाणा के दर्शन किए।

गुजरात के पाटण नगर में विराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजय जी महाराज एवं मुनिराज श्री निपुण रत्न विजय जी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत ठाणा 29 के दर्शनार्थ गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा द्वारा स्थापित श्री अखिल भारतीय राजेंद्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू , राष्ट्रीय महामंत्री सुधीरजी लोढ़ा ,उपाध्यक्ष नवीनभाई बल्लु, जनकल्याण मंत्री सुशीलजी छाजेड़, शिक्षामंत्री भरतभाई वोहरा, मंत्री अतुलभाई अदाणी, प्रचार मंत्री ब्रजेश बोहरा, संगठनमंत्री राजेश वागरेचा, सहमंत्री राजकमल दुगड, आए।

पदाधिकारियों के आगमन पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण एवं नगर के जैन समाज के अग्रणी उपस्थित रहे, पदाधिकारियों ने श्रमण- श्रमणी भगवंत के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए एवं विगत वर्ष में किए कार्यों की रूप रेखा से सभी को अवगत करवाया इस प्रसंग पर मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजय जी महाराज ने कहा कि गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वर जी महाराज ने परिषद् को मार्गदर्शन देकर आज परिषद् को जिस ऊंचाई पर पहुंचाया है उस ऊंचाई को बनाए रखने में सभी सदस्यों को योगदान देना कर्तव्य है मुनिराज श्री निपुणरत्न विजय जी महाराज ने परिषद की प्रगति के लिए प्रत्येक सदस्य को पंच सूत्र अपनाने का धार्मिक प्रवचन दिया।

उन्होंने कहा कि समर्पण, सद्भाव, सहनशीलता, समता, सरलता इन पांच सूत्रों का अनुसरण प्रत्येक परिषद सदस्यों को करना चाहिए।त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से सभी पदाधिकारियों का बहुमान किया गया।

इस प्रसंग पर नगर पालिका के चीफ ओफिसर पांचाभाई माली ने विशेष रूप से उपस्थित रहकर परिषद् के कार्यो की जानकारी ली एवं सभी पदाधिकारियों का उन्होंने बहुमान किया, पंडितवर्य श्री चंद्रकान्तभाई संघवी ने भी पधार कर

पदाधिकारियों को जीवन धार्मिक ज्ञान के महत्व पर समझाया।

चीफ ऑफिसर ने नगरपालिका द्वारा पाटण के सरस्वती नदी के तट पर बन रहे वन उद्यान जहां 1000 तरह के एक लाख वृक्षों का वृक्षारोपण होगा, वहां परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री सुधीर लोढ़ा, श्री सुशीलजी छाजेड़, श्री राजकमलजी दुग्गड़ से वृक्षारोपण करवाया जो परिषद् के लिए गौरव के क्षण हैं। पाटण पश्चात पदाधिकारी अहमदाबाद के लिए प्रस्थान हुए। यहां विराजित मुनिराज श्री जिनागम रत्न विजय जी म.सा. के दर्शन किए। श्री संघ व परिषद् के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री व मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा द्वारा जारी समाचार।

विश्वास ही जीवन है

क्या हम जानते हैं कि इस जगत में किस वस्तु का मूल्य सर्वोपरि है? यदि अन्न का मूल्य सर्वोपरि है, तो यह सत्य नहीं है। अन्न के बिना मनुष्य अनेक दिनों तक जीवित रह सकता है। पानी का मोल भी सर्वोपरि नहीं है, क्योंकि पानी के बिना भी मनुष्य कई दिनों तक जीवित रह सकता है। यदि श्वासोच्छवास या वायु का मोल हम सर्वोपरि माने तो यह भी सत्य नहीं है। सिद्ध पुरुष श्वांस को रोककर कुम्भक अवस्था में जीवित रहते हुए देखे जा सकते हैं।

जीवन में सर्वोपरि मूल्य है विश्वास का। उसके बिना मनुष्य क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकता। यदि जीवित रह भी जाए तो वह जीवन मृत्यु जैसा अनुभव कराता है, व्यक्ति मृतक के समान जीता है।

धर्म आत्मा का स्वभाव

महावीर ने धर्म को आत्मा का स्वभाव कहा है। क्षमा, विनय, सरलता और संतोष को धर्म का लक्षण बताया। धर्ममय होने के लिए, दिनचर्या का विधान किया। दिन के चार प्रहर में साधक प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान करे, फिर एक प्रहर में भिक्षाचार्य और अंतिम प्रहर में स्वाध्याय करे। रात्रि के चार प्रहर में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान, फिर एक प्रहर में निद्रा और अंतिम प्रहर में स्वाध्याय करे। इस प्रकार एक दिन -रात के आठ प्रहरों में चार प्रहर स्वाध्याय, दो प्रहर ध्यान और एक प्रहर भोजन और एक प्रहर निद्रा। तब कहीं जीवन धर्ममय हो पाता है।

जैन विश्व

* ईडर पावापुरी जैन मंदिर के कथित मुनि राजतिलक सागर को हिम्मतनगर पुलिस द्वारा कोर्ट में एक महिला से दुष्कर्म के आरोप में पेश किया गया, जहाँ पुलिस ने राजतिलक को गिरफ्तार कर सात दिन के लिये जेल भेज दिया। (समाचार सितम्बर प्रथम सप्ताह का)।

* मुंबई वृहद जैन संगठन द्वारा विश्व जैन, जनगणना की जा रही है।

* मुंबई में भगवान महावीर देशना समिति के तत्वावधान में अठारह दिवसीय पर्युषण पर्व का समापन पंच महाव्रत पर बौध प्रवचनों के साथ हुआ जिसमें सभी जैन समुदायों के आचार्यों ने भाग लिया। प्रवचन करने वाले श्री नममुनिजी म. , आचार्य श्री श्रुतसागरजी म., आचार्यश्री प्रज्ञसागरजी, युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी तथा दिगम्बर आचार्य श्री प्रमाण सागरजी म. थे।

* पंजाब सरकार ने पंजाब राज्य अल्पसंख्यक आयोग में जैन समाज की ओर से श्री सलील कुमार जैन को मनोनीत किया है। वे अग्रसेन विचार मंच के महासचिव हैं।

* अहमदाबाद में तेरापंथ युवक परिषद ने दो तपस्वियों के अठ्ठाई तप का पारणा जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार के मध्य करवाया।

* विगत महिनों अयोध्या में सम्पन्न हुए श्री राम मंदिर शिलान्यास समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जैन प्रतिनिधि के रूप में हस्तिनापुर में विराजमान जैन धर्मगुरु श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामीजी को आमंत्रित किया था। उनने भी समारोह में भाग लिया था।

* कोलकाता में जैन श्वे. सोसायटी मधुवन द्वारा 'भोमिया बाबा की भक्ति' फेसबुक लाइव भक्ति का आयोजन 27 अप्रैल से प्रारंभ किया जो 150 दिन

23 सितम्बर तक चला।

* सिरोती (जि. सिरोही, राजस्थान) में पन्यास श्री वैराग्यरत्नविजयजी म. द्वारा लिखित 'एक था पोपट' हिन्दी पुस्तक का विमोचन किया गया। इसमें सिद्धगिरिराज के 108 नाम में से श्री शत्रुंजय महातीर्थ नाम किसलिए रखा गया है यह बताया गया है।

* अरिहंत मित्र मण्डल दुबई के अध्यक्ष ने बताया कि दुबई जैन समाज द्वारा पर्युषण दशलक्षण महापर्व पर आयोजित ऑन लाईन व्याख्यानमाला में प्रवक्ता डॉ. इन्दु जैन को विदुषी रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

* स्थानकवासी श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनिजी का उदयपुर के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। उनका चातुर्मास नाथद्वारा में चल रहा था।

* अनुमान है कि कोरोना के कारण 50 से अधिक साधु-साध्वीजी महाराज देश भर में संक्रमित हुए । सबसे अधिक मामले राजस्थान में रहे। इनमें से 5 या 7 की मृत्यु भी हो गई।

* श्री गणपत चौधरी जीतो (एपेक्स) के चेयरमेन तथा श्री सुरेश मुथा अध्यक्ष मनोनीत किये गये हैं।

डॉ. दिलीप धींग को इंडिया स्टार अवार्ड

चेन्नई। अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग 15 अक्टूबर को इंडिया स्टार पर्सनैलिटी अवार्ड 2020 से सम्मानित हुए। इसके लिए उनका नाम इंडिया स्टार बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में सम्मिलित किया गया। संपादक वीणा अग्रवाल ने बताया कि डॉ. धींग जैन विद्या विषयक पत्र-पत्रिकाओं में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाले सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार हैं। तीन दशक से उनका यह कीर्तिमान कायम है। जैनविद्या मनीषी डॉ. धींग ने हिंदी गद्य-पद्य की कई विधाओं में लिखा है। उनकी हजारों रचनाएँ सैंकड़ों पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित व प्रशंसित हो चुकी हैं। अब तक उनके द्वारा लिखित व संपादित 70 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

– विजया कोटेचा

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि. फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

मोतीलालजी गिरिया का दुःखद निधन

उज्जैन । त्रिस्तुतिक जैन समाज के अग्रणीय गुरुभक्त श्री मोतीलालजी गिरिया का विगत दिनों दुःखद निधन हो गया। आप अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुशील गिरिया व उनके अनुज श्री नवीन गिरिया के सबसे ज्येष्ठ भ्राता थे। श्री मोतीलालजी की आयु 60 वर्ष की थी। वे अनाज के व्यवसायी थे एवं समाज की गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते थे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुशील गिरिया परिवार पर विगत महिनों में यह दूसरा वज्रपात है। विगत महिने उनके अनुज भ्राता श्री कपिलजी का निधन हो गया था।

श्री मोतीलालजी गिरिया की पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी के प्रति अटूट भक्ति थी। गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास में गिरिया परिवार भी काफी सक्रिय था।

विधायक तथा म.प्र. योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष श्री चेतन्यजी काश्यप, विधायक व म.प्र. के पूर्व खाद्यमंत्री श्री पारसजी जैन, अ.भा. त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी हीराणी तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा आदि ने श्री गिरिया के निधन पर शोक प्रकट किया है। केन्द्र तथा शाखाओं ने श्रद्धाजंलि अर्पित की।

श्रीसंघ, परिषद परिवार तथा शाश्वत धर्म की ओर से हार्दिक श्रृद्धाजंलि ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष - 67, अंक 11 कुल पृष्ठ कवर सहित -84

आचार्यश्री की सूरिमंत्र आराधना सुखशाता पूर्वक सम्पन्न

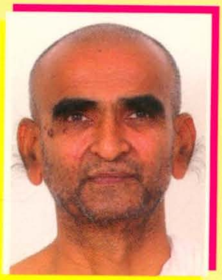

आचार्य
पू. जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा.

भांडवपुरतीर्थ । जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने यहाँ सूरिमंत्र की पंचपीठिका की साधना सानंद- भावपूर्ण रूप से सम्पन्न की।

पुण्यसम्राट् लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का कालधर्म यहीं हुआ था। उनके बाद जिनशासन की धुरी गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानंदसूरीश्वरजी म.सा. तथा आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. वहन कर रहे हैं। वर्तमान में भांडवपुरतीर्थ पर वर्षावास हेतु आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. विराजमान हैं। सम्पूर्ण चातुर्मास का लाभ मातुश्री मालूदेवी पुखराजजी पीथाजी पालगोता चौहान छत्राणी परिवार सुराणावाले (एम.के. ग्रुप बैंगलोर) ले रहे हैं। भांडवपुर में 2200 साल प्राचीन श्री महावीर स्वामीजी की अतिप्रभावी प्रतिमा विराजमान है। वर्तमान में प्राचीन जिनालय का जीर्णोद्धार श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में चल रहा है। शीघ्र ही ऐतिहासिक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न होगा। भांडवपुरतीर्थ पर गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का कमलाकार भव्य गुरु मंदिर भी है। श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की आचार्य पदवी यहीं हुई थी। संयमवय स्थविर योगीराज श्री शांतिविजयजी म. की साधना व कालभूमि भी यही तीर्थ है। इनका समाधि मंदिर भी भव्यता फैला रहा है। पुण्य सम्राट का भव्य समाधि मंदिर भी निर्माणाधीन है. ऐसे कणकण उर्जावान से संयुक्त तीर्थ की अल्प साधना भी अतिफलदायी है। इसलिये धर्म प्रभावक आचार्य श्री जयरत्नसूरिजी म. ने दिनांक 5 जुलाई 2020 के दिन से सूरिमंत्र की आराधना शुभ मुहूर्त्त में प्रारंभ की। त्रिस्तुतिक परम्परा के अनुसार यह आराधना गुप्ततापूर्वक अखंड चली। इसकी पूर्णाहुति दिनांक एक अक्टूबर 2020 को हुई। साधनाकाल में गुरु वैयावच्च तथा अन्य समस्त दायित्व वरिष्ठ मुनिराज श्री आनंदविजयजी म. ने निर्वाहित किये। विधिकारक के रूप में श्री अरविन्दभाई चौरड़िया (इंदौर) थे। साथ में पं. श्री धरणेन्द्रभाई ने विधान करवाया। तेरह वर्षीय बाल मुमुक्षु श्री प्रतीक ने गुरु वैयावच्च निभाई। आचार्य श्री जयरत्नसूरिजी म.सा. निखालस स्पष्टवक्ता तथा बहुत प्रभाव सम्पन्न हैं। यहाँ की पट्टी में जैन, जैनेत्तर और राजकीय क्षेत्र में आप का काफी प्रभाव है। आपने यह साधना दूसरी बार सम्पन्न की है। इस बल से आप तेजस्वी बनेंगे। आपने श्री गौतमस्वामी की पंचम पीठिका की साधना मौन रहकर की। श्रीसंघ ने सुखशाता पृच्छा की।

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001